

CONTENTS OF THE New Testament

Allama J.Ali Bakhsh

عزیز جلیل
کتابیں

علامہ جے آئی بخش

1909

WWW.NOOR-UL-HUDA.NET

Contents of the New Testament

Allama J.Ali.Bakhsh and Allama H.G.Gray

अहदे-जदीद की किताबें

अल्लामा जे° अली बख्श और अल्लामा एच° जी° ग्रे साहब

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

फ़ेहरिस्त मज़ामीन	3
अहदे-जदीद का बयान	9
क़दीम नुस्खे.....	16
क़दीम तर्जुमे	18
क़दीम बुजुर्गों के इक़्तिबासात.....	19
अनाजील.....	20
मत्ती की इन्जील	23
मत्ती रसूल का अहवाल.....	23
किन के लिए लिखी गई.....	26
इस इन्जील का सिलसिला	27
सिलसिलेवार चारों अनाजील के मुताबिक़	29
चारों अनाजील इस अम्र पर मुत्तफ़िक़ हैं मसीह के दुखों और मौत मसीह के जी उठने के सबूत पर	30
मुक़द्दस मर्कुस की इन्जील	32
मुख्तसर सीरत व हालात मर्कुस.....	33
तस्नीफ़ मर्कुस.....	33
मर्कुस की इन्जील के ख़साइस.....	34
सिलसिला मज़ामीन.....	35
लूका की इन्जील	36
मुसन्निफ़	36
किन चश्मों (माख़ज़) से ये इन्जील तैयार हुई?	38
तक्सीम मज़ामीन.....	39
तस्नीफ़ का वक़्त.....	41

किन के लिए लिखी गई?.....	41
यूहन्ना की इन्जील	43
मुसन्निफ़	43
इस अम्र की तार्इद में बैरूनी और अंदरूनी शहादतें मुत्तफ़िक़ हैं	45
चंद एतराज़ात.....	48
तक्सीम मज़ामीन.....	51
यहां मसीह के आम काम का ख़ातिमा है	52
अबवाब तक्सीम कर सकते हैं	53
आमाल की किताब	54
मुसन्निफ़ आमाल	54
वक्त्र तहरीर	55
मक्सद	55
तवारीख़ी सेहत	57
पौलुस के ख़ुतूत.....	57
तीन बड़े सफ़रों का ज़िक़्र है।.....	59
पौलुस के ख़ुतूत.....	61
थिस्सलुनीकियों की तरफ़ के ख़त	61
थिस्सलुनीकियों का पहला ख़त	62
थिस्सलुनीकियों का दूसरा ख़त	63
कुरिन्थियों की तरफ़ ख़त	64
ख़त का मक्सद	66
तक्सीम.....	66
कुरिन्थियों की तरफ़ का दूसरा ख़त	70
तक्सीम मज़मून.....	71

गलतियों की तरफ़ खत.....	73
तक्सीम मज़मून.....	74
रोमियों की तरफ़ खत.....	75
मुसन्निफ़	75
मकतूब अलय्याह	76
तहरीर का मक़सद और इस की तारीख़.....	77
सेहत खत.....	78
तक्सीम मज़मून.....	79
पौलुस की असीरी (क़ैद) के खुतूत.....	80
इफ़िसियों की तरफ़ का खत.....	81
मुसन्निफ़	81
तहरीर का वक़्त	81
मकतूब अलय्या.....	81
मज़ामीन	82
इस खत के खास खयालात	83
फिलिप्पियों का खत.....	83
मुसन्निफ़	83
मकतूब अलय्या.....	84
तहरीर का वक़्त और मौक़ा.....	85
तक्सीम मज़ामीन.....	85
खास खयालात.....	86
कुलुस्सियों की तरफ़ का खत.....	86
मुसन्निफ़	86
मकतूब अलय्या.....	86
तहरीर की जगह और वक़्त.....	87

इस खत की खास बातें ये हैं.....	87
तक्सीम मज़ामीन.....	89
फ़िलेमोन की तरफ़ का खत.....	90
मकतूब अलय्या.....	90
सन तस्नीफ़.....	90
खास खयालात.....	90
चौपानी खुतूत.....	91
यानी तीमुथियुस की तरफ़ दो खत और तीतुस की तरफ़ खत.....	91
मुसन्निफ़.....	91
जगह और वक़्त.....	92
मकतूब अलय्या.....	92
तीमुथियुस की तरफ़ पहला खत.....	93
तक्सीम मज़ामीन.....	93
तीमुथियुस का दूसरा खत.....	94
तीतुस का खत.....	94
चंद खास खयालात.....	94
इब्रानियों की तरफ़ का खत.....	95
मुसन्निफ़.....	95
मकतूब अलय्या.....	96
वक़्त.....	97
खत का मक़सद.....	97
सिलसिला मज़ामीन.....	98
मुक़द्दस याकूब का खत.....	99
मुसन्निफ़.....	99
मकतूब अलय्या.....	100

वक़्त तहरीर.....	100
तक्सीम मज़ामीन.....	101
खास खयालात.....	102
पतरस का खत	102
मुसन्निफ़	102
मकतूब अलय्या.....	104
तहरीर का वक़्त	104
खत के मज़ामीन और खास खयालात	105
तक्सीम मज़ामीन.....	106
पतरस का दूसरा खत.....	106
मुसन्निफ़	106
मकतूब अलय्या.....	108
तहरीर की जगह और वक़्त.....	108
तक्सीम मज़ामीन.....	109
यहूदाह का खत	109
मुसन्निफ़	109
मकतूब अलय्या.....	111
तहरीर वक़्त और जगह	111
तक्सीम मज़ामीन.....	111
खास खयालात.....	111
यूहन्ना के खुतूत	112
खत अवल जो आम कहलाता है.....	112
मुसन्निफ़	112
मकतूब अलय्या.....	114
खत का मज़मून और मक्सद.....	114

तक्सीम मज़ामीन.....	115
यूहन्ना का दूसरा और तीसरा खत.....	115
मुसन्निफ़	115
तक्सीम मज़मून.....	116
यूहन्ना का तीसरा खत.....	116
मकतूब अलय्या.....	116
तक्सीम मज़ामीन.....	117
मुकाशफ़ा की किताब	117
ज़माना तहरीर	120
मकतूब अलय्या.....	120
मज़ामीन और उनकी तफ़सीर.....	120
खास खयालात.....	122

अहदे-जदीद का बयान

नए अहदनामे का बयान करने में हम दो बातों को याद रखें।

(अ) इस जिल्द में एक ही मुसन्निफ़ की एक ही तस्नीफ़ नहीं। बल्कि मुख्तलिफ़ मुसन्निफ़ों की मुख्तलिफ़ तस्नीफ़ात हैं। और इस में एक ही गवाह की शहादत (गवाही) नहीं बल्कि बहुत गवाहों की। और वो अलग-अलग एक दूसरे की ताईद (हिमायत) करते हैं। मसलन चारों अनाजील मसीह की ज़िंदगी के अलैहदा-अलैहदा बयान हैं। इनका बाहमी मुक़ाबला करने से वाक़ियात की सेहत साबित हो जाती है। इसी तरह अगर आमाल की किताब के बयानात का पौलुस रसूल के खतों से मुक़ाबला करें तो उनकी पूरी मुवाफ़िक़त (मुताबिक़त) ज़ाहिर होगी। ये जिल्द तो मुसन्निफ़ों की तस्नीफ़ात का मजमूआ है। लेकिन तालीम की बड़ी-बड़ी बातों में वो सब यकसाँ हैं।

(ब) इल्हाम का मस यहाँ खासतौर पर ज़ेर-ए-बहस नहीं क्योंकि अगर बिलफ़र्ज ये किताबें इल्हामी साबित ना हों। लेकिन वाक़ियात का बयान इनमें क़लमबंद हुआ है वो तवारीख़ी तौर पर सही साबित हो जाएं। तो भी मसीही दीन क़ाबिल-ए-एतिबार ठहरेगा। चुनान्चे अगर मसीह की ज़िंदगी ऐसी ही पाक गुज़री जैसा कि चारों इंजीलों में मुन्दरज है। और अगर वो फील-वाक़ेअ मुर्दों में से जी उठा तो उस के इब्ने-अल्लाह होने का दावा काफ़ी तौर से साबित है। इस अम्र का ज़िक्र इसलिए किया जाता है कि मसीही होने के लिए इन वाक़ियात पर ईमान लाना ज़रूर है ना कि किताबों के इल्हाम पर। क्योंकि इन्सान की नजात मसीह की मौत और उस के जी उठने पर मौकूफ़ (ठहराया गया) है ना कि किसी किताब पर।

इस रिसाले का ख़ास मक़सद है कि इस अम्र को जांचें और तहक़ीक़ात करें, कि जो बयान इन किताबों में मुन्दरज है वो तवारीख़ी तौर पर क़ाबिल-ए-एतिबार है। इस तहक़ीक़ात में हम तास्सुब (मज़हब की बेजा हिमायत) से काम ना लें। जहाँ से सच्चाई मिले उसे ख़ुशी से कुबूल करने पर तैयार रहें। उधर कोई बयान इनसे ज़्यादा एतबार के लायक़ हो तो उस के मानने में ताम्मुल (देर) ना करें।

लेकिन ख़ास मज़मून शुरू करने से पेशतर ये बताना मुनासिब होगा कि किन वजूहात से अक्सर मसीही इन किताबों को इल्हामी मानते हैं। और इल्हाम से क्या मुराद लेते हैं। और किस तरीक़े से वो सब एक ही जिल्द में जमा हो गईं। लफ़ज़ इल्हाम लहम से निकला है। जिनके मअनी अरबी में निगलना हैं। और इसलिए इल्हाम के मअनी ये हुए

“दिल में डालना” पस इल्हाम कोई बैरूनी शैय नहीं बल्कि वो इन्सान के दिल से खास ताल्लुक रखता है अंग्रेज़ी और यूनानी लफ़्ज़ों से भी तक्ररीबन वही बात मुराद है। इनके लुगवी मअनी हैं किसी के “अंदर फूंकना” (2 तीमुथियुस 3:16), (अय्यूब 32:8) किस तरह से खुदा ने इल्हाम के ज़रिये इतने खयालात बाअज़ इन्सानों के दिल में डाले? ये बहुत दिलचस्प सवाल है। इस की तहक़ीकात में हमें पहले से ये फ़र्ज़ कर लेना नहीं चाहिए कि जो इल्हाम खुदा से मिलेगा वो ज़रूर ऐसा मुकम्मल और बेनुक्स होगा कि कभी उस में किस तरह के सहू (गलती) को दखल ना होगा बल्कि खुद कोशिश कर के इन किताबों से दर्याफ़्त करें कि मुलहम (इल्हाम रखने वाला) और इनके हम-अस्त्रों ने इल्हाम से क्या समझा।

एक तरह से तो हर मख़्लूक को खुदा की तरफ़ से इल्हाम मिलता है। मसलन शायर और मुत्रिब (गाने वाला) इल्हाम हासिल करने के लिए दुआ करते थे। और अपने शेअरों और रागों को इल्हाम से मन्सूब करते थे। चुनान्चे दुनियावी हिक्मत और हिफ़्त (इल्म, होशयारी) वग़ैरह खुदा के इल्हाम से मन्सूब हैं। “मैंने उस को हिक्मत और फ़हमीदा (समझदारी) और हर तरह की हुनरमंदी में रूह-उल्लाह से भर दिया। ताकि दुनियावी कामों को ईजाद करे। और सोने और रूपये और पीतल के काम करे।” (खुर्रूज 31:3 ता 4) बल्कि जानवरों में जो हिक्मत है। वो भी इल्हाम के बग़ैर नहीं और कुर्आन में जो ये ज़िक्र है कि खुदा शहद की मक्खी को भी इल्हाम देता है तो इस में बहुत सच्चाई है। (सूरह नहल 16, आयत 70) इस तबई इल्हाम का एक और दर्जा भी है जो हिक्मत इन्सानी और अक्ल हैवानी से आला रुत्बा रखता है। ये नूरे क़ल्ब (दिल की रोशनी) है, जिसे तमीज़, ज़मीर, और कांशियसनेस वग़ैरह कहते हैं। ये नूर खुदा के इल्हाम से है। (अय्यूब 32:8), (यूहन्ना 1:4 ता 5), (लूका 11:34 ता 36), (रोमियों 2:15) ये मामूली तबई इल्हाम की क्रिस्में हैं। लेकिन जब दीन में इल्हाम का ज़िक्र आता है तो इस से फ़ौकुल आदत (आदत से बढ़कर) इल्हाम मुराद है। यानी ऐसा इल्हाम जो इक्तिसाबी (ज़ाती मेहनत) से हासिल करना नहीं। और ये हमारी तबई कुव्वतों से हासिल नहीं होता। दहरिये और मुल्हिद (काफ़िर) लोग नहीं मानते कि इस क्रिस्म का इल्हाम हो सकता है। उनकी राय को रद्द करने का यहां मौक़ा नहीं। लेकिन इतना कहना मुनासिब है कि ज़ी-अक्ल शख्स खुदा से इल्हाम की तवक्क़ो कर सकते हैं। इस में कुछ ख़िलाफ़ अक्ल नहीं। मुख़लिफ़ मज़ाहिब इस फ़ौकुल आदत इल्हाम के मुद्दई (दावा करने वाले) हैं। इनके दाअवों के साथ हमको इस वक़््त कुछ सरोकार नहीं। सिर्फ़ मसीही दीन के दाअवे से।

मसीहियों के नज़्दीक ख़ुदा के मुकाशफ़े का सबसे आला और पुख़्ता सबूत ख़ुद मसीह है। उस के आमाल, अफ़आल और सीरत और क्रियामत (मुर्दों से जी उठना) इस अम्र के शाहिद (गवाह) हैं। ख़ुदा का ये ज़िंदा मुजस्सम कलाम नजात की चट्टान है। इस पर अगर हम क़ायम हों तो नजात पाते हैं।

इस के इलावा मसीहियों का दावा है कि चंद किताबें भी इल्हामी हैं जो अपनी मुजल्लद सूरत (जिल्द की हुई) में बाइबल कहलाती हैं। इस बाइबल के दो हिस्से हैं। पहला हिस्सा पुराना अहदनामा कहलाता है। तवारीख़ी लिहाज़ से इस में उमूमन क़ौम बनी-इस्राईल की तवारीख़ है। इस तवारीख़ की हक़ीक़त ये है कि मुअर्रिख़ (तारीख़ लिखने वाले) इन क़ौमी वाक़ियात को हमेशा ख़ुदा से मन्सूब करते हैं। और ये दावा रखते हैं। कि हमें ख़ुदा की तरफ़ से एक इल्हाम मिला है। मसलन गिनती 12:8 में यूं लिखा है “मेरा बंदा मेरे सारे घर में ईमानदार है मैं उस से आमने-सामने सरीह (साफ़) बातें करता हूँ ना कि पोशीदा बातें।” (ख़ुरूज 20:1) में यूं आया है “ख़ुद ख़ुदा ने ये सारी बातें कहीं।” यानी दस अहकाम।

पैदाइश 15:12 वग़ैरह में इब्राहिम से नींद की हालत में ख़ुदा मुखातिब हुआ और उस के साथ अहद बाँधा। (गिनती 24:3 ता 4) में बलआम के बारे में लिखा है, “वो शख़्स जिसकी आँखें खुली थीं। जिसने ख़ुदा की बातें सुनीं और क़ादिर-ए-मुतलक़ की रोया को देखा।” (यसअयाह 1:1) में है कि “उसने रोया देखी।” इसी नबी ने ख़ुदा का दीदार हासिल किया। (यसअयाह 6 बाब) ये ही हाल दूसरे नबियों का है। उनके हम-अस्रों ने उनकी दआवे (दावा की जमा) को माना और उनको रोकना सख़्त गुनाह समझा गया। (यर्मियाह 26:16 ता 19), (आमोस 7:10 ता 17) मज़कूर बाला मुक़ामात से ज़ाहिर है कि इल्हाम के तरीक़े मुख़लिफ़ थे। कभी रूबरू कलाम के ज़रिये, कभी रोया, और ख़्वाब, और बातिनी तालीम के ज़रिये, अल-ग़र्ज़ ख़्वाह किसी तरीक़े से ये इल्हाम मिला हो। लेकिन जो तालीम और वही मिली वो इन्सान की अक़ल और दिल पर रोशन हुई। ना कि किसी नाज़िल शूदा किताब की सूरत में। देखो (1 पतरस 1:10 ता 11) “नबियों ने बड़ी तलाश और तहक़ीक़ की जिन्हों ने इस नेअमत की पेशीनगोई की। जो मसीहियों पर ज़ाहिर होने को थी। वो उस की तहक़ीक़ में थे, कि मसीह की रूह जो उनमें थी। जब मसीह की बाबत उस के दुखों की और बाद उनके उस के जलाल की आगे गवाही देती थी किस ज़माने का बयान करती थी।” ये पेशीनगोईयां या तालीमात क़लमबंद हो कर बनी-इस्राईल में इल्हामी समझी जाने लगीं। और ये किताबें माबाअद तालीम की कसौटी (मेयार) ठहरीं। चुनान्चे यसअयाह अपने हम-अस्रों से कहता है कि “शरीअत पर और

शहादत पर नज़र करें। अगर वो सुखन (कलाम, बात) के मुताबिक़ ना बोलें तो उनमें रोशनी नहीं।” (यसअयाह 8:20) इन नबियों को अक्सर ये हुक्म भी मिला कि जो वही उनको मिली उस को लिख कर हिफ़ाज़त से रखें। (खुर्रूज 17:14, 34:27, 31:28, 32:15 ता 16), (गिनती 33:1 ता 2), (इस्तिस्ना 31 9 ता 11, 22 ता 26), (यर्मियाह 36:2, 28) जो किताबें इस तरह से खुदा के हुक्म से लिखी गईं। और जिनको खुद नबियों ने दिली तक्कीन (यक्कीन, एतबार) से तस्दीक़ की। उनको कुल क्रौम मुक़द्दस मानती चली आई है। अगरचे इन किताबों में खुद इस क्रौम के अक्सर गुनाहों का ज़िक्र है। (इस्तिस्ना 9:24)

अब ये सवाल लाज़िम आता है, कि किस तरह ये किताबें जमा हुईं। और हम तक पहुंचीं। इस के बारे में एक मशहूर यहूदी मुअर्रिख़ जो 37 ई° से 110 ई° तक ज़िंदा था। यूं बयान करता है, कि हमारा खयाल नहीं कि हमारे पास बहुत सी किताबें हों। जो एक दूसरे से मुख्तलिफ़ और ग़ैर मुताबिक़ हों। हमारे पास सिर्फ़ बाईस किताबें हैं। जिनमें सारे ज़माने की तवारीख़ मुन्दरज है। ऐसी किताबें जो ठीक तौर पर मानी गईं। फिर इन किताबों के मज़ामीन का तीन हिस्सों में बयान करने के बाद वो ये लिखता है कि “अरतख़शशताह (यानी फ़ारस का बादशाह 430 ई° क़ म) के ज़माने से हमारे ज़माने तक बेशक हर वाक़िया क़लमबंद हुआ है। लेकिन ये बयानात नबियों के सिलसिले-वार बरपा ना होने के बाइस पेशतर की किताबों के बराबर एतबार के लायक़ ना समझे गए। जिससे हम इन नविशतों का लिहाज़ करते हैं। इस का ये अमली सबूत है। क्योंकि गो अर्सा- दराज़ गुज़र चुका है। तो भी एक शख्स ने भी ये ज़ुरत नहीं की कि एक जुज़ को बढ़ाए या घटाए या बदले। और हर यहूदी की सरिशत (फ़ित्रत) में ये दाख़िल है कि पैदाइश के वक़्त से लेकर इन नविशतों को खुदा की तालीम समझे और इन पर अमल करे। और अगर ज़रूरत पड़े तो खुशी से इनके लिए जान देने में भी दरेग़ा ना करे। इस में वो दो बातों पर ज़ोर देता है। एक तो ये कि वो और उस की क्रौम के लोग समझते थे कि इन किताबों में हमारी क्रौम का सही और क़ाबिल-ए-एतिबार बयान क़लमबंद हुआ है। दोम ये है कि इस क्रौम की दीगर किताबों में से इनकी इस सबब से ख़ास इज़ज़त और हिफ़ाज़त हुई कि इनमें इलावा तारीख़ के खुदा की तरफ़ से मुकाशफ़ा भी है।

लेकिन शायद कोई कहे कि यहूदियों की राय से हमको इस अम्र में क्या तसल्ली मिल सकती है? जब कि बाअज़ दीगर कौमों भी इन ही किताबों के बारे में वैसा ही दावा करती हैं। ये माकूल सवाल है। और हम मसीहियों के लिए इस का ये शाफ़ी जवाब है। कि खुद खुदा ने इनकी तस्दीक़ की और अपनी मुहर लगाई। (मत्ती 5:17 ता 18), (यूहन्ना

5:29, 40, 10:35) और नीज़ उस के रसूलों ने (आमाल 26:22), (रोमियों 1:2, 3:2), (2 तीमुथियुस 3:15 ता 16), (1 पतरस 1:10 ता 12), (2 पतरस 1:20 ता 21)

इन नविशतों ने यहूदियों में ये उम्मीद पैदा की कि एक नजातदिहंदा आने वाला है। जिसे वो मसीह कहते थे। फिर येसू मसीह के आने से इस उम्मीद ने तक्मील पाई। अपने हम-अस यहूदियों से जो इन नविशतों को मानते और उनकी ताज़ीम करते थे। उसने कहा कि मैं वही हूँ जिसके तुम मुंतज़िर थे। (लूका 26:24, 27, 44, 4:16, 21) मख़्फ़ी (छिपा हुआ) ना रहे कि इल्हाम से क़त-ए-नज़र कर के यहां दो अजीब तवारीख़ी माजरे बाहम मिलकर इनके मिंजानिब अल्लाह होने की शहादत देते हैं। क्योंकि सिवाए खुदा के चार सौ बरस पेशतर कौन मसीह की ज़िंदगी के वाक़ियात की ख़बर दे सकता था। और इस क्रौम में ऐसी उम्मीद पैदा कर सकता था।

इस से हम अपने ख़ास मज़मून तक पहुंचते हैं। यानी ये कि हम नए अहदनामे की किताबों को क्यों मानते हैं? याद रहे कि जैसा ऊपर बयान किया गया था। दरअस्त हमारे दीन की बुनियाद इन किताबों के इल्हाम पर नहीं बल्कि इस की तवारीख़ी सच्चाई पर है। हम इनको इल्हामी भी मानते हैं और इस की ये वजूहात हैं।

(1) बला-शुब्हा मसीह ने माना कि पुराना अहदनामा इल्हामी है।

(2) उसने अपने रसूलों से ख़ास वाअदा किया कि रूह-उल-कुद्स उनकी ख़ास मदद और हिदायत करेगा। मसलन “रूह-उल-कुद्स जिसे बाप मेरे नाम से भेजेगा। वही तुम्हें सब बातें सिखाएगा। और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है वो सब बातें याद दिलाएगा।” याद रहे कि ये ख़ास वाअदा रसूलों से है कि मसीह की बातें उनको रूह-उल-कुद्स याद दिलाएगा। और “वो वकील जिसको मैं तुम्हारे पास बाप की तरफ़ से भेजूंगा यानी हक़ की रूह जो बाप की तरफ़ से निकलती है। तो वो मेरी गवाही देगी। और तुम भी गवाह हो। क्योंकि शुरू से मेरे साथ हो।” (यूहन्ना 15:26) और “जब वो यानी हक़ की रूह आएगी। तो तुमको तमाम हक़ की राह दिखाएगी इसलिए कि वो अपनी तरफ़ से ना कहेगी लेकिन जो कुछ सुनेगी वही कहेगी। और तुम्हें आइन्दा की ख़बरें देगी।” (यूहन्ना 16:13)

(3) खुद रसूलों ने ये दावा किया कि हम मुलहम मोअल्लिम (इल्हाम रखने वाले उस्ताद) हैं। मसलन आमाल 2:32, 33 में मज़कूर है, “इसी येसू को खुदा ने जिलाया (मुर्दों में से ज़िंदा किया) जिसके हम सब गवाह हैं। पस खुदा के दहने हाथ सर-बुलंद हो कर और बाप से वो रूह-उल-कुद्स हासिल कर के जिसका वाअदा किया गया था उसने

ये नाज़िल किया।” और आमाल 10:41, 42 में यूं आया है कि “हमने उस के मुर्दों में से जी उठने के बाद उस के साथ खाया, पिया। और उसने हमें हुक्म दिया कि उम्मत में मुनादी करो और गवाही दो।” और पौलुस रसूल ने भी ये दावा किया, क्या मैं रसूल नहीं। क्या मैंने येसू को नहीं देखा जो हमारा खुदावंद है..... अगर इन्जील सुनाऊँ तो मेरा कुछ फ़ख़ नहीं क्योंकि ये तो मेरे लिए ज़रूरी बात है। अगर इन्जील ना सुनाऊँ तो मुझ पर अप्सोस है।” (1 कुरिन्थियों 9:1, 16) और “ऐ भाइयो मैं तुम्हें बताए देता हूँ कि जो खुशख़बरी मैंने सुनाई वो इन्सान की सी नहीं। क्योंकि वो मुझे इन्सान की तरफ़ से नहीं पहुंची और मुझे सिखाई गई बल्कि येसू मसीह की तरफ़ से मुझे इस का मुकाशफ़ा हुआ।” (ग़ालतियों 1:11, 12) और इशाए रब्बानी के बारे में उसने ये कहा है कि “ये बात मुझे खुदावंद की तरफ़ से पहुंची और मैंने तुमको भी पहुंचा दी कि खुदावंद येसू ने जिस रात को वो पकड़वाया गया। रोटी ली और शुक्र कर के तोड़ी।” (1 कुरिन्थियों 11:23) इसी पौलुस की तस्नीफ़ात के बारे में पतरस रसूल यूं फ़रमाता है, “हमारे प्यारे भाई पौलुस ने भी इसी हिक्मत के मुवाफ़िक़ जो उसे इनायत हुई थी तुम्हें ये ही लिखा है और अपने सारे ख़तों में इन बातों का ज़िक़्र किया है। जिनमें बाअज़ बातें ऐसी हैं जिनका समझना मुश्किल है और जाहिल और बे-क़याम लोग उनके माअनों को और सहीफ़ों की तरह खींच-तान कर अपने लिए हलाकत पैदा करते हैं। (2 पतरस 3:15 ता 16) इसी पतरस ने ख़त में ये भी लिखा है, “हमारे पास नबियों का वो कलाम है जो ज़्यादा मोअतबर ठहरा और तुम अच्छा करते हो कि जो ये समझ कर इस पर गौर करते हो कि वो एक चिराग़ है जो अँधेरी जगह में रोशनी बख़्शाता है। जब तक पौ ना फटे और सुबह का सितारा तुम्हारे दिलों में ना चमके। और सबसे पहले ये जान लो कि किताब मुक़द्दस की किसी नबुव्वत की बात की तावील किसी के ज़ाती इख़्तियार पर मौकूफ़ नहीं। क्योंकि नबुव्वत की कोई बात आदमी की ख़्वाहिश से कभी नहीं हुई। बल्कि आदमी खुदा की तरफ़ से रूह-उल-कुद्स की तहरीक के सबब बोलते थे।” (2 पतरस 1:19 ता 21) इसी तरह यूहन्ना रसूल भी मुकाशफ़ा की किताब में यूं लिखता है, “येसू मसीह का मुकाशफ़ा जो उसे खुदा की तरफ़ से इसलिए हुआ कि अपने बंदों को वो बातें दिखाए जो ज़रूर जल्द होने वाली हैं। और उसने अपने फ़रिश्ते को भेज कर उस की मार्फ़त उन्हें अपने इस बंदे यूहन्ना पर ज़ाहिर किया। जिसने खुदा के कलाम और येसू मसीह की गवाही दी। यानी उन सब चीज़ों की जो उसने देखी थीं शहादत दी।.... मैं यूहन्ना जो तुम्हारा भाई और येसू की मुसीबत और बादशाही और सब्र में तुम्हारा शरीक हूँ। खुदावंद के दिन रूह में आ गया और अपने पीछे नरसिंगे की सी ये एक बड़ी आवाज़ सुनी कि जो कुछ तू देखता है उस को किताब में लिख कर सातों कलीसियाओं के पास भेज दे।” (मुकाशफ़ा 1:9, 1 ता 11) इन मुसन्निफ़ों के इस यक़ीन के मुताबिक़ पहली सदी के मसीहियों ने सिर्फ़ उन किताबों को इल्हामी माना जो रसूलों की हिदायत से लिखी गई। इस का नतीजा हमारे हाथों में है

यानी नया अहदनामा। अब हम ये कह सकते हैं कि जैसे पुराना अहदनामे पर जो इसी तरीके से जमा हुआ था। मसीह ने अपनी मुहर लगाई। वैसे ही नए अहदनामे पर उसने रूह-उल-कुद्स के इस वाअदे के वसीले से गोया पेशतर से मुहर लगाई।

मज़कूर बाला बयान की तश्रीह में हम चंद बुजुर्गों को गवाह के तौर पर पेश करते हैं। मसलन रोम का क्लेमेंट (95) के करीब कुरिन्थस की कलीसिया को लिखते वक़्त फ़रमाता है कि “मैं तो इख्तियार के साथ मुबारक पौलुस की तरह लिख नहीं सकता हूँ। और पोलीकार्प जो निहायत बूढ़ा हो कर तकरीबन 155 ई० में शहीद हुआ। और जो यूहन्ना रसूल का शागिर्द रह चुका था यूं लिखता है कि “ना मैं ना मेरा कोई हम-अस्र मुबारक पौलुस की दानाई तक पहुंच सकता है।” अगनातियुस (115 ई०) में शहीद हुआ कहता है कि “मैं पतरस और पौलुस की तरह हुक्म नहीं दे सकता हूँ वो तो रसूल थे।” यूसेबीस मुअर्रिख़ ने अपनी तवारीख़ 320 ई० के करीब लिखी। इन किताबों के जमा होने का साफ़ बयान करता है। मसीहियों की किताबों को उसने तीन फ़रीक़ पर तक्सीम किया है :-

(1) चारों अनाजील, पौलुस के ख़त, यूहन्ना का पहला ख़त, इनकी बाबत वो कहता है कि कभी किसी ने शक़ नहीं किया।

(2) वो किताबें जिनको अक्सर मसीही मानते हैं लेकिन जिन पर किसी ने शक़ भी डाला था। मसलन याकूब और यहूदाह का ख़त, यूहन्ना का दूसरा और तीसरा ख़त, मुकाशफ़ा की किताब और इब्रानियों का ख़त। यूसेबीस की खुलूस दिली यहां ज़ाहिर है कि ज़रा से शक़ का भी वो ज़िक़र करता है। अगरचे तहक़ीक़ात से वो शक़ रफ़ा हो गया।

(3) जो किताबें कभी इल्हामी नहीं समझी गईं। अगरचे बाज़ औक़ात अख़्लाक़ की दुरुस्ती वग़ैरह के लिए पढ़ी जाती थीं। मसलन पौलुस के आमाल, हर्मास का चौपान, पतरस का मुकाशफ़ा वग़ैरह।

मज़कूर बाला गवाहियों से दो ख़ास बातें साबित होती हैं।

अव्वल ये कि पहले तीन गवाह जो रसूलों के तकरीबन हम-अस्र थे। यानी रोमी क्लेमेंट, पोलीकार्प और अगनातियुस इस पर ज़ोर देते हैं, कि सिर्फ़ वही किताबें इल्हामी समझी जाती हैं जो रसूली हिदायत से लिखी गईं।

दोम ये कि चौथा गवाह यानी यूसीबस जो चौथी सदी के शुरू में गुज़रा है बताता है, कि इस किस्म की किताबें उस के ज़माने से पेशतर और किताबों से अलैहदा की गई थीं। चुनान्चे नए अहदनामे की किताबों की एक फ़ेहरिस्त मौजूद है। जो 170 ई० के करीब लिखी गई। और वो फ़ेहरिस्त तकरीबन हमारी फ़ेहरिस्त के मुताबिक है। उस का नाम मोरातोरी फ़ेहरिस्त है। क्योंकि ये नुस्खा मीलान के शहर में एक शख्स मोरातोरी नामी को मिला था। इस फ़ेहरिस्त का बयान करते वक़्त वो इस बात पर ज़ोर देता है, कि ये कुल कलीसिया की मुसल्लिमा (माअनी हुई) राय थी। यानी मुसन्निफ़ ही की राय या किसी खास शख्स की राय नहीं बल्कि कुल मसीहियों की जो सारे जहान में फैले हुए थे। वो फ़ेहरिस्त ये है :-

चारों अनाजील, रसूलों के आमाल की किताब, पौलुस रसूल के सारे ख़त, यूहन्ना का मुकाशफ़ा, और यूहन्ना के तीन ख़त। हर शख्स जो नए अहदनामे से वाकिफ़ है फ़ौरन मालूम करेगा, कि इस फ़ेहरिस्त में चंद किताबों का ज़िक्र नहीं। यानी इब्रानियों का ख़त, याकूब का ख़त, पतरस के दो ख़त, और यहूदाह का ख़त। इन किताबों के अदम ज़िक्र का सबब मुफ़स्सिल नहीं कर सकते। लेकिन इतना कहना काफ़ी होगा कि जिस नुस्खे में ये फ़ेहरिस्त है उस का कुछ हिस्सा तलफ़ (ज़ाए, बर्बाद) हो गया है और मालूम होता है कि इनमें से बाअज़ किताबों का ज़िक्र उस तलफ़ शूदा हिस्से में होगा।

अब हम ज़्यादा तफ़सील से बयान करेंगे, कि किस तरह से हमको इतनी सदियों बाद ये यक़ीन है कि ये वही किताबें हैं जो रसूलों और उनके रफ़ीकों (साथियों) ने लिखीं। इस के लिए हम तीन तरह के सबूत पेश करेंगे। (अ) क़दीम नुस्खों से (ब) क़दीम तर्जुमों से (ज) हम-अस्र (उसी ज़माने के) मुसन्निफ़ों के इक़तिबासात से।

क़दीम नुस्खे

(अ) क़दीम नुस्खे : नए अहदनामे के नुस्खे तीन हज़ार से ज़्यादा मौजूद हैं। लेकिन वो मुख्तलिफ़ ज़मानों के हैं। सोलहवीं सदी से लेकर जब कि फ़न छापे का रिवाज हुआ। चौथी सदी तक उनका ज़माना है। उनमें से जो सबसे पहले लिखे गए वो उमूमन ज़्यादा तवज्जोह के लायक़ हैं। क्योंकि उनके ज़रिये गोया एक जस्त (छलांग लगाना) कर के हम चौथी सदी तक पहुंच जाते हैं जो मसीह के ज़माने के करीब है। किसी क़द्र तर्ज़ तहरीर से उनके ज़माने का पता लगा सकते हैं। मसलन नौवीं सदी से पेशतर के सब नुस्खे बड़े हुरूफ़ में लिखे हुए हैं। लेकिन नौवीं सदी से लेकर छोटे हुरूफ़ इस्तिमाल होने

लगे। एक सौ उनतीस नुस्खे बड़े हुरूफ़ में हैं। मिसाल के तौर पर इनमें से चार नुस्खों का ज़िक्र करेंगे।

अव्वल : जो नुस्खा ब कहलाता है। पोप के महल में मौजूद है। इस की जसामत एक फुट मुरब्बा है और सात सौ वर्क हैं। ये वर्क चमड़े के हैं। अव्वल और आखिर से कई वर्क तलफ़ (ज़ाए) हो गए हैं। ये नुस्खा सबसे ज़्यादा क़ीमती और क़ाबिल-ए-एतिबार है। ये चौथी सदी में बमुक़ाम सिकंदरिया रखा गया था। और सोलहवीं सदी से पोप के महल में है। तक्ररीबन तीस साल हुए कि पोप ने इस की अकसी नक़लें लेने की इजाज़त दी। चुनान्चे अब यूरोप के हर बड़े कुतुब ख़ाने में इस की नक़लें पाई जाती हैं।

दोम : जो इब्रानी हुरूफ़-ए-तहज़्जी के पहले हर्फ़ अलिफ़ के नाम से मशहूर है। 1843 ई० में एक मशहूर आलिम तशनडरफ़ साहब ने कोह-ए-सिना के राहिब ख़ाने में इत्तिफ़ाक़न चंद वर्क पाए। जिन पर पुराने अहदनामे का यूनानी तर्जुमा बहुत पुराने हुरूफ़ में दर्ज था। इस से उनकी ख़्वाहिश हुई कि नए अहदनामे के औराक़ को भी दर्याफ़्त करे। लेकिन 1459 ई० तक उसे वहां जाने का मौक़ा नहीं मिला। पर इस साल राहिब ख़ाना में बहुत तफ़्तीश के बाद उसे आखिरकार कुल जिल्द मिल गई।

जसामत और तर्ज़ तहरीर में मज़कूर बाला नुस्खे से बहुत मुशाबेह (मिलता-जुलता) है। अब शहनशाह रूस के कुतुब ख़ाने वाक़ेअ सेंट पीटर्ज़ बर्ग में है।

सोम : जो आम हर्फ़ अलिफ़ के नाम से मशहूर है। उस के पहले सफ़े पर अरबी में ये लिखा है, कि ये नुस्खा किसी शहीद मुसम्मा सकिला ने नक़ल किया है। ये सर नामा अरबी में इसलिए लिखा गया कि बरसों तक कुस्तुनतुनिया के कुतुब ख़ाने में रहा। जहां अरबी का बहुत रिवाज था। कुस्तुनतुनिया के पेटीआर्क ने 1628 ई० में इस को इंग्लिस्तान के बादशाह चार्ल्स अव्वल को नज़र किया। लेकिन अस्ल में ये नुस्खा पांचवीं सदी में बमुक़ाम सिकंदरिया में लिखा गया था। अब ये लंदन के अजाइब घर में है। इस की चार जिल्दें हैं। जिनमें से तीन पुराने अहदनामे की और एक नए अहदनामे की। इस के भी चंद सफ़े खो गए हैं।

चहारुम : जीम यासी कीला नाम या एफ़्राईम का नुस्खा कहलाता है। चूँकि बारहवीं सदी में नए अहदनामे के नुस्खे पर किसी कातिब ने एक वाइज़ एफ़्राईम नामी के चंद वाअज़ लिखे। उन दिनों में ये दस्तूर था कि चमड़े की गिरानी (सख़्ती) के सबब से किसी नुस्खे को लेकर उस के वर्कों पर मोम मल के कोई नया मज़मून लिखा करते थे। चुनान्चे ये ही हाल यहां हुआ। अव्वल तहरीर इस नुस्खे पर नया अहदनामा था। ये पांचवीं सदी में बमुक़ाम सिकंदरिया लिखा गया। और कुस्तुनतुनिया में से होता हुआ फ़्रांस के

बादशाह के कब्जे में आ गया। 1834 ई० में किसी दवाई के ज़रिये ऊपर के मोम को उड़ा दिया। और नीचे की लिखाई साफ़ नज़र लगी।

अब याद रखिये कि ये नुस्खे हमको तक़रीबन 370 ई० तक पहुंचा देते हैं। लेकिन अब ये सवाल लाज़िम आता है, कि हमको किस तरह से मालूम हो कि ये नुस्खा रसूलों की हिदायत से लिखा गया। ये नुस्खे उस की दुरुस्त नक़लें हैं। इस के लिए दो और वसाइल हमारे पास हैं। यानी क़दीम तर्जुमे, और बुजुर्गों के इक़्तिबासात।

क़दीम तर्जुमे

क़दीम तर्जुमे : इनमें से मशहूर ये हैं :-

(1) सुर्यानी तर्जुमा जो दूसरी सदी में किया गया। इस ज़बान में पांचवीं, छठी सदियों में भी तर्जुमे हुए। लेकिन ये सबसे पुराना है। इस में दो उमूर ख़ास लिहाज़ के क़ाबिल हैं :-

(अ) नए अहदनामे में लिखे जाने के पचास (50) साल बाद ही ये तर्जुमा किया गया। इस में से साफ़ ज़ाहिर है कि इस क़लील अर्से में नए अहदनामे की किताबें कैसी क़ाबिल-ए-क़द्र समझी गईं।

(ब) जिस ज़बान में ये तर्जुमा हुआ वो कनआन में अवामुत्रास की ज़बान थी। और ग़ालिबन इसी ज़बान को हमारे खुदावंद ने देहाती लोगों के साथ इस्तिमाल किया।

(2) क़दीम लातीनी तर्जुमा जो अतालिया और अफ़्रीका के शुमाल में काम आता था। ये दूसरी सदी के वस्त में हुआ।

(3) दीगर लातीनी तर्जुमा जिसे जेरोम साहब ने चौथी सदी में किया।

(4) कोशी तर्जुमा चौथी सदी का। मिस्र के जुनूब में मुरव्वज़ है।

(5) अर्मनी तर्जुमा पांचवीं सदी का है। और मुल्क आरमीना में मुस्तअमल है।

(6) गाथ ज़बान का तर्जुमा : उन वहशी क़बाइल की ज़बान में जिन्होंने रोमी सल्तनत को आख़िरकार बर्बाद किया। ये चौथी सदी में किया गया। ये सारे तर्जुमे क़दीम

नुस्खों के मुताबिक हैं। और नीज़ मौजूदा तर्जुमों के। ये हमें तक्रीबन 130 ई° तक पहुंचा देते हैं।

क़दीम बुजुर्गों के इक़्तिबासात

(1) पेपियास, हायरोपोलिस (मुत्तसिल कलसी) का बाशिंदा। 65 ई° से 135 ई° तक ज़िंदा था। उसने खुदावंद के अक्वाल की तफ़्सीर पाँच जिल्दों में लिखी। इस में वो हमारी मौजूदा अनाजील का ज़िक्र करता है।

(2) जस्टिन शहीद : ये शख्स शुरू में यूनानी फ़ैलसूफ़ (आलिम, फ़ाज़िल) था और हक़ का तलाश करते-करते एक मसीही शख्स उसे मिला। जिसने उसे मसीह की तालीम दी। उस वक़्त से लेकर वो बहुत पुख़्ता मसीह हो गया। और आख़िरकार मसीह के लिए शहीद हुआ। उसने चंद किताबें लिखीं। उनमें से एक माअज़िरत नामा क़ैसर की तरफ़ लिखा। उसने मसीहियों की इबादत का ये ज़िक्र किया है, कि “इतवार के दिन सब मसीही जमा होते हैं और रसूलों की तस्नीफ़ात और नबियों के सहीफ़े सुनाए जाते हैं।” इन तस्नीफ़ात की बाबत वो कहता है, कि मसीह के रसूलों ने और रसूलों के पैरौओं (मानने वालों) ने इनको क़लमबंद किया। ये बयान हमारी चार अनाजील से मुत्तफ़िक़ है। क्योंकि इनमें से और रसूलों की और वो उन पैरौओं (मानने वालों) की तस्नीफ़ हैं। और जब इन अक्वाल से इक़्तिबास करता है तो वही जुम्ले लिखता है जो हमारी अनाजील में पाए हैं।

(3) टेश्यान ने जो जस्टिन शहीद का शागिर्द था चारों अनाजील का सिलसिले-वार बयान लिखा।

(4) इट्रेनेइस (160 ई° से 180 ई°) चारों अनाजील का नाम बता कर ताकीद से कहता है कि हम इन ही को मुसल्लम (माना हुआ, क़ाबिल-ए-एतिबार) समझते हैं।

(5) हराकिल्यान (170 ई° के क़रीब) गनोस्तग बिद्अती मोअल्लिम ने जो इट्रेनेइस का ख़ास मुखालिफ़ था। अपनी तस्नीफ़ात में कोशिश की कि अपनी तालीम को इन अनाजील से साबित करे। इस से ज़ाहिर है कि जितने अपने तर्ई किसी तरह से मसीही ठहराते थे वो इन किताबों को इस दीन की बुनियाद समझते थे।

अनाजील

उमूमन ये सब जानते हैं कि इंजीलें चार हैं। शायद कोई कहे क्या अच्छा होता अगर मसीह की सवानिह उम्मी का एक ही मुकम्मल बयान होता। जिसमें मसीह की ज़िंदगी के वाक़ियात सिलसिलेवार मुन्दरज होते? या शायद कोई ये कहे मसीह के अक्वाल क्यों तर्तीबवार एक ही जिल्द में ना लिखे गए। जो फ़ील-वाक़ेअ इन्जील यानी मसीह की खुशखबरी हुई।

शायद ये इन्सानी हिक्मत के मुताबिक़ होता। लेकिन अक्सर ये तजुर्बा हुआ है कि खुदा का तरीक़ा इन्सान के तरीक़े से मुतफ़रिक़् होता है। "मेरे ख़याल तुम्हारे से ख़याल नहीं और ना तुम्हारी राहें मेरी राहें हैं।" (यसअयाह 55:8) और अगर गौर करें तो ये मालूम होगा कि खुदा का ये मक्सद ना था कि मसीह की मुसलसल सवानिह उम्मी लिखवाए। ना उस के कामों और ना उस के अक्वाल का मुकम्मल बयान लिखवाना मद्दे-नज़र था। बल्कि ये गर्ज़ मालूम होती है, कि खुदा की तरफ़ से खुद मसीह हमारे लिए एक ख़ास मुकाशफ़ा हो। चुनान्चे चारों इन्जील नवीसों ने इस मुकाशफ़े के चार पहलू दिखाए हैं और इस के लिए मसीह के अक्वाल और अफ़आल में से जो मुनासिब और मुफ़ीद समझा। उनको उन्होंने क़लमबंद किया। चुनान्चे मत्ती ने यहूदियों के इतिज़ार के मुताबिक़ उस को मौऊद बादशाह ज़ाहिर किया। मर्कुस ने उस की इन्सानी ज़िंदगी का सादा तौर से बयान किया। लूका ने उस को हम्दर्द काहिन मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर करना) किया। और यूहन्ना ने उस की उलूहियत (खुदाई) पर ज़ोर दिया। इस से हमारा मतलब ये नहीं कि मज़कूर बाला तसव्वुर अलग-अलग इंजीलों में अलग-अलग पाए जाते हैं। बल्कि एक तरह से ये चारों तसव्वुर चारों इंजीलों में पाए जाते हैं। लेकिन हर एक ने एक ख़ास तसव्वुर पर ज़ोर दिया है। और बाक़ी तीनों का आम बयान किया है।

यूं ये चारों मुतफ़रिक़् (अलग-अलग) बयान ख़ास बातों में मुत्तफ़िक़् होने की वजह से ज़्यादा क़ाबिल-ए-एतिबार हैं। अगर ये चारों बयान ज़रा-ज़रा तफ़्सील में भी मुत्तफ़िक़् और मुशाबेह होते तो फ़ौरन शक पैदा होता कि इस में कुछ साज़िश है।

सरसरी पढ़ने वाले पर ये ज़ाहिर हो जाएगा कि पहली तीन अनाजील आपस में ज़्यादा मुशाबेह हैं। और यूहन्ना का बयान इन तीनों से बहुत मुतफ़रिक़् (अलग) है। और फ़र्क़ इतना बड़ा है कि बाअज़ों ने इन बयानात को ज़िदें समझा। लेकिन ज़्यादा तफ़्तीश से ये राय सही नहीं ठहरती। सुक्रात के भी दो बयान मौजूद हैं। एक बज़रिया अफ़लातून और एक बज़रिया ज़ीनोफ़न। और इनमें बहुत फ़र्क़ है तो भी सब लोग मानते हैं कि दोनों दुरुस्त हैं।

इन तीनों इंजीलों और यूहन्ना की इन्जील में खास फ़र्क़ ये है। कि पहली तीनों अनाजील में उमूमन उन कामों का ज़िक्र है जो इस मुल्क के शुमाली इलाक़े यानी गलील में मसीह ने किए। लेकिन यूहन्ना की इन्जील में अगरचे इनका कुछ ज़िक्र आता है। मगर खुसूसन इनमें यरूशलेम और यहूदिया में वाक़ेअ शूदा माजरे का बयान है। और फ़र्क़ की खास वजह ये मालूम होती है, कि यूहन्ना ने पहली तीन अनाजील के लिखे जाने के बाद अपनी इन्जील लिखी। उस वक़्त वो बहुत बूढ़ा हो गया था। और इफ़िसुस में रहता था। उस को मसीह की सारी ज़िंदगी पर गौर करने का मौक़ा मिला।

अब हम पहली तीन अनाजील का आपस में मुक़ाबला करें। ऐसा करना ज़रूर है। क्योंकि अगरचे वो आज़ादाना शहादत (गवाही) देती हैं। तो भी इनमें अजीब मुशाबहत (यक्सानियत) है। ना सिर्फ़ मज़ामीन में बल्कि वाक़ियात और अल्फ़ाज़ की तर्तीब में भी मसलन मफ़लूज के शिफ़ा देने के बयान में जो तीनों अनाजील में पाया है। (यानी मत्ती 9, मर्कुस 2, लूका 5 बाब) अल्फ़ाज़ का फ़र्क़ तो है जैसा कि हर आज़ादाना बयान में होना चाहिए। लेकिन कई एक जुमलों में ऐन एक ही अल्फ़ाज़ आते हैं। मसलन “ताकि तुम जान लो कि इब्रे-आदम को ज़मीन पर गुनाह माफ़ करने का इख़्तियार है। उसने मफ़लूज से कहा उठकर.... चला जा।” ये जुम्ले जो तीनों अनाजील में खुतूत वहदानी में पाया जाता है। एक असली मुशर्क़ चश्मे (एक जैसा ज़रिये) पर दलालत करता है। फिर खुदावंद की तब्दील सूरत के वक़्त तीनों अनाजील में ये बयान इस वाक़िये के बाद आता है जब मसीह ने अपने दुखों की पेशीनगोई की इस पेशीनगोई और इस वाक़िये में ताल्लुक़ इस जुम्ले के ज़रिये दिया गया है, “मैं तुमसे सच्च कहता हूँ कि जो यहां खड़े हैं। इनमें से बाअज़ ऐसे हैं कि जब तक इब्रे-आदम को बादशाह हो कर आते हुए ना देख लेंगे। हरगिज़ मौत का मज़ा ना चखेंगे।” इस जुम्ले की तफ़्सीर और इस का करीना (बहमी ताल्लुक़) से ताल्लुक़ निहायत मुश्किल है। तो भी ये जुम्ले तीनों अनाजील में इसी जगह में पाया जाता है। इस का ज़रूर कोई सबब होगा। और वो सबब यही मालूम होता है कि एक अस्ल बयान इन तीनों की बुनियाद है। अगर कोई अस्ल बयान या कोई मुशर्क़ चशमा (एक जैसा ज़रिया) इन तीनों की बुनियाद था तो वो किस किस्म का होगा। इनके बारे में बहुत मुख़ालिफ़ राएं होती हैं। इनमें खास राएं हैं।

(1) अगर मत्ती ने पहले अपनी इन्जील लिखी और मर्कुस ने उनका खुलासा करके अपनी इन्जील में लिखा। और लूका ने उनका मुक़ाबला करके अपनी इन्जील लिखी। चंद सदियों तक ये बहुत मशहूर राय रही। लेकिन आजकल बहुत थोड़े इस राय को मानते हैं। क्योंकि इस के ज़रिये अनाजील के खास फ़िर्क़ों की तश्रीह नहीं होती।

(2) मर्कुस ने अपनी इन्जील पहले लिखी। क्योंकि इस में वाकियात का सादा बयान है और मसीह की तकरीरों और वाअज़ों का बहुत कम बयान है। और मत्ती और लूका ने इसे इस्तिमाल किया। मगर वो लकीर के फ़क़ीर ना रहे। क्योंकि दीगर वसाइल से भी उन्होंने काम लिया। मसलन मत्ती ने जो खुद चश्मदीद गवाह था। अपनी याद से मसीह के वाअज़ों और नसीहतों का मुफ़स्सिल (तफ़सील के साथ) बयान किया। लूका ने ग़ालिबन मुक़द्दसा मर्यम और दूसरी औरतों से तफ़्तीश करके दीगर बातों का भी ज़िक्र किया। मसीह की पैदाइश का मुफ़स्सिल बयान। इस की एक मिसाल है।

(3) चूँकि मसीह ने अपने शागिर्दों को कहा था कि “तुम मेरे गवाह होगे।” इस के मुताबिक़ हर एक शागिर्द मसीह की ज़िंदगी के ख़ास वाकियात का बार-बार ज़बानी बयान किया करता था। और इस तकरार से तकररीबन एक ही अल्फ़ाज़ इस्तिमाल होने लगे। आमाल की किताब के पहले अबवाब से भी इस का पता लगता है। पतरस के चार वाअज़ों का मुक़ाबला करो। (आमाल 2:32 ता 38, 3:13 ता 15, 5:30 ता 32, 10:38 ता 43) ये तजुर्बे की बात है, कि ऐसे तकरार से ख़्वाह दुआ करने में हो। ख़्वाह गीतों के सुनाने में हो ये ही नतीजा पैदा होता है।

(4) दूसरी और तीसरी राय को मिलाने से एक चौथी राय निकलती है। जो शायद सबसे ज़्यादा करीन-ए-क्रियास (वो बात जिसे अक़ल कुबूल करे) है। यानी जो बयान पतरस रसूल इन्जील के वाकियात का ज़बानी किया करता था। मर्कुस ने उस को क़लमबंद किया। चुनान्चे पापियास ने इस का साफ़ ज़िक्र किया है, कि मर्कुस जो पतरस का रफ़ीक़ (साथी) था जो कुछ वो पतरस के मुँह से सुनता उस को सेहत (दुरुस्त) तौर पर से लिख लेता। और कि पतरस हस्बे-मौक़ा सामईन (सुनने वालों) की हालत के मुताबिक़ अपने बयान को तर्तीब दिया करता था। आर्येनियुस ने भी ये ही शहादत दी है।

मर्कुस के इस तहरीरी बयान की बुनियाद पर मत्ती रसूल ने अपनी याद से मसीह के बहुत से अक़वाल इस पर ईज़ाद किए मसलन पहाड़ी वाअज़। इस तरह लूका ने दीगर चश्मदीद गवाहों से कुछ ज़्यादा हालात दर्याफ़्त कर के अपनी इन्जील में दर्ज किए। (लूका 1:1 ता 4) मख़फ़ी (छुपा) ना रहे कि जो अजीब ताल्लुक़ इन तीनों अनाजील में है वो इस बात की बड़ी दलील है, कि ये तीनों आज़ादाना लिखते हैं लेकिन अजीब तौर से मुत्तफ़िक़ हैं।

छटा बाब

मत्ती की इन्जील

इस इन्जील का सरनामा ये है, “मत्ती के मुताबिक़” इस जुम्ले से ये मुराद हो सकती है कि इस में मत्ती की मुनादी का खुलासा पाया जाता है। लेकिन गालिबन इस से ये मुराद होगी कि मत्ती मुसन्निफ़ था। क्योंकि इस क्रिस्म का सरनामा मर्कुस की इन्जील पर है। जिसमें पतरस की मुनादी का खुलासा है। अगर पहले मअनी दुरुस्त होते तो सरनामा ये होता। पतरस के मुताबिक़, इलावा अज़ीं क़दीम कलीसिया में ये आम राय थी कि खुद मत्ती मुसन्निफ़ था।

मत्ती रसूल का अहवाल

लावी इब्रे हलफ़न कफ़र-नाहूम में महसूल (टैक्स लेने वाला) था उस का खास काम ये था जो झील में मछलियाँ पकड़ते थे। और जो सौदागर दमिश्क़ से जुनूब की तरफ़ सफ़र करते थे उनसे महसूल ले। एक दिन झील की तरफ़ से आते हुए येसू का गुज़र इस महसूल खाने के करीब हुआ। जहां लावी चुंगी पर बैठा हुआ था। येसू ने उस से कहा मेरे पीछे हो ले। वो उठकर उस के पीछे हो लिया। (मत्ती 9:9) इस बात का कुछ ज़िक़्र नहीं कि येसू ने पेशतर भी लावी से कलाम किया था। लेकिन ये तो करीन-ए-कियास है कि वो हुक्म का मुंतज़िर था। और वो बिल-फ़स्ल येसू का शागिर्द था। और जूही मसीह ने हुक्म दिया वो उस की खातिर सब कुछ छोड़ने को तैयार था। लावी ने किसी क़द्र इस बड़े रब्बी (उस्ताद) और उस की तालीम के बारे में सुना होगा। और खुदा की सल्लनत के बारे में मसीह की तालीम को कुबूल करने के लिए उसने इरादा किया होगा।

जब लावी येसू का शागिर्द हो गया तो उसने गालिबन अपने नाम लावी को मत्ती से बदल डाला। क्योंकि उस के ये दो नाम आते हैं। लफ़ज़ मत्ती के मअनी हैं खुदा की बख़्शिशा। ये नई बात ना थी। क्योंकि शमऊन और साऊल ने नई ज़िंदगी में आकर नए नाम इख़्तियार किए। इसी रोज़ मत्ती ने ज़ियाफ़त की। (शायद अपने पुराने रफ़ीक़ों को अलविदाई ज़ियाफ़त देने या येसू से मुलाक़ात कराने की गर्ज़ से) इस में उसने येसू और उस के शागिर्दों को बुलाया। मत्ती के लिए वो बड़ी खुशी की ज़ियाफ़त हुई होगी। जब उसने पहले-पहल बतौर ऐनी गवाह के येसू के अल्फ़ाज़ और काम मुलाहिज़ा किए। वो वाक़िया उस के ज़हन नशीन हो गया। और ऐसी हिदायत से माबाअद कलीसिया की तालीम के लिए लिखा। इलावा अज़ीं बारह रसूलों की फ़ेहरिस्त के सिवा इन्जील की तवारीख़ में मत्ती का कहीं नाम नहीं आता। मुक़द्दस मत्ती का ये थोड़ा सा अहवाल इन्जील

से मालूम होता है। मगर इन चंद इशारों से इस इन्जील नवीस की दीनी हालत सीरत और तालीम मालूम होती है।

चूँकि कफ़र-नाहूम हेरोदेस अंतिपास के इलाक़े में था इसलिए ग़ालिबन लावी इस बादशाह के मातहत अप्रसर होगा। ना कि रोमी सल्तनत के मातहत जो लोग मसीह के शागिर्द हुए। उनमें से बहुत अग़लबन मौऊद मसीह की इंतज़ारी में मुल्की बादशाही की उम्मीद रखते थे। मसलन शमऊन ज़ीलोतीस (लूका 6:15) ये लक़ब ज़ीलोतीस एक ख़ास फ़िर्के का लक़ब था। जो इस सल्तनत के इंतज़ार में बड़े सरगर्म थे। शायद मत्ती का ये ही हाल हो। इसलिए हेरोदेस के ख़ानदान को तस्लीम करना उस के लिए ऐसा बुरा ना था। जैसा रोम के आगे ख़म (झुकना) होना। हेरोदेस ऐसा अजनबी और ग़ैर क़ौम ना था जैसा रोमी क़ैसर। अदूम इस्राईल से मुल्हिक हो चुका था। इसलिए ये ख़याल हो सकता है कि एक यहूदी जो मसीह की सल्तनत का मुंतज़िर हो हालत मायूसी में अपनी उम्मीदों की तक्मील हेरोदेस के ख़ानदान में समझे। अगर मसीह के मुताल्लिक़ ख़यालात को अंतिपास या उस के मशहूर फिलिप्पुस के साथ पैवस्ता करना ना-मुम्किन था तो भी ये ना-मुम्किन ना था, कि इस ख़ानदान से कोई बादशाह उठे। और इस्राईल की सल्तनत बहाल करे।

जो कोई मत्ती की इन्जील पड़ेगा वो ज़रूर ये मालूम करेगा कि मत्ती यूनानी ना था। बल्कि इब्रानियों का इब्रानी। अपनी क़ौम की तवारीख़ और नबुव्वतों में आलिम। और निहायत आरज़ू से उनकी तक्मील का मुंतज़िर था। लेकिन उसे शायद मजबूरन ये गुमान करना पड़ा कि ये तक्मील हेरोदेस के ख़ानदान में होगी। ये राय दो तरह से उस की तबीयत के मुवाफ़िक़ थी। अव्वलन उस में नफ़ा की मुहब्बत मालूम होती है। ये यहूदी क़ौम की तक्रीबन जबलत (आदत) हो गई थी। अगर ऐसा ना होता तो मत्ती ऐसा पेशा इख़्तियार ना करता जो इस क़द्र ज़लील व हक़ीर समझा जाता था। सानियन वो ग़ौर व फ़िक़ और बे शोर व शर ज़िंदगी बसर करना चाहता था। वो ग़लील के शूरू शर और मन्सूबों और बंदिशों से अलग हो कर रहता था। शायद लावी की इस किस्म की उम्मीद थी। लेकिन जब येसू की तालीम और मंशा (मर्ज़ी) उस के दिल पर ज़ाहिर हुआ तो उसने फ़ौरन इस तसव्वुर को कुबूल कर लिया। और दिल व जान से इन्ने दाऊद पर फ़िदा (आशिक़) हो गया। खुदा और उस की सल्तनत की ख़ातिर उसने अपनी दुनियावी तरक्की को कुर्बान किया। और अपने पेशे और दोस्तों को छोड़ दिया। हो सकता है कि मत्ती की दौलत बमुक़ाबला जहान के दौलतमंदों के कस्रत से ना हो। लेकिन बमुक़ाबला एक ग़लीली क़स्बे के वो बहुत थी। अगर पौलुस की तरह वो अपनी ज़िंदगी का अहवाल बयान करता तो शायद इस बात का भी ज़िक़र करता कि उसने कितने नफे की चीज़ों को मसीह येसू के इल्म की हिक्मत के मुक़ाबले में नुक़सान समझा।

अगर अनाजील की ख़ामोशी से हम कुछ नतीजा निकालें तो वो ये होगा कि मत्ती शागिर्दों में फ़रोतन शरूख़ था। वो तीन ख़ास शागिर्दों में ना था। उस का नाम किसी

वाकिये से मुताल्लिक नहीं। जैसे कि इन्द्रियास, शमऊन, फिलिप्पुस, लूका, बरतलमाई, याकूब के भाई यहूदाह और ज़बदी के नाम किसी ना किसी वाकियात से मुताल्लिक हैं। लेकिन इस का कुछ ज़िक्र नहीं कि मत्ती ने एक बात भी मसीह से कही। जब वो बुलाया गया तो वो उठकर चुप-चाप उस के पीछे हो लिया।

रिवायत है कि वो फ़िलिस्तीन में दूसरे रसूलों की निस्बत ज़्यादा मुद्दत तक रहा। और उसने अपने हम वतनों को येसू के अल्फ़ाज़ और अक़्वाल से वाक़िफ़ किया। और नीज़ कि एथोपीया, पार्थिया, मिस्र और मक्किदूनिया में उसने मुनादी की। सिकंदरी क्लेमंस कहता है, कि मत्ती बिल्कुल रियाज़त-कश (नफ़सकुशी करने वाला) हो गया और उसने गोश्त खाना तर्क किया। मशरिकी कलीसिया की राय है कि वो तबई मौत से मर गया। लेकिन मगरिबी कलीसिया उसे शहीदों में शुमार करती है।

ये इन्जील कभी दूसरे मुसन्निफ़ से मन्सूब नहीं हुई। पहली सदी के आख़िर से पेशतर दूसरी सदी के शुरू में बिद्अतियों और मसीहियों दोनों ने इस से इक़्तिबास किया है। पैपियास ने भी ये ज़िक्र किया कि मत्ती ने इब्रानी ज़बान में ये बयान लिखा। और हर एक ने हस्बे ताक़त इस का तर्जुमा किया।

मुसन्निफ़ के बारे में क़दीम बुजुर्गों की शहादत, पैपियास, आर्यिनुस, ओरीजन, यूसेबीस, एपीफ़ीनियस, जेरोम सब इस अम्र के शाहिद (गवाह) हैं, कि मत्ती इस इन्जील का मुसन्निफ़ है। इनमें पैपियास जो हरापौलिस वाक़िया फ़िरोगिया का बिशप दूसरी सदी के शुरू में था यूं कहता है, “मत्ती ने इब्रानी ज़बान में (लोगिया) को तालीफ़ किया। और हर शख़्स हस्बे लियाक़त इस का तर्जुमा करता था।” इस जुम्ले से दो तीन दिलचस्प सवाल निकलते हैं। अक़्वल ये कि “लोगिया” (बमाअनी अक़्वाल) से क्या मुराद है। बाअज़ समझते हैं कि इस से ये इन्जील ही मुराद है। अगरचे इस में ना सिर्फ़ अक़्वाल ही हैं बल्कि माजरो (वाक़ियात) का बयान भी है। चुनान्चे (रोमियों 3:2) में ये लफ़ज़ “लोगिया” सारे पुराने अहदनामे के लिए आया है। लेकिन बाअज़ ये समझते हैं कि इस से मुराद मसीह के अक़्वाल का मजमूआ है जिसे मत्ती ने जमा किया। दोम कि क्या इस इन्जील की असली ज़बान इब्रानी थी या यूनानी। पैपियास ने तो साफ़ कहा कि मत्ती ने ये इन्जील इब्रानी में लिखी और यूसीस कहता है कि पंतेनौस ने मत्ती की इब्रानी इन्जील हिन्दुस्तान में देखी। (यानी बरतलमाई रसूल इसे साथ लाया था) जेरोम एक इन्जील का ज़िक्र करता है जो इब्रानियों की कहलाती है या जिसे बाअज़ ख़याल करते हैं मत्ती की इन्जील। इस का उसने यूनानी में तर्जुमा किया। लेकिन बरअक्स इस के मौजूदा यूनानी इन्जील की तर्ज़ इबारत और मर्कुस व लूका की इंजीलों से लफ़ज़ी मुशाबहत इस बात पर दलालत करती है, कि ये इन्जील तर्जुमा नहीं है। बल्कि शुरू से यूनानी में लिखी गई। और जेरोम के मकूले के बारे में ये क़ाबिल लिहाज़ है कि अगर वो इब्रानी इन्जील मत्ती की असली

इन्जील थी तो उसने क्यों इस का तर्जुमा यूनानी में किया। क्योंकि हम जानते हैं कि उस के हाथ में हमारी मौजूदा यूनानी इन्जील थी। और याद रहे वो शक के साथ इस का ज़िक्र करता है कि बाअज़ लोग समझते थे कि वो मत्ती की इन्जील थी। और जेरोम ने इस इब्रानी इन्जील से जो इक्तिबास दिए हैं वो मौजूदा इन्जील में पाए नहीं जाते। शायद कोई इब्रानियों की इन्जील थी जिसे बाअज़ों ने मत्ती की इन्जील समझा। और ये ताज्जुब (हैरानगी) नहीं क्योंकि ये मशहूर बात थी कि मत्ती ने इब्रानी मसीहियों के लिए इन्जील लिखी।

किन के लिए लिखी गई

इन्जील में इस का साफ़ ज़िक्र नहीं। लेकिन इस के मज़ामीन से ये ज़ाहिर होता है कि यहूदी मसीहियों के लिए लिखी गई। चुनान्चे इस का आम मक़सद भी इसी अम्र की तरफ़ इशारा करता है। क्योंकि मत्ती ये साबित करना चाहता है कि येसू में यहूदी क्रौम की उम्मीद जो मसीह के बारे में थी और जिसके वो बड़ी सरगर्मी से मुंतज़िर थे पूरी हुई है। इस की ताईद में वो ख़ासकर पहले चार अबवाब में अहदे-अतीक़ से बहुत इक्तिबास करता है। (देखो 1:21 ता 23, 2:4 ता 6, 3:3, 4:14 ता 17 मुक़ाबला करो आमाल 26:6 ता 7) इसी तरह से मूसवी शरीअत की तक्मील को ज़ाहिर करता है। देखो पांचवां बाब फ़िल-जुम्ला मत्ती ये ज़ाहिर करना चाहता है कि यहूदी क्रौमी बादशाहत, जब कि खुद क्रौम रोज़ बरोज़ ज़वाल पकड़ती जाती थी मसीह की रुहानी बादशाहत में हक़ीक़ी तक्मील पाती है। देखो कई दफ़ाअ उस की इन्जील में आस्मान की बादशाहत का ज़िक्र आया है। और इसी को मद्दे-नज़र रखकर मसीह का नसब-नामा अब्रहाम और दाऊद से लेकर बताया है। और नसब-नामे के बाद फ़ौरन ये ज़िक्र होता है कि ये नजात-दहिंदा “अपनी उम्मत को उनके गुनाहों से बचाएगा।” हालाँकि पुराने अहदनामे में ये ख़ास खयाल था कि ये क्रौम अपने मुल्की दुश्मन से बच जाये।

ताहम ग़ैर क्रौमों को मुक़द्दस मत्ती नज़र-अंदाज नहीं करता। मसलन मत्ती 8:11 “बहुतेरे पूरब और पक्षिम से आकर इब्राहिम और इज़हाक़ और याक़ूब के साथ आस्मान की बादशाही में बैठेंगे।”

(मत्ती 11:21 ता 24) में यहूदियों के बे-तौबा शहरों को मलामत कर के ये कहता है कि “जो मोअजिज़े तुम में ज़ाहिर हुए” अगर वो सूर और सैदा में ज़ाहिर होते तो टाट ओढ़ कर और ख़ाक में बैठ कर कब के तौबा कर लेते।

(मत्ती 15:31) से लेकर यूं लिखा है कि “जब इब्रे-आदम जलाल में आएगा तो उस वक़्त वो अपने जलाल के तख़्त पर बैठेगा। और सब कौमें उस के सामने जमा की जाएँगी। और वो एक को दूसरे से जुदा करेगा। जैसा गल्लाबान भेड़ों को बकरियों से जुदा करता है। और भेड़ों को अपने दाहने और बकरियों को बाएं खड़ा करेगा।.... उस वक़्त बादशाह अपनी दाहिनी तरफ़ वालों से कहेगा कि आओ मेरे बाप के मुबारक लोगो जो बादशाही बनाए आलम के वक़्त से तुम्हारे लिए तैयार की गई है उसे विरसा में लो।” और सऊद (आस्मान पर उठाया जाने) से पेशतर जब मसीह ने अपने शागिर्दों को आखिरी हुक्म दिया तो यूं फ़रमाया “आस्मान व ज़मीन का कुल इख्तियार मुझे दिया गया है पस तुम जा कर सब क़ौमों को शागिर्द बनाओ।” (मत्ती 28:18 ता 19)

इस इन्जील का सिलसिला

इस इन्जील में ये जुम्ला पाँच ख़ास मौक़ों पर आया है यानी जब येसू ने ये बातें कहीं तो....। (मत्ती 7:28, 11:1, 13:53, 19:1, 26:1)

इस से बाअज़ों ने ये समझा कि मत्ती का मंशा (मर्ज़ी) ये था कि अपनी इन्जील को तौरेत की तरह पाँच हिस्सों में तक़सीम करे। लेकिन ये क़ियास दुरुस्त नहीं। क्योंकि उस के मुताबिक़ इन पाँच जुमलों से इन्जील के छः हिस्से होते हैं। जैसा जस्टिन शहीद ने ज़िक़्र किया है। जब मसीही लोग इतवार के रोज़ इबादत के लिए जमा होते थे तो रसूलों की तस्नीफ़ात पढ़ते थे। और उनमें से एक हिस्सा एक इतवार के लिए विर्द (तिलावत करना) होगा।

बाब अक्वल : मसीह का नसब-नामा और उसकी एजाज़ी पैदाइश (मोअजज़ाना पैदाइश)

बाब दोम : बचपन के माजरे। हेरोदेस से भागना। मिस्र को भाग कर जाना। और वहां से वापिस आना।

बाब सोम : यूहन्ना का बपतिस्मा।

बाब चहारुम : 1 से 11 मसीह का शैतान से आज़माया जाना। 12 से 25 गलील में मसीह के काम का शुरू और चंद शागिर्दों की बुलाहट।

5, 6, 7 बाब : पहाड़ी वाअज़ (पहली फ़स्ल का ख़ातिमा)

8:1 से 9:8 तक : चंद मोअजिज़ों का ज़िक्र।

9:9 से 17 : महसूल लेने वाले मत्ती की बुलाहट। महसूल लेने वालों के साथ खाने पर फ़रीसियों का एतराज़।

18:9 से 33 : चार मोअजिज़ों का बयान।

9:35 से 11:1 तक : भीड़ पर मसीह का तरस खाना। और खुद उनकी तालीम देना और रसूलों की रिसालत। (गलील में दूसरा दौरा) दूसरी फ़स्ल का ख़ातिमा।

11:2 से 30 तक : कैदखाने से यूहन्ना बट्रिस्ट का सवाल और मसीह का जवाब बे-तौबा शहरों पर मलामत। थके मांदों की बुलाहट।

12 बाब : फ़रीसियों से मुबाहिसा दरबारा (1) सबत (बदरूहों के निकालने)

13:1 से 52 तम्सीलें। तीसरी फ़स्ल का ख़ातिमा।

13:53 से 14:36 तक : मसीह के काम का तीसरा दौरा। जिसमें वाक़ियात का ज़िक्र है। हम वतनों से रद्द किया जाना, यूहन्ना बट्रिस्ट की मौत की ख़बर मिलना। पाँच हज़ार को खिलाना। पानी पर चलना।

15:1 से 20 : तहारत और नाजायज़ खानों के बारे में मुबाहिसा।

15:21 से 39 : कनआनी औरत की बेटी को अच्छा करना। चार हज़ार को खिलाना।

16:1 से 12 तक : फ़रीसियों के इस्तिजाब और ख़मीर के बारे में।

19:13 से 26 तक : अपनी मौत की इत्तिला और पतरस का इकरार। ये दो माजरे मसीह के काम की निस्फ़ मंज़िल में।

17:1 से 13 तक : सूरत की तब्दीली।

17:14 से 27 तक : मिर्गी के बीमार को शिफ़ा देना। मौत की दुबारा ख़बर। नीम मिस्क़ाल का वाक़िया।

18 बाब : ठोकरों और भाईयों को माफ़ करने का ज़िक्र (चौथी फ़स्ल का खातिमा)

19:1 से 5 : तलाक़, और छोटे बच्चों को बरकत देना।

19:16 से 20:16 तक : दौलतमंद का ठोकर खाना और मज़दूरों की तम्सील।

20:17 से 28 तक : मौत का सह बारह ज़िक्र

20:29 से 21:11 तक : यरूशलेम तक आना और इस में दाख़िल होना। असना-ए-राह में दो अँधों को बीनाई देना और गधे पर सवार होना।

21:12 से 28:20 तक : मसीह की ज़िंदगी के आख़िरी हफ़्ते के माजरे।

सिलसिलेवार चारों अनाजील के मुताबिक़

मुनासिब होगा कि इन माजरो का बयान सिलसिलेवार चारों अनाजील के मुताबिक़ लिखा जाये।

(1) सबत बैत-अन्याह में। यूहन्ना 12:1 से 11, मत्ती 26:6 से 13, मर्कुस 14:3 से 9

(2) इतवार : या ख़जूरो का इतवार, शाहाना यरूशलेम में दाख़िल होना। मत्ती 21:1 से 11, मर्कुस 11:1 से 11, लूका 19:29 से 44, यूहन्ना 12:12 से 19

(3) पीर : इंजीर के दरख़्त का सूख जाना। हैकल की सफ़ाई। मत्ती 21:21 से 19, मर्कुस 11:12 से 19, लूका 19:45 से 48

(4) मंगल और बुध : चंद्र मुबाहिसे फ़रीसियों के साथ। मत्ती 21:20 से 23:39 तक। मर्कुस 11:27 से 12:44, लूका 20:1 से 21:4 तक, यूहन्ना 12:20 से 50

(5) बुध की शाम : चंद्र शागिर्दों के सामने यरूशलेम की बर्बादी और अदालत के दिन का बयान। यहां मत्ती ने तीन ख़ास तम्सीलें लिखी हैं। जो ना मर्कुस और ना लूका ने बयान की हैं। मत्ती 24, 25 बाब, मर्कुस 13, लूका 21:5 से 38, इन चारों में शाम के वक़्त बैत-अन्याह को वापिस चला जाता है।

(6) जुमेरात : इस रोज़ सुबह को वो बैत-अन्याह से रवाना नहीं होता। बल्कि पतरस और यूहन्ना को फ़सह तैयार करने के लिए यरूशलेम में भेजता है। (मत्ती 26:17 से 19), (मर्कुस 14:12 से 16), (लूका 22:7 से 13) दोपहर के बाद बाक़ी शागिर्दों के साथ यरूशलेम में आकर फ़सह खाता है। (मत्ती 26:20 से 35), (मर्कुस 14:17 से 25), (लूका 22:13 से 38), (यूहन्ना 13, 14, 15, 16, 17 बाब)

गतसमनी के बाग़ में जानकनी और मसीह का गिरफ़्तार होना। मत्ती 26:36 से 56, मर्कुस 14:26 से 52 लूका 22:39 से 53, यूहन्ना 18:1 से 12

मसीह की जवाबदेही हज़ा, कैफ़ा के सामने। (मत्ती 26:57 से 75), (मर्कुस 14:53 से 72), (लूका 22:54 से 65)

(7) जुमा : सदर मज्लिस के सामने जवाबदेही। (मत्ती 27:1), (मर्कुस 15:1 से 15), (लूका 22:1 से 66), (यूहन्ना 18:28 से 19:16)

मस्लूब होना। (मत्ती 27:17 से 56), (मर्कुस 15:16 से 41), (लूका 23:26 से 49), (यूहन्ना 19:17 से 37)

उस का दफ़न होना और जी उठना। (मत्ती 27:57 से 28:20), (मर्कुस 15:42 से 16:20), (लूका 23:50 से 24:53), (यूहन्ना 19:38 से 21:25)

चारों अनाजील इस अम्र पर मुत्तफ़िक्क हैं मसीह के दुखों और मौत मसीह के जी उठने के सबूत पर

मज़कूर बाला बयान से जिसमें मसीह के आखिरी हफ़्ते के माजरे पाए जाते हैं। हर शख्स जो सरसरी तौर पर भी इन इंजीलों को पढ़ेगा वो इन दो बातों को मालूम करेगा :-

(1) चारों अनाजील इस अम्र पर मुत्तफ़िक़ हैं कि मसीह के दुखों और मौत का मुफ़स्सिल बयान करें। उसे वो कुल बयान को मेअराज (आला दर्जा, बलंद मर्तबा) समझते हैं।

(2) मसीह के जी उठने के सबूत पर बहुत ज़ोर देते हैं। ये दो माजरे यानी मौत और जी उठना मिलकर कुल इन्जील का लुब्ब-ए-लुबाब (खुलासा) हैं। (देखो रोमियों 4:25) इस जगह हम उस की मौत के मक़सद की मुफ़स्सिल तश्रीह नहीं कर सकते। लेकिन मसीह की क्रियामत (मुर्दों में से जी उठना) चूँकि एजाज़ी (मोअजज़ाना) है। इसलिए इस की शहादत मुफ़स्सिल (तफ़सीली गवाही) दी गई है। चूँकि मोअजिज़ों पर एतराज़ करने वाले जी उठने की इन शहादतों (गवाहियों) पर हर्फ़गीरी (नुक्ता-चीनी, ऐब निकालना) करते हैं। इसलिए मुनासिब है कि इनका तफ़सील-वार बयान करें।

मख़फ़ी (छुपा) ना रहे कि खुद मुल्हिद (लादीन, काफ़िर) मानते हैं कि बिलफ़र्ज़ अगर क़ादिर-ए-मुतलक़ खुदा हो तो मोअजिज़े ग़ैर-मुम्किन नहीं। जिसने ख़ल्क़त पैदा की और वो इस को बदल भी सकता है। इलावा अज़ीं अगर खुदा अख़्लाक़ी मक़सद को सारे मक़ासिद से आला समझता है तो ताज्जुब नहीं कि वो किसी अख़्लाक़ी मक़सद के लिए अस्बाब मौजूदात में कोई मोअजिज़ा दिखाए।

पस हम मसीह के जी उठने की शहादतों को बिला-तास्सुब (मज़हब की बेजा हिमायत के बग़ैर) जांच सकते हैं। चारों अनाजील के बयान से और ख़ुतूत से ये शहादत (गवाही) मिलती है।

(1) औरतें क़ब्र पर आईं। (मत्ती 28:1), (मर्कुस 16:1), (लूका 24:1), (यूहन्ना 20:1)

(2) क़ब्र के ख़ाली होने से हैरान हो कर तितर-बितर हो गईं ताकि शागिर्दों को खबर दें। (मत्ती 28:8), (मर्कुस 16:8), (लूका 24:9)

(3) मसलन मर्यम मग़दलीनी पतरस और यूहन्ना को। (यूहन्ना 20:2)

- (4) पतरस और यूहन्ना क़ब्र को ख़ाली देखकर चले जाते हैं। (यूहन्ना 20:3 ता 10)
- (5) मर्यम को क़ब्र पर मसीह दिखाई देता है। (यूहन्ना 20:11 ता 18), (मत्ती 28:9 ता 10) (अग़लबन ये आयात मर्यम से मुताल्लिक़ हैं)
- (6) पतरस को (लूका 24:34), (1 कुरिन्थियों 15:5)
- (7) दो शागिर्दों पर इमाओस के गांव में। (लूका 24:13 से 33)
- (8) दस रसूलों को मये दीगर शागिर्दों के। (लूका 24:36 से 44), (यूहन्ना 20:19 ता 23), (1 कुरिन्थियों 15:5)
- मज़कूर बाला ज़हूर जी उठने के दिन ही वाक़ेअ हुए।
- (9) अगले इतवार ग्यारह रसूलों को। (यूहन्ना 20:26 ता 29)
- (10) गलील में रसूलों और शागिर्दों की बड़ी जमाअत को। (मत्ती 28:16 ता 20), (1 कुरिन्थियों 15:6)
- (11) याक़ूब को। (1 कुरिन्थियों 15:7)
- (12) दरिया-ए-तिबरियास पर। (यूहन्ना 21:1 वग़ैरह)
- ये पाँच अलग-अलग बयानात हैं। लेकिन जी उठने के वाक़िये पर सब मुत्तफ़िक़ हैं।

मुक़द्दस मर्कुस की इन्जील

मसीह के आखिरी हुक्म के मुताबिक़ उस के रसूल और दीगर शागिर्द इधर-उधर जा कर मुनादी करने लगे। रसूलों की ऐन हयात में ये बयान काफ़ी था। लेकिन जब वो यके बाद दीगरे इंतिक़ाल करते गए। तो एक तहरीरी बयान की ज़रूरत महसूस हुई और बहुतों ने (लूका 1:1 से 4) इस अम्र की कोशिश की बाअज़ों की राय है कि मर्कुस की इन्जील इन इब्तिदाई कोशिशों का तक्ररीबन पहला नतीजा है।

पैपियास जो हेरापौलिस का उस्कुरफ़ (पादरियों का सरदार) था (दूसरी सदी के पहले हिस्से में) यूं लिखता है कि "मर्कुस ने पतरस का तर्जुमान हो कर बसहित तमाम (अगरचे तर्तीबवार नहीं) मसीह के सारे अहवाल और अफ़आल जहां तक उस को याद रहा क़लमबंद किया। क्योंकि उसने ना खुदावंद के मुँह से सुना ना उस की रिफ़ाक़त में रहा। मगर पतरस का रफ़ीक़ (साथी) था। जो सामईन (सुनने वालों) को हस्ब-ए-ज़रूरत तालीम देता था। मगर मसीह के वाक़ियात का बयान तर्तीबवार ना करता था। पस मर्कुस ने इस तरह से जुदा-जुदा बातें तहरीर करके किसी तरह की ग़लती ना की। एक ही बात पर ज़ोर देता था कि मैं ना कुछ छोड़ूँ ना ग़लत-बयानी करूँ। आईरिनियस भी जो उस सदी में था। यूं कहता है कि मर्कुस ने पतरस का शागिर्द और तर्जुमान हो कर पतरस की मुनादी के मज़ामीन तहरीर करके हमारे सपुर्द किए।

मुख्तसर सीरत व हालात मर्कुस

मर्कुस : ये लातीनी नाम है यहूदी नाम यूहन्ना है। (आमाल 12:12) उस की वालिदा एक मशहूर दौलतमंद ख़ातून मर्यम नामी थी। जिसके घर में मसीही दुआ बंदगी के लिए जमा हुआ करते थे। और बाअज़ों की राय है कि गतसमनी का बाग़ उसी की मिल्कियत था। अगर ये दुरुस्त हो तो शायद वो जवान जिसका ज़िक्र मर्कुस 51:14, 52 में आया है यही यूहन्ना मर्कुस हो। इस के बाप का कोई ज़िक्र नहीं। ये बर्नबास का ख़ाला ज़ाद भाई था। (फिलिप्पियों 4:10) पौलुस और बर्नबास का पहले सफ़र में रफ़ीक़ था। लेकिन जल्द उनसे जुदा हो गया। (आमाल 13:13, 5) इस जुदाई के बाइस पौलुस और बर्नबास में इख़्तिलाफ़ राय हुआ। (आमाल 15:37) बाअदा (बाद में) वो पतरस की रिफ़ाक़त में नज़र आता है। (1 पतरस 5:13) इस के बाद वो पौलुस का मददगार हुआ (फिलिप्पियों 4:10) (फिलिप्पियों 4) (2 तीमुथियुस 4:11)

नए अहदनामे के बाद ये रिवायत है कि पतरस की वफ़ात के बाद वो मिस्र में रहा।

तस्नीफ़ मर्कुस

तस्नीफ़ : इस के बारे में चार बातों का लिहाज़ करें

(1) **तारीख़ तस्नीफ़** : गुमान ग़ालिब है कि तक्ररीबन 67 या 68 ई० में लिखी गई। शायद इस से भी पेशतर। बहरहाल तर्ज़ बयान से पता चलता है कि मुसन्निफ़ उन

वाकियात का जिक्र सफ़ाई और सादगी से करना चाहता है जिनको उसने ऐन गवाहों से सुना था।

(2) तहरीर की जगह : आम रिवायत है कि ये इन्जील शहर रोम में तहरीर हुई। ये रिवायत काबिल-ए-एतिबार मालूम होती है। क्योंकि इस की कुछ मुखालिफ़त नफ़्स-ए-मज़मून से नहीं होती।

(3) किन के लिए लिखी गई : गालिबन कोई खास फ़रीक़ मद्दे-नज़र नहीं था। इस में मसीह की ज़िंदगी के वाकियात का सादा बयान है। किसी खास फ़रीक़ के मुताबिक़ नहीं लिखी गई। अलबत्ता ग़ैर क्रौमों के फ़ायदे के लिए खास यहूदी मुहावरों और दस्तुरात की तश्रीह की गई है। बुआनर्गिस (मर्कुस 3:17) तुल्यता क्रौमी (मर्कुस 5:29) कुर्बान (7 मर्कुस :11) बर्तमाई (मर्कुस 10:46) अब्बा (14:26) इलोही इलोही (15:34) जहन्नम (9:43) कवार्डनेटस (मर्कुस 12:42) स्पक्युलीटर (मर्कुस 6:27) वग़ैरह यहूदी जब तक हाथ ना धोते (मर्कुस 7:3) ज़ैतून का पहाड़ हैकल के सामने (मर्कुस 13:3) फ़सह के ज़ब्ह करने के बारे में (मर्कुस 14:12) तैयारी का दिन (मर्कुस 15:42) लेकिन ना मसीह का नसब-नामा है ना पुराने अहदनामे से इक्तिबासात हैं सिवाए पहले बाब के।

(5) किस ज़बान में लिखी गई : यूनानी ज़बान में लिखी गई। सिवाए दीगर सबूतों के एक सबूत ये है कि अरामी ज़बान की तश्रीह की गई है जैसा पहले जिक्र हुआ।

मर्कुस की इन्जील के ख़साइस

याद रहे कि मर्कुस की इन्जील पतरस की मुनादी के मुताबिक़ लिखी गई। इस मुनादी के दो नमूने आमाल की किताब में मौजूद हैं। (आमाल 1:21-22) (आमाल 10:26 से 42) चुनान्चे वो कहता है कि बपतिस्मे के वक़्त किस तरह ख़ुदा ने येसू नासरी को रूह-उल-कुद्स और कुव्वत से ममसूह किया। और किस तरह उस की आजमाईश के बाद वो नेकी करता फिरा। और उन सबको जो शैतान के हाथ से जुल्म उठाते थे चंगा करता फिरा क्योंकि ख़ुदा उस के साथ था। यूं जो तस्वीर मर्कुस ने मसीह की हमारे वास्ते खींची है वो हक़ीक़ी इन्सान की है। चुनान्चे वो उस के रंज, मुहब्बत, तरस, गुस्सा, भूक, आराम, सोना (7:34, 12:8, 21:10, 24:6, 2:6, 3:5, 8:12, 33, 10:16, 11:12, 6:31, 4:38) वग़ैरह को दिखाता है। इलावा अज़ीं मसीह की हरकात व सकनात का जिक्र करता है। (देखो 7:33, 8:33, 9:36, 10:16, 4:38, 6:31, 10:32) मुक़द्दस मर्कुस

लफ़ज़ फ़ील-फ़ौर या फ़ौरन को तक्ररीबन 46 दफ़ाअ इस्तिमाल करता है। इस से पता लगता है गोया वो वाक़ियात उस की आँखों के सामने गुज़र रहे हैं।

(1) इस इन्जील का सिलसिला : इस इन्जील के शुरू में ये बात नज़र आती है कि कुछ अर्से तक खुदावंद मसीह अपने मोअजिज़ों और नई दिलचस्प तालीम के ज़रिये मशहूर और हर दिल अज़ीज़ हो गया।

(2) लेकिन थोड़े ही अर्से के बाद बाक़ी शरई मोअल्लिम उस की मुखालिफ़त करने लगे। इसलिए इस इन्जील का बड़ा हिस्सा इन ही दो बातों पर मुशतमिल है। यानी अवामुन्नास में मुनादी और मुआल्लिमों से मुबाहिसा।

(3) तब उसने तर्ज़ तालीम को बदला और ज़्यादा तम्सीलों में कलाम करने लगा। शायद पहले भी उसने तम्सीलें इस्तिमाल की हों।

(4) इन्जील के ऐन वस्त में (8:30) शागिर्दों से अपने दुखों का ज़िक्र करने लगता है। और उस वक़्त से लेकर इन शागिर्दों को तन्हाई में बहुत तालीम देता रहता है। गोया आइन्दा दुखों और सलीब का साया उस के दिल पर छाता जाता था।

(5) इस से हम उस हिस्से तक पहुंचते हैं जिसमें उस के आखिरी मुबाहिसे पकड़वाए जाने वग़ैरह का ज़िक्र है।

इस से साफ़ ज़ाहिर है कि गो मसीह मोअल्लिम हो कर दुनिया में आया तो भी खुद मसीह और उस के शागिर्द उस की मौत पर ख़ास ज़ोर देते थे। चुनान्चे मर्कुस 10:45 में लिखा है कि “बनी-आदम इसलिए नहीं आया कि ख़िदमत ले बल्कि ख़िदमत करे और अपनी जान बहुतों के लिए फ़िद्ये में दे।”

सिलसिला मज़ामीन

- (1) तैयारी 1:1 से 13 तक
- (2) मशरिक्की गलील में मसीह के काम (1:14 से 7:23 तक)
- (3) शुमाली गलील में मसीह के काम (7:24 से 9:2 तक)
- (4) यहूदिया में मसीह का काम (10:1 से 31)

(5) आखिरी सफ़र यरूशलेम को और दुख सहना (10:32 से 15:47 तक)

(6) दफ़न, क्रियामत और सऊद (16 बाब)

अगरचे मसीह काम में ऐसा मसरूफ़ रहता था कि अक्सर खाना खाने की भी फ़ुर्सत ना होती थी। (3:20) फिर भी ख़ुदा के साथ तन्हाई में वक़्त काटने का मौक़ा निकालता था। चुनान्चे ज़ेल के मुक़ामात से ज़ाहिर है। (1) मर्कुस 1:35 (2) 1:45 (3) 3:7 से 13 (4) 6:6 (5) 6:30 से 32 (6) 7:24 (7) 8:27 (8) 9:2 (9) 11:1, 19

ज़ेल की बातें इस ही इन्जील में पाई जाती हैं :-

1:13 दरिंदों के साथ।

4:26 से 29, बीज का आप ही उगना।

7:31 ता 37, गूँगे और तुतले को शिफ़ा देना।

10:32 येसू आगे बढ़ता जाता था।

14:51 ता 52 नौजवान कत्तानी चादर में।

16:17, 18, 20 रसूलों की मुनादी पर मोअजिज़ों का वकूअ में आना।

लूका की इन्जील

मुसन्निफ़

इस इन्जील के शुरू में एक मुख़्तसर दीबाचा है। जो और किसी इन्जील में पाया नहीं जाता। इस दीबाचे से इस किताब का ताल्लुक़ आमाल की किताब से ज़ाहिर होता है। मुसन्निफ़ किसी नौजवान मसीही थियुफ़िलुस नामी से मुख़ातिब है। और आमाल की किताब भी इस शख़्स के लिए लिखी गई। तर्ज़-ए-कलाम इस बात की ताईद (हिमायत करना) करता है कि इन दोनों किताबों का मुसन्निफ़ एक ही है। क़दीम कलीसिया में ये अम्र तस्लीम किया गया कि मुसन्निफ़ का नाम लूका था। इस शख़्स का ज़िक़ ज़ेल की आयात

में पाया जाता है। कुलुस्सियों 4:11, 14 लूका प्यारा तबीब 2 तिमुथियुस 4:11 लूका अकेला मेरे साथ है। फिलिप्पियों 4 पौलुस का हम खिदमत।

नए अहदनामे के इन मुक़ामों से ये ज़ाहिर है कि वो पौलुस का रफ़ीक़ (साथी) था। हर दिल अज़ीज़ तबीब और वफ़ादार दोस्त था। चुनान्चे ना सिर्फ़ पौलुस की खिदमत बशारती दौर के वक़्त की बल्कि जब पौलुस कैद हो कर केसरिया से रोम को गया उस वक़्त भी वो साथ रहा। क्योंकि आमाल की किताब के बाअज़ हिस्सों में मुसन्निफ़ सिगा जमा मुतकल्लिम यानी हम इस्तिमाल करता है। (आमाल 16:10 से 17, 20:5 से 15, 21:1 से 18, 27:1 से 28:16) इलावा इस के रिवायत में यूं मज़कूर है। कि अन्ताकिया वाक़ेअ सूरिया में वो पैदा हुआ और शायद यूनान में मर गया। या बक्रौल गिरीगौरी नाज़ी अज़न वो शहीद हो गया। अगर वो थियुफिलुस जिसके वास्ते ये दोनों किताबें लिखी गईं। अन्ताकिया का वो दौलतमंद शख्स था। जिसका क्लीमेंट ने अपने ख़तों में ज़िक्र किया है कि उसने पतरस की मुनादी से अपना घर दे डाला। तो लूका शायद उस का आज़ाद किया हुआ गुलाम हो गया। और नाम में इस किस्म का इख़्तिसार (मुख़सर होना) गुलामों के नाम में आम था। इस की निस्बत दो और गुमान भी हुए हैं। पहले ये कि वो उन सतरों में से था जिनका ज़िक्र इस इन्जील के दसवें बाब में आया है। लेकिन इस का कोई सबूत नहीं। बल्कि बरअक्स इस के दीबाचे ही से ज़ाहिर है कि वो (लूका) गवाह होने का दावा नहीं करता। दूसरा गुमान ये है कि वो यहूदी ना था। क्योंकि कुलुस्सियों 4:11 ता 14 में पौलुस इस का ज़िक्र करता है, कि उस से मख़ून (जिसका खतना हुआ) हो मालूम नहीं होता। ये नतीजा दुरुस्त मालूम होता है। शायद वो फाटक का मुरीद था। तरतलियान कहता है कि वो पौलुस के ज़रिये मसीही हो गया। और कि पौलुस की हिदायत से लूका ने इन्जील लिखी।

सनद : क्लीमेंट रोमी और पोलीकार्प ऐसे अल्फ़ाज़ इस्तिमाल करते हैं जिनसे मालूम होता है कि वो लूका की इन्जील से वाक़िफ़ थे। बेसीलीडैस (basilides) ने 120 ई० में इस इन्जील को इस्तिमाल किया। हीराक्लियों (heracleon) ने इस की तफ़सीर की। मारशियां (marcion) ने 140 ई० में इस इन्जील को कुछ बदल कर अपनी इन्जील बनाया। इस से पता लगता है कि वो समझता था कि मसीही किस क़द्र इस इन्जील की क़द्र करते हैं।

जस्टिन शहीद को ये इन्जील मालूम थी। 145 ई० गो वो इन्जील के मुसन्निफ़ों के नाम नहीं बताता। लेकिन लूका की इन्जील की तरफ़ इशारा करता और इस में से अक्सर हवाला देता है। मसलन उसी ने ज़िक्र किया कि फ़रिश्ते ने मर्यम को ख़बर दी। और

कोरियनस के दिनों में इस्म-ए-नवीसी हुई। येसू बंधा हुआ हेरोदेस के पास भेजा गया। और वो बाज़ औक्रात ऐसी इबारत इस्तिमाल करता था जो सिर्फ इसी इन्जील में पाई जाती है।

हेगेसिप्स (hegesppus) में कम अज़ कम दो जुम्ले हैं जो लफ़ज़न लूका 20:21 और 23:24 का इक्तिबास मालूम होते हैं। तरतलियान का ज़िक्र ऊपर हो चुका। ऐसा ही आयरनेवस कहता है, लूका ने जो पौलुस का रफ़ीक़ था इस खुशख़बरी को क़लमबंद किया जो पौलुस सुनाता था। और मोरातोरी नुस्खे में ये इन्जील लूका की कहलाती है। वही लूका तबीब जिसे पौलुस ने अपने शागिर्दों में शामिल किया। पुश्तो, (सुर्यानी तर्जुमा) में जो तक्ररीबन दूसरी सदी का है। ये लूका की तस्नीफ़ मानी गई है और उस वक़्त से बराबर लूका की तस्नीफ़ तस्लीम की गई है।

किन चश्मों (माख़ज़) से ये इन्जील तैयार हुई?

किन चश्मों (माख़ज़) से ये इन्जील तैयार हुई? खुद लूका ने इस इन्जील के दीबाचे में बताया है कि "मैंने ये ही मुनासिब जाना कि सब बातों का सिलसिला शुरू से ठीक-ठीक दर्याफ़्त करूँ।" मत्ती और मर्कुस की इंजीलों का ज़िक्र करते वक़्त दो ख़ास चश्मों का ज़िक्र हुआ। यानी मसीह की सवानिह उम्मी का सादा बयान जैसे मर्कुस की इन्जील में है।

और मसीह के अहवाल का मजमूआ जो उमूमन लोगिया कहलाता है। जिससे पहाड़ी वाअज़ वग़ैरह लिए गए। लूका की इन्जील के 4:21 से 6:19 तक, 8:4 से 9:5 तक, और 18:15 से 22:14 तक मर्कुस के बयान से मुशाबेह है। लेकिन 6:20 से 8:3 तक मत्ती के पहाड़ी वाअज़ वग़ैरह से मुशाबेह है। बाक़ी रहे पहले तीन बाब और 9:21 से 18:14 तक और चंद दीगर हिस्से जिनमें ऐसे वाक़ियात का ज़िक्र है। जो ना मत्ती ना मर्कुस की इंजीलों में पाए जाते हैं। लूका ने किसी दूसरे चश्मे (माख़ज़) से जमा किए। अब ज़रा दर्याफ़्त करें कि वो कोसा चशमा (माख़ज़) होगा? कोई तहक़ीक़ जवाब नहीं दे सकता। सिर्फ़ मज़ामीन में से कुछ नतीजा निकाल सकते हैं। मसलन पहले दो अबवाब में ऐसी बातों का ज़िक्र है जो सिर्फ़ मर्यम ही से मालूम हो सकती थीं। नीज़ चौथे बाब में नासिरत के इबादतखाने का माजरा मज़कूर है। और आठवीं बाब की पहली तीन आयतों में और 23:28 वग़ैरह में जिन बातों का ज़िक्र है। उनको लूका ने या खुद मर्यम से या दूसरी औरतों से दर्याफ़्त किया होगा। ये भी क़ाबिले लिहाज़ है कि मज़कूर बाला आयात का तर्ज़-ए-कलाम आमाल की किताब के पहले बारह अबवाब से बहुत मुशाबेह है। और उन बारह अबवाब में ऐसे माजरो का ज़िक्र है जो मर्यम वालिदा मर्कुस की हवेली से

मुताल्लिक थे, क्योंकि वहां शागिर्द जमा हुआ करते थे। (आमाल 1:13, 13:14, 12:1, 4:23, 12:12)

तक्सीम मज़ामीन

- (अ) दीबाचा 1:1 से 4
- (ब) मसीह की पैदाइश व लड़कपन 1:5 से 2:52
- (1) जिब्राईल के ज़रिये बशारत पैदाइश। (यूहन्ना 1:5 से 25)
- (2) जिब्राईल के ज़रिये बशारत पैदाइश मसीह। (1:26 से 38)
- (3) मर्यम का इलेशबा के पास जाना। (1:39 से 56)
- (4) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की पैदाइश और नाम रखना। 1:57 से 80
- (5) मसीह की पैदाइश बैत-उल-लहम के शहर में। 2:1 से 20
- (6) मसीह का खतना और उनकी हैकल में दाखिल किया जाना। 2:21 से 38
- (7) नासरत से मसीह का यरूशलेम जाना और हैकल में बुजुर्गों से गुफ्तगु। 2:39 से 52
- (ज) यूहन्ना का काम और मसीह का बपतिस्मा और नसब नामा। 3:1 से 38
- (द) मसीह की आजमाईश। 4:1 से 13
- (ह) गलील में मसीह का बशारती दौरा। 4:14 से 44
- (1) नासरत के इबादतखाना में मसीह का रद्द किया जाना। 4:16 से 30
- (2) कफ़रनहोम में जा कर रहना और मोअजिज़े करना 4 31 से 44

(ओ-) फ़रीसियों के साथ गुनाह की माफ़ी और रोज़ा और सबत के बारे में मुबाहिसा। 5:1 से 6:11

(ज़) बारह रसूलों का इतिहास और पहाड़ की मुक्ति परवाज़। 12 से 39

(ह) मोअजिज़े, यूहन्ना बप्तिस्ता के बारे में बयान। दो कर्जदारों की तम्सील। 7 बाब

(त) बीज की तम्सील, झील के पार, दीवाने शख्स को शिफ़ा देना और दो और मोअजिज़े। 8 बाब

(य) बारह शागिर्दों की रिसालत, भीड़ को खिलाना, सूरत की तब्दीली, मिर्गी के बीमार को अच्छा करना। 9:1 से 50

(काफ़) सतरों की रिसालत। 9:51 से 10:24

(लाम) सामरी की तम्सील, दुआ की तालीम, फ़रीसियों पर मलामत 10:25 से 11:54

(म) लालच और लापरवाही के खिलाफ़ आगाही। 12 बाब

(नून) यरूशलेम की तरफ़ सफ़र पर चंद तम्सीलों और तालीम का ज़िक्र। मसलन मसरफ़ बेटे की तम्सील 13:1 से 16:31

(स) फ़िरोतनी, शुक्रगुज़ारी, दूसरी आमद, और दुआ की तालीम। 17:1 से 18:14

(ए) यरूशलेम के सफ़र पर बच्चों को बरकत देना। और मसीह का अपनी मौत की ख़बर देना। अंधे और ज़क्काई के बारे में और दस कोड़ों की तम्सील। 18:15 से 19:27

(फ) यरूशलेम में दाखिल होना। सरदारों से मुबाहिसा। दूसरी आमद की पेशीनगोई। 19:28 से 21:38

(स) मसीह का गिरफ़्तार होना और मारा जाना। 22 और 23 बाब

(क) मसीह की क्रियामत और सऊद। 24

तस्नीफ़ का वक़्त

इस में इख़्तिलाफ़ राय यहां तक है, कि बाअज़ कहते हैं 80 ई° या 90 ई° में ये लिखी गई। इस राय की ताईद में ये दलील पेश करते हैं, कि ख़ुद लूका इकरार करता है कि मुझसे पेशतर बाअज़ों ने इन्जील लिखने की कोशिश की। 1:1 और ऐसी कोशिशों के लिए कुछ अर्सा दरकार है। लेकिन 70 ई° से पेशतर बहुत कुछ लिखा जा सकता था। चुनान्चे मर्कुस की इन्जील और पौलुस के ख़ुतूत इस के शाहिद (गवाह) हैं। दूसरा सबब ये पेश करते हैं। कि लूका ने मसीह की दूसरी आमद और यरूशलेम की बर्बादी में ऐसा इम्तियाज़ (फ़र्क़) किया है। और इस बर्बादी का ऐसा मुफ़स्सिल (तफ़सील) के साथ ज़िक्र किया है, कि गुमान गुज़रता है कि ऐसे वाक़िये के बाद उसने ये बयान लिखा होगा। लेकिन कुछ ताज्जुब (हैरानी) नहीं कि मसीह ने दोनों वाक़ियात की पेश ख़बरी की। इस वास्ते लूका इस तफ़सील के साथ लिख सकता था। पस ये आम राय माकूल मालूम होती है। कि वो 62 ई° के करीब लिखी गई। इस राय की ताईद इस से भी होती है, कि ग़ालिबन आमाल की किताब 66 ई° के करीब लिखी गई। और सब मानते हैं कि लूका ने अपनी इन्जील आमाल की किताब से पेशतर लिखी थी।

कहाँ लिखी गई? अगर मज़कूर बाला तारीख़ दुरुस्त हो तो करीन-ए-क्रियास (जिसे अक़ल तस्लीम करे) है कि रोम में पौलुस के पहले कैद होने के वक़्त लिखी गई। लेकिन इस का कुछ सरीह (वाज़ेह) ज़िक्र नहीं।

किन के लिए लिखी गई?

अगरचे दीबाचे में थियुफ़िलुस का नाम आया है लेकिन वो महज़ उसी के लिए ना लिखी गई होगी बल्कि आम मसीहियों के फ़ायदे के लिए। ना ख़ास यहूदियों के लिए। ना ख़ास ग़ैर क्रौमों के लिए।

बाअज़ उमूर से ज़ाहिर है कि यहूदियों को मद्दे-नज़र रखा। मसलन अगरचे दीबाचे की यूनानी उस ज़माने की फ़सीह यूनानी का नमूना है। ताहम जब लूका तारीख़ शुरू करता है तो ऐसी यूनानी इस्तिमाल करता है जिसमें उस वक़्त के यहूदी सतरों के तर्जुमे के ज़रिये मानूस (जानना) थे। और पहले दो अबवाब में मसीह की आमद पर ज़ोर देता है। जिसकी इतिज़ारी यहूदी क्रौम को थी। शुक्रगुज़ारी के गीत जो इन दो अबवाब में पाए

जाते हैं। वो इस बुनियाद पर हैं कि खुदा ने अपनी क्रौम पर तवज्जोह की। 1:46, 68 वगैरह 2:11, 29 से 32 इन्जील के बाक्री हिस्से में इन आयात को देखें। 3:8-13:16-18:38-19:9, 28-24:21, 27, 44

बरअक्स इस के गैर क्रौमों का लिहाज़ भी लूका ने किया है। मसलन नसब-नामा ना इब्राहिम तक बल्कि आदम तक का देता है। और शमऊन के गीत में मसीह गैर-क्रौमों का नूर कहलाता है। 2:32 नासरत के इबादतखाने में उसने पुराने अहदनामे से गैर क्रौमों को खुदा की तरफ़ से बरकत मिलने की दो मिसालें दीं। 4:25 से 27 तक और 13:28, 29 में वो कहता है बहुत यहूदी खुदा की बादशाही से महरूम रहेंगे। लेकिन गैर क्रौम पूरब और पक्षिम से आकर हिस्सा लेंगी। दो दफ़ाअ नेक मिज़ाज सामरियों का ज़िक्र किया। 10:30 से 33, 17:11 से 19, और आखिरकार पहले से खबर दी कि ये इन्जील सारी क्रौमों में फैल जाएगी। 24:47

लूका ने ये ज़ाहिर किया कि मसीह गरीबों, कमज़ोरों, और गुनेहगारों का कैसा लिहाज़ करता था। 2:24 6:20 4:18 से 25, 30, 7:37 8:1 से 3, 10:36, 39, 12:16 से 21, 33, 15 बाब, 16:20 वगैरह 14:12 से 15-18:13-1-9:1-26:27-40

फिर इस इन्जील में लूका ने खासकर मसीह की दुआओं और दुआ के बारे में उस की तालीम को बताया है। 3:21, 11:1 ता 4-5, 16, 6:12-9:18-29 वगैरह 18:1, 10-21:36-22:44

इस इन्जील में माफ़ी और रहम का खास ज़िक्र है। मसलन 4:18 5:8, 10-7:47 से 50, 15:11 वगैरह 23:43-24:47

इन्जील का खातिमा ये है कि मसीह अपने हाथों बरकत देता हुआ आस्मान पर चला जाता है।

जो वाक़ियात मोअजिज़े और तम्सीलें वगैरह इस ही की इन्जील में पाए जाते हैं

पहले दो बाब मसीह की पैदाइश के बारे में यूहन्ना बप्तिस्ता की मुफ़स्सिल तालीम 13:10 से 14, नासरत के इबादतखाने में तालीम 4:16 से 30, मछलियों का मोअजिज़ा, लूका 5:4 से 10, नाइन में बेवा के बेटे को जिलाना, 7:11 से 16, औरत जो कमज़ोरी की रूह रखती है। 13:11 से 17, जलिन्द्र 14:1 से 6, दस कौड़ी 17:11 से 19,

मल्कथस को चंगा करना। 22:51, दो कर्जदारों की तम्सील 7:41 से 43, नेक सामरी 10:25 से 37, ज़िद्दी दोस्त 11:5 से 8, नादान दौलतमंद 12:16 से 21 बे-फल इंजीर का दरख्त 23:6 से 9, ज़ियाफ़त की तम्सीलें 4:1-7, 24 गुमशुदा दिरहम 15:8 मसरफ़ बेटा 15:11 से 32 बददियानत मुंतज़िम 16:1 से 13, दौलतमंद और लाज़र 16:19 से 31 बेसूद नौकर 17:7 से 10, बे-इन्साफ़ क़ाज़ी 18:1 से 8, फ़रीसी और महसूल लेने वाला 18:10 से 14, दस अशर्फ़ियां 19:13 से 27

यूहन्ना की इन्जील

मुसन्निफ़

ये इन्जील यूहन्ना से मन्सूब है। इस यूहन्ना की ज़िंदगी के दो हिस्से हैं :-

अव्वल वो हिस्सा जो नए अहदनामे से मालूम होता है।

दोम वो जो रिवायतों से मालूम होता है। उनसे इस की मुकम्मल सवानिह उम्मी नहीं मिल सकती।

लेकिन इस का आम अहवाल और सीरत इस से दर्याफ़्त (मालूम) हो सकती है।

अव्वल : इस के बाप का नाम ज़बदी और माँ का नाम सलोमी था। और अपने भाई याकूब के हमराह मछली पकड़ने में अपने बाप की मदद करता था। ये ख़ानदान बैतसदा में गलील की झील के किनारे रहता था। और कुछ आसूदा हाल (खुशहाल) मालूम होता है। क्योंकि इनके पास नौकर थे। (मर्कुस 1:20) और इस की माँ अपने माल से मसीह की ख़िदमत करती थी। (मर्कुस 15:41-40) और ऐसी हैसियत रखता था, कि सरदार काहिन का दोस्त बन सके। (यूहन्ना 18:15) जब मसीह ने बारह रसूलों को मुकर्रर किया। तो इस को और इस के भाई को बिवांरजीस यानी गरज के बेटे का लक़ब दिया। (मर्कुस 3:17) ये इस सबब से हुआ होगा कि इस में और इस के भाई में तेज़ मिज़ाजी पाई जाती थी। (लूका 9:49 ता 54) (मर्कुस 10:35) अक्सर अहले गलील की तरह ग़ालिबन ये बहुत तालीम-याफ़ता ना थे। (आमाल 4:13) लेकिन क़ौमी बातों में बड़े सरगर्म और मौऊद यहूदी बादशाह का शौक़ से इंतज़ार खींच रहे थे। शायद इनके दिल में और शमऊन ज़ीलौती (यानी ग़ैरत वाला) के दिल में शुरू में ये ख़याल था कि ये येसू नासरी मुल्की बादशाह होगा। चुनान्वे एक मौक़े पर ये ही गलीली लोग इस को ज़बरदस्ती

बादशाह बनाना चाहते थे। (यूहन्ना 6:14 ता 15) बावजूद इस सरगर्मी और तेज़ मिज़ाजी के इस में हलावत (मिठास) नर्मी भी पाई जाती थी। जिसके बाइस मसीह और बाक़ी लोग इस को प्यार करते थे। इन दो सिफ़ात के ख़तलात (मिलाप) से एक दिलकश सीरत पैदा हुई। गलील में तर्बियत पाने से दो और खूबियां इस में ज़ाहिर हुईं कि वो पक्का यहूदी और हुब्बुल-वतन (वतन से मुहब्बत करने वाला) था। और साथ ही यूनानी ज़बान और खयालात से वाकिफ़ था। इस वसीअ ख़याली के बाइस इस के तर्ज़-ए-कलाम से मालूम होता है कि काहिनों की तंग-खयाली से इस को नफ़रत हो गई थी। हक़ जोई की इस तर्बियत से वो यूहन्ना बप्तिस्ता की पैरवी को तैयार था। (यूहन्ना 1:37 से 40) और उस की हिदायत से मसीह का शागिर्द बन गया।

मालूम होता है कि येसू के साथ कुछ अर्सा रहने के बाद उसने अपना पुराना पेशा फिर इख़्तियार किया। और वहां से फिर बुलाया गया। (मत्ती 4:18), (लूका 5:1 से 11), (मर्कुस 1:19 ता 20) ताकि रसूल और आदमियों का मछुवा हो। ये तीन ख़ास शागिर्दों में से एक था जिनका बहुत करीब ताल्लुक़ मसीह से रहा। मसलन मर्कुस 5:37-9:2-14:33-13:3 शायद वो बैतअन्याह के ख़ानदान से भी ज़्यादा वाकिफ़ था क्योंकि उसने इस ख़ानदान का हाल तीनों अनाजील से ज़्यादा बयान किया है। (यूहन्ना 11 और 12 बाब) हमारे खुदावंद ने अपनी माँ को इस के सपुर्द किया। (19:26 ता 27) मसीह जी उठने के बाद झील तिबरियास पर यूहन्ना से मिला। जब वो दूसरे शागिर्दों के साथ मछली पकड़ रहा था। (21:2) और पतरस ने खुदावंद से इसी शागिर्द के बारे में ये सवाल किया था कि इस शख़्स के साथ क्या होगा। (21:21 ता 22)

आमाल की किताब में वो पतरस की रिफ़ाक़त में नज़र आता है। (आमाल 3:1 वग़ैरह 4:13 वग़ैरह 8:14 से 25) इस के बाद नए अहदनामे में इस का कोई साफ़ ज़िक्र नहीं आता। लेकिन तारीख़ से मालूम होता है कि उसने अपनी ज़िंदगी का पिछला हिस्सा इफ़िसुस में गुज़ारा। लेकिन ये ग़ालिबन पौलुस की वफ़ात के बाद हुआ होगा। क्योंकि पौलुस के जीते-जी कोई और रसूल इफ़िसुस की कलीसिया से मुताल्लिक़ ना था। किसी ईज़ा रसानी के वक़्त जिला-वतन हो कर पतरस को गया। (मुकाशफ़ा 1:9) लेकिन इस का मुफ़स्सिल ज़िक्र मुकाशफ़े की किताब के दीबाचे के वक़्त होगा। रिवायत है कि इस की उम्र के ऐन आख़िर में जब वो ऐसा कमज़ोर था कि उठा कर उसे गिरजा में ले जाते थे तो वो वाअज़ की जगह सिर्फ़ ये ही कहा करता था, कि “ऐ छोटे बच्चो एक दूसरे से प्यार करो।” सामईन (सुनने वालों) ने थक कर उसे कहा कि ऐ उस्ताद तू हमेशा हमें ये

ही क्यों कहा करता है। (यूहन्ना 13:24, 15:12) बहुत बूढ़ा हो कर तबई मौत से मर गया।

अब ये दर्याफ्त करें कि आया ये ही शख्स इस इन्जील का मुसन्निफ़ था। इस इन्जील में इस यूहन्ना का नाम नहीं आया। लेकिन कई मुक़ामात में इस के बारे में ये जुम्ला आया है, “वो शख्स जिसे येसू अज़ीज़ रखता था।” (यूहन्ना 13:23, 19:26, 20:2, 21:7, 20:24) और बाअज़ दीगर मुक़ामात से साफ़ मालूम होता है कि मुसन्निफ़ क़सदन (इरादे से) अपना नाम नहीं देता। (यूहन्ना 11:40, 18:15, 19:35, 21:20, 24) ये आख़िरी आयत इक्कीसवीं बाब में जो ग़ालिबन बतौर ततिम्मा (किसी चीज़ का आख़िरी हिस्सा) के यूहन्ना के किसी शाग़िर्द ने लिखा ये साबित करती है कि इस वक़्त भी ये बात मशहूर थी कि यूहन्ना इस इन्जील का मुसन्निफ़ है। हर शख्स मानेगा कि अगर इस इन्जील का मुसन्निफ़ फ़िल-हक़ीक़त येसू मसीह का ख़ास अज़ीज़ शाग़िर्द यूहन्ना था तो उस की गवाही निहायत क़ाबिल-ए-एतिबार है।

इस अम्र की ताईद में बैरूनी और अंदरूनी शहादतें मुत्तफ़िक़ हैं

(1) बैरूनी शहादत : क़दीम कलीसिया की शहादत (गवाही) सरासर इस मुसन्निफ़ की ताईद करती है। अलबत्ता मशहूर बिद्अती मारशियां ने और चंद अशख़ास ने जो आलूगोई कहलाते थे। इस इन्जील को नहीं माना। लेकिन इस अम्र में उनकी राय कुछ वक़अत (एहमीय्यत) नहीं रखती। क्योंकि इस इन्जील की तालीम उनकी तालीम से ना मिलती थी। इसी लिए दानिस्ता (जान-बूझ कर) उन्होंने इस इन्जील को रद्द किया। चुनान्चे आलूगोई इसी लिए कहलाते हैं। कि वो लागास की तालीम के मुन्किर (इन्कार करने वाले) थे।

आर्येनियुस जो क़रीबन 130 ई० में पैदा हुआ और 185 ई० तक बहुत किताबें लिखता रहा। इस इन्जील को यूहन्ना से मन्सूब करता था। और उस को इस के बारे में ज़रा सा भी शक नहीं था। आर्येनियुस की शहादत तहरीरी इन्जील के बारे में इसलिए ज़्यादा पुर ज़ोर है क्योंकि वो यूहन्ना के शाग़िर्द पोलीकार्प का शाग़िर्द था। चुनान्चे वो कहता है कि जो कुछ पोलीकार्प ने ज़बानी मुझसे बयान किया। वो हर तरह से इस इन्जील के बयान से मुत्तफ़िक़ है। ये पोलीकार्प 70 ई० में पैदा हुआ। और 156 ई० के क़रीब शहीद हुआ। पस वो कम अज़ कम यूहन्ना की वफ़ात के वक़्त पच्चीस साल की उम्र का था। और पोलीकार्प की वफ़ात के वक़्त आर्येनियुस पच्चीस साल का था।

आर्येनियुस से ज़रा पहले अन्ताकिया के थियुफिलुस ने लिखा कि यूहन्ना मुलहम (इल्हाम रखने वाले) ने कहा कि “इब्तिदा में कलाम था” यानी इस इन्जील की पहली आयत का इक्तिबास करता है।

मोरातोरी नुस्खे में जो आर्येनियुस के ज़माने का है मज़कूर है, कि चौथी इन्जील शागिर्द यूहन्ना ने लिखी।

टेश्यां जिसने चारों अनाजील का सिलसिला लिखा इस चौथी इन्जील का बयान इसी सिलसिले में मुन्दरज करता है।

जास्टिन शहीद (149 ई० के करीब) ने यूहन्ना का नाम तो नहीं लिया लेकिन इस इन्जील के पहले और तीसरे बाब से इक्तिबास करता है।

बसीऐडें (125 ई० के करीब) असकंदरी लिखता है कि ये बात है जो अनाजील में मज़कूर है “हक्रीक्री नूर वो था जो हर एक इन्सान को जो दुनिया में आता रोशन कर देता है।” (1:7)

पेपियास कहता है कि यूहन्ना की इन्जील यूहन्ना के हाथ से कलीसिया को मिली। इस से साबित है कि इन्जील दूसरी सदी के शुरू में मौजूद थी। और सिवाए यूहन्ना के किसी और से मन्सूब नहीं होती।

अंदरूनी शहादत : इन्जील से ये दो बातें साबित हो सकती हैं कि :-

(1) मुसन्निफ़ यहूदी था। क्योंकि (1) इब्रानी मुहावरे से अपनी यूनानी अक्सर इस्तिमाल करता है।

(2) इब्रानी अल्फ़ाज़ के माअनों से अच्छी तरह वाक्लिफ़ है। मसलन 5:2 19:13

(3) इब्रानी दस्तुरात से वाक्लिफ़ है। मसलन यूहन्ना 2:13 ता 14, 4:9-6:4, 7:37, 13:1, 19:14-21

(4) इस की इब्रानी इब्रानी खयालात से पुर है। यूहन्ना 1:29, 38, 41, 46, 7:52, 3:22, 5:36 अब्रहाम का दिन देखा 8:56 पीतल का साँप 3:14 फ़सह का बर्षा 19:36 नविश्ता बातिल नहीं हो सकता? 10:34 ता 35, 19:28 मज़कूर बाला आयात से बखूबी

ज़ाहिर है कि मुसन्निफ़ यहूदियों की ईदों रीत रसूम और दस्तुरात व मुहावरात से अच्छी तरह वाक्फ़ि था।

(2) ना सिर्फ़ यहूदी बल्कि ऐसा यहूदी जो फ़िलिस्तीन का बाशिंदा था क्योंकि असनाए बयान में मुक्कामात का ऐसी सेहत से बयान किया है, कि अगर वो वहां का बाशिंदा ना होता तो ऐसा बयान ना कर सकता। आजकल फ़िलिस्तीन के जुगराफ़िया के बारे में जो तहक़ीकात हो रही है इस से यूहन्ना के बयान की पूरी तस्दीक़ होती है (यूहन्ना 1:28) बैतअनिया जो यर्दन के परे है। (यूहन्ना 3:23) एनून शालीम के नज़दीक़ है। (यूहन्ना 4:4 ता 6) याकूब का कुँआं जो सामरिया के शहर अस्कर के नज़दीक़ था। (यूहन्ना 4:46 ता 51) काना और कफ़र्नहूम के दर्मियान फ़ासिला। (यूहन्ना 5:2) बैत हसदा। (यूहन्ना 6:1) गलील का दरिया जो दरिया-ए-तिबरियास भी कहलाता है। (यूहन्ना 11:18) बैतअनिया यरूशलेम के नज़दीक़ तख़मीनन दो मील के फ़ासिले पर। (यूहन्ना 18:1) कदरोन के परे बागीचा। (यूहन्ना 19:13) चबूतरा (यूहन्ना 9:7) सलवाम (शीलोख) का हौज़ जिसका तर्जुमा भेजा हुआ है।

अब यहां तक साबित हो गया कि मुसन्निफ़ फ़िलिस्तीन का यहूदी था। और इस से भी इस की ताईद होती है कि जब पुराने अहदनामे से कुछ इक्तिबास करता है तो वो इब्रानी किताब से तर्जुमा करता है। ना कि सतरों के यूनानी तर्जुमे से लेता है। देखो 6:45 13:18, 19:37

(3) मुसन्निफ़ मौक़े का गवाह था। (अ) वो ऐसा दाअवा करता है। 1:14 19:35, 21:14 (ब) इस दाअवे की ताईद इस से होती है कि बारहा इत्तिफ़ाक़ी तौर से बहुत तफ़्सील और बारीक़ बातों का ज़िक़र करता है। (यूहन्ना 1:47, 2:6, 4:2 ता 6, 4:27, 11:33 ता 3:5 ता 13:4, 25)

(4) ये मौक़े का गवाह ग़ालिबन खुद यूहन्ना होगा। मसलन यूहन्ना 21:2 में सात शागिर्दों का ज़िक़र है जिनमें ज़बदी के बेटे थे। और जिस वाक़िये का बयान वहां है वो ज़रूर मौक़े के गवाह की क़लम से निकला। 21:24 में यूहन्ना की तरफ़ साफ़ इशारा है। और सारी किताब में इस का नाम कभी नहीं दिया गया। बल्कि वो ऐसा शागिर्द कहलाता है जिसे येसू प्यार करता था। 1:48, 13:23, 19:35, 20:2, 21:7, 20:24 अल-ग़र्ज़ मज़कूर बाला और दीगर आयात से साफ़ ज़ाहिर है कि मुसन्निफ़ ज़रूर मौक़े का गवाह था। बारह रसूलों में से तीन ख़ास शागिर्दों में से। (तीन ख़ास शागिर्द पतरस, याकूब और

यूहन्ना थे) अब गौर कीजीए कि इस इन्जील का मुसन्निफ़ पतरस नहीं हो सकता। क्योंकि इस इन्जील का तर्ज़-ए-कलाम पतरस के खुतूत से मुतफ़र्रिक (अलग) है। और खुद पतरस का ऐसा बयान है जो पतरस के क़लम से ना निकला होगा। इलावा अर्ज़ी पतरस ग़ालिबन इस इन्जील के लिखे जाने से बहुत साल पहले शहीद हुआ। इसी सबब से याकूब भी नहीं हो सकता। क्योंकि वो पतरस से भी कई साल पहले शहीद हुआ (आमाल 12:2)

शायद ये अंदरूनी शहादत अकेली क़तई शहादत का ज़ोर नहीं रखती। लेकिन मज़बूत बैरूनी शहादत (बाहर की गवाही) के साथ मिलकर पुख़्ता दलील बन जाती है।

चंद एतराज़ात

आख़िर में चंद एतराज़ात का ज़िक्र करना भी मुनासिब है, जो इस इन्जील के मुसन्निफ़ के बारे में किए गए हैं। यानी (1) इस इन्जील में बाअज़ ऐसे मुक़ामात और अश्खास का ज़िक्र आया है, जिनकी तरफ़ पहली तीन अनाजील में इशारा तक नहीं। मसलन लाज़र का मुर्दों में से जिलाना जो यूहन्ना 11 बाब में मज़कूर है। क्यों इस का ज़िक्र बाक़ी अनाजील में नहीं? बादियुन्नज़र (पहली नज़र) में ये अजीब मालूम होता है। मगर याद रहे कि पहली तीन अनाजील में मुर्दों में से जिलाने का कई बार ज़िक्र आया है। (मती 9:25, 10:8, लूका 7:15)

इलावा अर्ज़ी चूँकि यूहन्ना ने अपनी इन्जील दीगर अनाजील से बहुत देर बाद लिखी। और उनसे वो वाक़िफ़ था। क़सदन ऐसे वाक़ियात का ज़िक्र है जो उनमें पाए नहीं जाते। उसने खुद ये बताया कि येसू ने इलावा इनके और बहुत काम किए। और ये भी ज़ाहिर है कि उसने ख़ासकर उन कामों का ज़िक्र किया जो यहूदिया के मुल्क में हुए। हालाँकि दूसरे इन्जील नवीसों ने खुसूसुन गलील के कामों का बयान किया।

इस इन्जील के 20:31 में यूहन्ना ने अपना मक़सद पेश किया, “ये इसलिए लिखे गए कि तुम ईमान लाओ कि येसू मसीह है, इब्ने-अल्लाह। और ईमान ला कर उस के नाम से ज़िंदगी पाओ।” और इसलिए यूहन्ना ऐसे वाक़ियात और मोअजज़ात चुनता है। जिनसे वो येसू मौऊद मसीह साबित हो। और जिनसे ईमानदारों को तर्गीब मिले, कि रुहानी ज़िंदगी के लिए उस को पकड़े रहें। चुनान्चे अगर इस इन्जील के सिलसिले पर गौर किया जाये तो हम ये मालूम करेंगे। कि उस ने यूहन्ना बट्रिस्ट आख़िरी नबी से शुरू किया। जिसकी शहादत (गवाही) से चंद शख्सों के दिलों में खयाल पैदा हुआ कि शायद ये येसू नासरी ही मसीह मौऊद है। (यूहन्ना 1:29 से 51) बाक़ी इन्जील में दिखाया गया

कि किस तरह बतद्रीज उनके और बाक्री शागिर्दों के दिलों में ये खयाल बढ़ते-बढ़ते कामिल यक्रीन तक पहुंच गया। इस तरक्की के दर्जों का हम सुराग लगा सकते हैं। मसलन एक खास मोअजिज़े के बाद जो तासीर उस के दिल पर हुई उस को इन अल्फ़ाज़ में ज़ाहिर करता है, “ये पहला मोअजिज़ा येसू ने दिखा कर अपना जलाल ज़ाहिर किया। और उस के शागिर्द उस पर ईमान लाए।” (2:11) लेकिन ये ईमान अभी कमज़ोर था। क्योंकि छटे बाब में लिखा है कि एक खास मोअजिज़े और तकरीर के बाद बाअज़ शागिर्दों ने उस की आला तालीम पर ठोकर खाई, कि “ये कलाम सख्त है इसे कौन सुन सकता है। और बहुतेरे फिर गए। और इस के बाद मसीह के साथ ना रहे फिर येसू ने उन बारह से कहा। क्या तुम भी चले जाना चाहते हो। शमऊन पतरस ने उसे जवाब दिया ऐ खुदावंद हम किस के पास जाएं। हमेशा की ज़िंदगी की बातें तो तेरे ही पास हैं। और हम ईमान लाए। और जान गए हैं कि खुदा का कुदूस तू ही है।” (6:60 से 71) इस तरह यूहन्ना के चौधवें बाब में जब मसीह ने फ़रमाया कि “जहां मैं जाता हूँ तुम जानते हो और रास्ते को भी जानते हो तो तोमा ने कहा ऐ खुदावंद हम नहीं जानते हैं, कि तू कहाँ जाता है, फिर राह किस तरह जानें। येसू ने उस से कहा कि राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आता। जिसने मुझे देखा है उसने बाप को देखा है।” (14:4 से 7)

फिर 20:14 से 29 में यूहन्ना ने बयान किया कि किस तरह से ये ही तोमा इस शक से गुज़रकर इस पुख्ता यक्रीन तक पहुंचा, कि वो मसीह को ज़िंदा देखकर उस से यूं मुखातिब हुआ कि “ऐ मेरे उस्ताद और ऐ मेरे खुदा।” लेकिन यहां अजीब तौर पर पतरस रसूल का ये मशहूर क़ौल सादिक़ आता है, कि “जो पत्थर ईमानदारों के लिए ठोकर खाने की चट्टान हुआ।” (2 पतरस 2:7) चुनान्चे जिस तालीम और जिन कामों से शागिर्दों का ईमान यक्रीन के दर्जे तक पहुंचा। उन ही ज़रिये बाअज़ दूसरों की मुखालिफ़त दुश्मनी के दर्जे तक पहुंची। मसलन 2:23 से 25 में लिखा है कि मसीह के पहले मोअजिज़ों को देखकर बहुत लोग ताज्जुब के मारे ईमान लाने लगे। लेकिन मसीह ने इस की चंदाँ (ज़रा) परवाह ना की क्योंकि वो उनके दिल की हालत से वाकिफ़ था।

फिर पांचवें बाब में एक अजीब मोअजिज़े के बाद जो सबत के दिन के हुआ। बाअज़ ने खासकर सरदारों ने सबत के तोड़ने के बहाने से उस की सख्त मुखालिफ़त की (5:5, 16 से 18) और सबत के मुताल्लिक़ ये मुखालिफ़त बराबर जारी रही। (7:21 से 24, 9:14, 16) ये अदावत (दुश्मनी) और ज़िद उनके दिलों में ऐसी तरक्की कर गई कि लाज़र को क़ब्र से ज़िंदा निकलते देखकर भी मसीह की जान लेने के दर पै हो गई

(यूहन्ना 11:43 से 53) और रफ़ता-रफ़ता यहां तक नौबत पहुंची कि गैर क्रौम हाकिम के सामने वो ये चिल्लाते रहे कि “इस को नहीं बरब्बा को जो डाकू था।”

पस अगर इस इन्जील में यूहन्ना के खास मक्सद को मद्दे-नज़र रखें तो ताज्जुब ना होगा कि मसीह की तालीम और कामों का ज़िक्र करने में वो बाक़ी तीन अनाजील से कुछ मुतफ़र्रिक़ (अलग) है।

(2) बाअज़ों ने ये एतराज़ किया कि इस इन्जील का मुसन्नफ़ चंद खास तालीमों को पेश करना चाहता था। इस में मसीह को अपने तसव्वुरात का लिबास पहनाया। यहां तक तो दुरुस्त है कि यूहन्ना और हर एक मुसन्नफ़ अपने अपने ख़वास के मुताबिक़ ऐसी तस्वीर खींचता है जो मसीह का मुशाहिदा करने से उस के दिल पर नक्श हो गई थी। लेकिन ये तस्वीर ख़याली नहीं जो किसी ना किसी क़द्र पहली तीन अनाजील में मज़कूर ना हो। इस से वो दूसरा एतराज़ भी रद्द हो जाता है, कि मसीह की तस्वीर जो यूहन्ना की इन्जील में है वो पहली तीनों अनाजील की तस्वीर से मुतफ़र्रिक़ है।

ये एतराज़ भी किसी ने किया है कि इस इन्जील की तक्ररीरों का कई जगह पता नहीं लगता कि कहाँ मसीह के अल्फ़ाज़ खत्म हुए। और कहाँ से यूहन्ना के तशरीही जुम्ले शुरू होते हैं। मसलन 3:13 से 21

मज़कूर बाला मुक़ाम में ये दिक्कत (मुश्किल) ज़रूर पेश आती है लेकिन तालीम में कुछ फ़र्क़ नहीं और सिवाए एक और मुक़ाम के (यानी इस तीसरे बाब के आखिरी हिस्से में यूहन्ना के अल्फ़ाज़ का ख़ातिमा करना मुश्किल है) फ़िल-हक़ीक़त और कहीं ये मुश्किल है नहीं।

(3) बाअज़ कहते हैं कि ये इन्जील खुद यूहन्ना की तस्नीफ़ नहीं बल्कि उस की मौत के बाद उस के शागिर्दों में से किसी ने तस्नीफ़ की। लेकिन बैरूनी और अंदरूनी शहादत (गवाही) जिसका ज़िक्र ऊपर हो चुका है ऐसी राय के खिलाफ़ है। और अगर कोई ये कहे कि कुछ हिस्सा यूहन्ना का और कुछ किसी दूसरे का है तो इक्कीसवें बाब को छोड़कर बाक़ी बीस अबवाब का तर्ज़ तहरीर ज़ाहिर कर देता है कि वो एक ही शख्स की क़लम से निकले।

(4) एक और एतराज़ भी किया जाता था जो आजकल तक्ररीबन जाता रहा है यानी ये कि मुसन्नफ़ का मक्सद ये था कि नास्तिक लोगों की तालीम को रद्द करे। और वो तालीम दूसरी सदी की थी।

और ये एतराज़ दूसरी सूरत में यूँ पेश किया गया कि ये इन्जील चंद नास्तिक बिद्अतियों की तस्वीर है क्योंकि इस में इस की खास चंद इस्लाहें पाई जाती हैं। मसलन मामूरी, लोगास वगैरह। मगर ये इस्तेलाहें इन नास्तिक लोगों से बहुत पहले बल्कि पहली सदी के शुरू में फ़ायलो वगैरह आलिमों ने इस्तिमाल की हैं। लेकिन यूहन्ना ने इन इस्तेलाहों को नास्तिकी माअनों में इस्तिमाल नहीं किया।

तक्सीम मज़ामीन

कई तरह से तक्सीम कर सकते हैं। आम तक्सीम ये है :-

अव्वल : अलिफ़ : 1 से 18 तक

दीबाचा : इस के तीन हिस्से हैं।

(1) 1:1 से 5 तक कलाम की असली ज़ात

(2) 1:6 से 13 तक कलाम का आदमियों पर मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर) होना और आदमियों का उस को करना। अलिफ

(3) 1:14 से 18 तक बाप का मुकाशफ़ा

दोम : 1:19, 16:5 तक कलाम का येसू की ज़िंदगी और कामों के ज़रिये जहान पर मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर) होना।

(अ) 1:19 से 2:12 तक शहादत

(1) 1:19 से 37 तक यूहन्ना बप्टिस्ट की शहादत

(2) 1:38 से 51 तक शागिर्दों की शहादत

(3) 2:1 से 12 तक पहले मोअजिज़े की शहादत

(ब) 2:13, 11:57 तक मसीह के काम

- (1) 2:13 से 3:36 तक यहूदियों के दर्मियान
- (2) 4:1 से 42 तक सामरियों के दर्मियान
- (3) 4:43 से 54 तक गलतियों के दर्मियान
- (4) 5 बाब से 11 बाब के आखिर तक मिली जुली भीड़ के दर्मियान

(ज) 12 बाब के आखिर तक फ़तवा

- (1) 12:1 से 36 आदमियों का
- (2) 12:37 से 43 तक इन्जील नवीस का
- (3) 12:43 से 50 तक मसीह का

यहां मसीह के आम काम का खातिमा है

सोम : 13 बाब से 20 बाब तक मसीह के काम के नताइज

(अ) 13 बाब से 17 बाब तक मसीह का जलाल उस की आखिरी तक्ररीरों में

- (1) 13:1 से 30 तक खाकसारी में उस की मुहब्बत ज़ाहिर होती है।
- (2) 13:31, 5:27 तक अपनों की हिफ़ाज़त में उस की मुहब्बत ज़ाहिर होती है।

(3) 16 बाब तक मसीह का वाअदा रूह-उल-कुद्स के और अपने वापिस आने के बारे में।

(4) 17 बाब तक सिफ़ारिश की दुआ

(ब) 18, 19 बाब दुख सहने में मसीह का जलाल

- (1) से 11 मसीह का पकड़वाया जाना

(2) 18:2 से 19:16 तक यहूदी सदर मज्लिस और रोमी अदालत

(3) 19:17 से 46 तक सलीब और दफ़न

(ज) 20 बाब जी उठना

(1) 20:1 से 10 मर्यम मगदलीनी पर ज़ाहिर होना

(2) 20:9 ता 23 दस शागिर्दों पर

(3) 20:4 ता 29 तोमा पर जब दस शागिर्द हाज़िर थे।

(4) 20:30 ता 31 खातिमा और इन्जील का मक़सद

चहारुम : 21 बाब ततिम्मा

अबवाब तक़सीम कर सकते हैं

(1) 1:1 से 18 तक दीबाचा

(2) 1:19 से 51 तक यूहन्ना बप्टिस्ट की शहादत और मसीह के पहले शागिर्द

(3) 2, 3 बाब पहले मोअजिज़े और निकोदीमस से गुफ़्तगु

(4) 4 बाब सामरिया में तालीम

(5) 5 बाब यरूशलेम में सबत के दिन बैत हसदा के हौज़ पर मोअजिज़ा और इसके बारे में मुबाहिसा

(6) 6 बाब पाँच हज़ार को खिलाना, और ज़िंदगी की रोटी के बारे में तक़रीर

(7) 7, 8 बाब ईद ख़ेमा के वक़्त मुबाहिसे का सरसब्ज़ होना

(8) और 10 बाब अंधे को बीनाई देना और इस की निस्बत मुबाहिसा

(9) 11, 12 बाब लाज़र को जिलाना, और यरूशलेम में दाखिल होना

यहां ईमान और बे एतिक्रादी अपने अपने कमाल तक पहुँचती हैं

(10) 13 से 17 बाब तक आखिरी ज़ियाफ़त, आखिरी तक्दीर, और सिफ़ारिश

(11) 18, 19 बाब पकड़वाया जाना, जवाबदेही, मौत और दफ़न होना

(12) 20 बाब जी उठने के बाद मसीह का ज़ाहिर होना

(13) 21 बाब ततिम्मा, एक और ज़हर

आमाल की किताब

11 रसूलों की आमाल की किताब नए अहदनामे की तवारीख़ी किताबों में से पांचवी किताब और आखिरी किताब है। और इंजीलों को ख़तों से मिलाती है। ये इंजीलों का मुफ़ीद ततिम्मा और ख़तों का मुनासिब दीबाचा है। इसी बाइस से ये किताब उमूमन अनाजील के बाद आती है। गो बाअज़ क़दीम नुस्खों और तजुर्बों में अक्सर पौलुस के ख़तों के बाद पाई जाती है। कैंब्रिज के नुस्खे में इस का ये नाम है “रसूलों के आमाल, सिकंदरी नुस्खे में और दीगर बाअज़ नुस्खों में “मुक़द्दस रसूलों के आमाल”

इस किताब को “रूह-उल-कुद्स के आमाल किताब” कहना भी मुनासिब होता। क्योंकि शुरू से आखिर तक उसी की हिदायत से सब कुछ होता है। **मसलन 2:15, 8, 16, 2:4, 38, 5:4, 33, 6:3, 7:51, 8:9, 9:17, 10:44, 11:15, 12, 16, 13:4, 52, 16:7, 18:25**

मुसन्निफ़ आमाल

(2) **मुसन्निफ़** : लूका की इन्जील के दीबाचे के वक़्त इस का मुफ़स्सिल ज़िक्र हुआ। यहां इतना कहना काफ़ी है कि क़दीम ज़माने से इस का और इन्जील का मुसन्निफ़ लूका माना गया है। क्योंकि ये दोनों किताबें एक ही शख्स यानी थियुफिलुस के लिए लिखी गईं। और आमाल की किताब के शुरू में इन्जील के बारे में कहता है कि मैंने पहला

रिसाला तस्नीफ़ किया। और ज़ेल की आयात से ज़ाहिर है कि मुसन्निफ़ पौलुस का हम-सफ़र था। 16:1 से 17, 20:5 से 15, 21:1 से 18, 27:1 से 28:16

वक्रत तहरीर

चूँकि इस किताब में पौलुस की असीरी (क़ैद) के दूसरे साल के आखिर तक का बयान है। तो ये 62 ई° से पेशतर ना लिखी गई होगी। और चूँकि उस रसूल की वफ़ात का इस में ज़िक्र नहीं इस से गुमान गुज़रता है कि ग़ालिबन ये किताब इस वाक़िये यानी 65 ई° या 67 ई° से पेशतर लिखी गई है।

सनद : इस किताब की सेहत और सनद के बारे में क़दीम मसीही बुजुर्ग बराबर गवाही देते रहते हैं। मसलन आर्येनियुस और तर तलियान औरीजन।

क्लीमेंट : सिकंदरी, जेरोम, मारशियां बिद्अती ने इसे लूका से मन्सूब किया है। खरिस्टम और बाअज़ दीगर बुजुर्गों की तस्नीफ़ात से मालूम होता है। कि ईस्टर और पीन्तिकोस्ट के दर्मियानी अर्से में हर साल ये किताब गिरजाओं में पढ़ी जाती है।

बाअज़ नास्तिक फ़िर्कों ने इस किताब को रद्द किया। वो मानते थे कि आम कलीसिया ने इस किताब को माना। लेकिन चूँकि इस किताब की तालीम उनकी रायों के खिलाफ़ थी इसलिए उन्होंने रद्द किया।

मक्सद

इस किताब के बड़े हिस्से में पतरस और पौलुस और मसीही कलीसिया की तवारीख़ क़लमबंद होती है। हमारे नजातदिहंदा के सऊद से शुरू करके पौलुस के रोम तक पहुंचने तक तक्ररीबन तीस साल के अर्से का बयान है 33 ई° से 63 ई° तक

लूका का ये मंशा (मक्सद) मालूम नहीं होता कि इस तीस साल के अर्से की कामिल तवारीख़ लिखे वर्ना वो सब रसूलों के कामों का और हर जगह कलीसिया क़ायम होने का बयान करता। बल्कि उसने सिर्फ़ पतरस और पौलुस के कामों का बहुत ज़िक्र किया है।

गौर के साथ पढ़ने से ये मालूम होता है कि लूका ने दो उमूर को मद्दे-नज़र रखा

:-

(1) रूह-उल-कुद्स की नेअमत पीन्तिकोस्त के दिन नाज़िल हुई। और जो मोअजिज़े रसूलों ने किए। इस अम्र का साफ़ बयान करना ज़रूरी था क्योंकि मसीह ने बार-बार अपने शागिर्दों को यक़ीन दिलाया था कि वो रूह-उल-कुद्स पाएँगे।

(2) ऐसे बयानात को क़लमबंद करना जिनसे मसीह की कलीसिया में ग़ैर-अक्वाम के शामिल होने का दावा साबित हो। क्योंकि यहूदी ख़ासकर उस ज़माने में इस दाअवे पर एतराज़ करते थे (1 थिस्सलुनीकियों 2:14 से 16) इसी वजह से यहूदी लोग पौलुस के सख़्त दुश्मन हो गए और उसे रोम में कैद करवाया। इसी वजह से सामरियों के रुजू लाने (8 बाब) और ना मख़्तून, कुर्नेलियुस, पतरस के हाथ से बपतिस्मा पाना (10 और 11 बाब) मज़कूर है। इसी वजह से मूसवी शरीअत के मुताल्लिक यरूशलेम की पहली मज्लिस ने फ़ैसला किया (14 बाब) और इसी वजह से पौलुस के बपतिस्मे और ग़ैर-क़ौमों के दर्मियान उस की मुनादी करने का बयान ज़्यादा मुफ़स्सिल है।

ये ज़ाहिर है कि लूका ने सिर्फ़ इन वाक़ियात को क़लमबंद करना चाहा जिनको उसने खुद देखा था। जिनको उसने आदमियों से सुना था। जिन्होंने वह वाक़ियात देखे थे।

तर्तीब : इस का पता आमाल 1:8 से लगता है यहां ये लिखा है कि “जब रूह-उल-कुद्स तुम पर नाज़िल होगा तो तुम कुव्वत पाओगे और यरूशलेम और तमाम यहूदिया और सामरिया में बल्कि ज़मीन की इतिहा तक मेरे गवाह होंगे।” चुनान्चे 1 से 8 बाब 4 आयत तक यरूशलेम और यहूदिया में काम करने का ज़िक्र है। और 8:5 से 12 बाब के आख़िर तक सामरिया में ऐसे ग़ैर क़ौमों में जो यहूदी दीन के मुरीद थे। मसलन मिस्री खोजा 8:27 से 39, कुर्नेलियुस 10 बाब, यूनानी 11:20 और 13:1 से 28 बाब यानी किताब के आख़िर में पौलुस के काम के ज़िक्र जो दूर ममालिक के ग़ैर अक्वाम में था। चुनान्चे पौलुस यूँ कहता है कि “मैं यरूशलेम से लेकर चारों तरफ़ मसीह की खुशख़बरी की पूरी-पूरी मुनादी करता हुआ इल्लुरिकुम तक पहुंच गया।” (रोमियों 15:19) (ये इल्लुरिकुम रोमी सल्तनत की सरहद पर था) ये क़ाबिले लिहाज़ है कि इस किताब का आगाज़ यहूदिया के दार-उल-ख़िलाफ़ा यरूशलेम से हुआ और ख़ातिमा ग़ैर क़ौमों के दार-उल-ख़िलाफ़ा रोम पर हुआ।

इस किताब में मसीही दीन के वाइज़ों के बोलने का तरीक़ा मज़कूर है कि किस तरह से वो यहूदियों से और किस तरह से वो और क़ौमों से मुखातिब हुए मसलन 7, 13 बाब में स्तिफ़नुस और पौलुस यहूदियों से मुखातिब हो कर अस्बाब मौजूदात से खुदा की

शहादत (गवाही) पेश करता है और जब आतीनी शहर में शाइस्ता तालीम-याफ़्ता लोगों से मुखातिब हुआ तो उसने फ़ल्सफ़ी दलाईल को पेश किया।

तवारीख़ी सेहत

इस किताब में चंद ऐसे वाक़ियात और अश्खास का ज़िक्र है। जिनकी हक़ीक़त रोमी और दीगर तवारीख़ से मालूम हो सकती है मसलन फेलिक्स हाकिम। पौलुस यरूशलेम में आया जहां यहूदियों ने उसे कैद कराया। ये उन हंगामों के बहुत पीछे ना हुआ जो मिस्रियों ने बरपा किए। (21:37 से 39) ये कैद फेलिक्स के यहूदिया छोड़ने से दो साल बाद फ़ीसतस यहूदिया का हाकिम मुकर्रर हुआ। (23:26 24:27) पौलुस इसी साल मौसम-ए-सरमा में जब फ़ीसतस यहूदिया में पहुंचा कैद हो कर रोम को गया राह में उस का जहाज़ टूट गया। सर्दी मालटा में काटी और अगले साल रोम में पहुंचा। (26:27 ता 28)

हेरोदेस अगरप्पा अवल का ज़िक्र बारहवें बाब में आता। इस का ज़िक्र यूसिफ़स की तवारीख़ में आता है। ये बादशाह याक़ूब रसूल के क़त्ल से थोड़ी देर बाद मर गया इस की होलनाक मौत का ज़िक्र यूसीफ़स ने मुफ़स्सिल किया है और इस बयान से मिलता है।

11:28 में इस का ज़िक्र है जो किलोदेस कैसर के वक़्त में हुआ। इस के मुताबिक़ चार मुअरिख़ बयान करते हैं। कि इस कैसर के अहद में सख़्त काल पड़े।

पौलुस के ख़ुतूत

नए अहदनामे में आमाल की किताब के बाद पौलुस रसूल के ख़त आते हैं। और ये मुनासिब तर्तीब है। क्योंकि आमाल की किताब का एक बड़ा हिस्सा पौलुस की सरगुज़िशत पर मुशतमिल है। पस इस का कुछ मुख़्तसर अहवाल लिखना मुफ़ीद होगा।

पौलुस का इब्रानी नाम साऊल या सोलूस था। इब्रानियों का इब्रानी इब्राहिम की औलाद और बिनियामीन के फ़िर्के से था। (फिलिप्पियों 3:5, 2 कुरिन्थियों 11:22) तरसूस वाक़ेअ किल्तिया का बाशिंदा था पैदाईश ही से रोमी होने का हक़ रखता था। (आमाल 22:25 से 28, 23:27, 16:37 से 38) ये ऐसी इज़्ज़त और ऐसा हक़ था जो उस के बाप दादों में से किसी को मुल्की ख़िदमत के एवज़ इनायत हुआ था। इस का बाप फ़रीसी था। और ख़ुद पौलुस इस फ़िर्के की तालीम का सख़्त पाबंद रहा। (आमाल 22:3, 23:6,

26:5, गलतियों 1:14 फिलिप्पियों 3:5 ता 6) इस के बाअज़ रिश्तेदार उस के रुजू लाने से पेशतर मसीही हुए। (रोमियों 16:7, 11, 21, आमाल 23:16) चूँकि तरसूस शाइस्ता ज़बानों के लिए मशहूर था। इसलिए पौलुस ने यूनानी ज़बान की तालीम वहां पाई। ये शहर बंदरगाह होने के बाइस तिजारत का बड़ा मर्कज़ हो गया था। और मौक़े की जगह होने के बाइस मुल्की हाकिम अक्सर आकर यहां रहते। इलावा अज़ीं इल्म ने भी बहुत फ़रोग (तरक़्की) हासिल किया था। यहां तक कि आतीनी और सिकंदरिया के दार-उल-उलूम से ये जगह ज़्यादा मशहूर हो गई। पौलुस का यूनानी सीखना इस से भी ज़ाहिर है कि उसने कई यूनानी शाइरों से इक़्तिबास किया है। (आमाल 17:28, 1 कुरिन्थियों 15:33 तीतुस 1:12) पौलुस तरसूस से यरूशलेम को गया और वहां मशहूर मालुम गमलीएल से यहूदी हदीसों की तालीम पाई। (आमाल 22:3, 26:4 ता 5, गलतियों 1:14) वो साहिबे लियाक़त, तेज़ फ़हम, मज़बूत तबीयत और मुस्तक़िल मिज़ाज आदमी मालूम होता है। उस का चाल चलन शरीअत के लिहाज़ से बेऐब था और जहां तक उसे इल्म था वो अपने नूर क़ल्ब (दिल) के मुताबिक़ चलता। जो फ़र्याद उसने यहूदियों से की। और जो मुकाबला उसने अपनी मौजूदा और गुज़श्ता हालत का किया उस से ये ज़ाहिर है। (आमाल 23:11, 24:16, 26:9 ता 10, फिलिप्पियों 3:6, 1 तीमुथियुस 1:13 2 तीमुथियुस 1:3) उस के वालदैन ने ख़ेमा दोज़ी का फ़न सीखा कर उस की तालीम को मुकम्मल किया। (आमाल 18:3, 20:34, 1 थिस्सलुनीकियों 2:9) कुछ अर्से तक ये शख्स मसीही दीन का सख़्त मुखालिफ़ रहा और जब पहले शहीद स्तिफ़नुस पर पथराओ किया गया तो पौलुस ना सिर्फ़ उस के क़त्ल पर राज़ी था। बल्कि जिन्होंने उसे पथराओ किया उनके कपड़ों की हिफ़ाज़त करता था। इस वाक़िये के बाद पौलुस ने मसीहियों को ना सिर्फ़ यरूशलेम में बल्कि कुल यहूदिया में सताना शुरू किया। (आमाल 8:1 ता 3, 9:1, वग़ैरह 22:4 26:9 से 11, गलतियों 1:13, 1 तीमुथियुस 1:13)

इस ही शौक़ में उसने यहूदी सरदारों से सिफ़ारशी ख़त दमिश्क़ के इबादत ख़ानों के वास्ते लिए ताकि यहां कहीं किसी यहूदी मर्द या औरत को मसीही दीन में शामिल हुआ पाए तो उसे यरूशलेम में पकड़ लाए। जब पौलुस इस मक्सद के लिए दमिश्क़ को जा रहा था तो उस के रुजू लाने का वाक़िया वकूअ में आया। जो आमाल की किताब के नौवीं बाब में मज़कूर है। जिसकी तरफ़ पौलुस ने ख़ुद कई बार इशारा किया। (1 कुरिन्थियों 15:9, गलतियों 1:13, 1 तीमुथियुस 1:12 ता 13) उस के बारे में हम तीन बातों का ख़ास लिहाज़ रखें :-

अव्वल : वो एक नेक और रास्त शख्स था। उस के रुजू लाने का कोई काफ़ी सबब ज़रूर हुआ होगा।

दोम : जिस वक़्त से उसने येशू नासरी को मसीह माना तो वो आख़िर तक इस तालीम पर क़ायम रहा। और हमेशा मसीह को इलाही नजातदिहंदा करार दिया। और अपने तेई नजात का मुहताज समझा। यानी मसीह को अपने से अज़-हद आला समझता था।

सोम : उस के ख़तों से अनाजील और आमाल की किताब की बड़ी ताईद होती है। उस में सारी उसूली बातें पाई जाती हैं। मसलन मसीह की मौत और क्रियामत वग़ैरह। इन ख़तों में से दो में उस की सवानिह उम्री का ख़ास बयान पाया जाता है। (2 कुरिन्थियों 11 बाब, ग़लतियों 1 और 2 बाब) मसलन उस का अरब को जाना, उस को ख़ास मकाशफ़े मिलना, दमिश्क़ में वापिस आना, यरूशलम को दो दफ़ाअ जाना, और केसरिया और तरसूस को जाना। तरसूस से बर्नबास के बुलाने पर अन्ताकिया को गया। और वहां कलीसिया में मुद्दत तक तालीम देता रहा। और उस कलीसिया ने रूह-उल-कुद्स की हिदायत से (आमाल 13:1 से 4) पौलुस और बर्नबास को ग़ैर क़ौमों में मुनादी करने के लिए भेजा। और आमाल 13 से 21 बाब तक उस के ऐसे तीन बड़े सफ़रों का ज़िक्र है। इस का मुख़्तसर बयान ये है :-

तीन बड़े सफ़रों का ज़िक्र है।

पहला मिशनरी सफ़र : कप्रस, पमफिलिया, पुसदिया का अन्ताकिया, अकनीम, लुस्तरा और दिर्बे (ये दोनों शहर किलकिया के इलाक़े में थे) इसी रास्ते से अन्ताकिया को वापिस गया।

इस मौक़े पर खतना के बारे में मुबाहिसा बरपा हुआ। जिसके लिए पौलुस और बर्नबास यरूशलम को गए और अन्ताकिया को वापिस आकर दूसरे सफ़र का क़सद (इरादा) किया लेकिन इस सफ़र में बर्नबास उस के हमराह नहीं गया बल्कि सीलास।

दूसरा सफ़र : सीरिया, किलकिया, गलतिया के दिर्बे और लुस्तरा, फ़िरोगिया, एशयाए कोचक, त्राउस, यूरोप में फिलिप्पी, थिस्लिनिके, आतीनी, कुरिन्थस और वापसी के वक़्त इफ़िसुस और केसरिया और अन्ताकिया। इस सफ़र पर कुरिन्थस में उसने थिस्सलुनिके की कलीसिया को दो ख़त लिखे। तक़्रीबन 53 ई° में।

तीसरा सफ़र : गलतिया और फिरोगिया, इफ़िसुस, कुरिन्थस, फिलिप्पी वगैरह मक्किदूनिया में, दुबारा कुरिन्थस को, तरवास को, लमीतस, सूर, केसरिया, यरूशलेम।

इस सफ़र में उसने कुरिन्थियों को दो ख़त लिखे। गलतियों को और रोमियों को। त्करीबन 58 ई० में। इस सफ़र में एक दो जगह पर उस को आगाही मिली कि यरूशलेम में उस को तक्लीफ़ पहुँचेगी। चुनान्चे अगबस ने बमुक़ाम केसरिया इसी क़िस्म की ख़बर दी। लेकिन पौलुस ने यरूशलेम को जाना अपना फ़र्ज़ समझा। यरूशलेम में मसीही भाईयों ने उसे अच्छी तरह कुबूल किया। लेकिन एक दिन हैकल में इबादत करते हुए वो चंद यहूदियों के ज़रिये पकड़ा गया। जो ये कहते थे कि उसने गैर क़ौमों को अंदर ला कर हैकल को नापाक किया है। रोमी सिपाहियों ने इस को यहूदी भीड़ से छुड़ाया। और चंद हाकिमों ने उस के मुक़द्दमे की तहक़ीकात की। और पौलुस को उनके सामने मसीह की गवाही देने का अच्छा मौक़ा मिला। (लूका 21:12 ता 13।) जब इन हाकिमों ने रिश्तत की उम्मीद और यहूदियों को खुश करने की ग़र्ज़ से उस का इन्साफ़ ना किया। तो पौलुस ने दिक्क हो कर कैसर की दुहाई दी। और रोमी होने की हैसियत से ये उस का हक्क भी था। इस लिए चंद सिपाहियों के हमराह रोम की तरफ़ रवाना किया। लूका इस सफ़र में उस का रफ़ीक़ (साथी) था। और उसने आमाल की किताब में इस का मुफ़स्सिल बयान किया है। और 61 ई० में या इस से कुछ पेशतर रोम में पहुंचा। और कम अज़ कम दो साल तक वहां रहा। इस अर्से में उसने चार ख़त लिखे। यानी कुलुस्सियों और फ़िलेमोन और इफ़िसियों और फिलिप्पियों की तरफ़।

आमाल की आखिरी आयात पौलुस को रोम में कैद में छोड़ती हैं। अगरचे उसे कुछ आज़ादी भी थी। (आमाल 28:16) और इन अल्फ़ाज़ पर यकलख़त ख़त्म हो जाती है। वो पूरे दो बरस अपने किराया के घर में रहा। और जो उस के पास आते थे उन सबसे मिलता रहा और कमाल दिलेरी से बगैर रोक-टोक के खुदा की बादशाही की मुनादी करता और खुदावंद येसू मसीह की बातें सिखाता रहा।

मज़कूर बाला ख़तों के इलावा पौलुस ने तीन और ख़त लिखे जो चौपानी ख़त कहलाते हैं। और ये सवाल आता है कि उस की ज़िंदगी के किस हिस्से में ये ख़त लिखे गए। इस के बारे में बहुत क़ाबिल-ए-एतिबार रिवायत है, कि क़रीबन 63 ता 64 ई० में पौलुस ने रोम की कैद से रिहाई पाई। और मगरिब की इतिहा तक मुनादी करता गया (रोम के क्लीमेंट) और इफ़िसुस मक्किदूनिया और क्रियते को, क्रियते में तीतुस को और इफ़िसुस में तीमुथियुस को छोड़ा (1 तीमुथियुस 1:3, तीतुस 1:1 ता 5) फिर रोम को लौट गया। और वहां शहीद हुआ। 67 या 68 ई० में। तीमुथियुस को पहला ख़त और तीतुस

की तरफ़ उस का ख़त उसने इस अर्से में लिखा होगा। और तीमुथियुस को दूसरा ख़त शहीद होने से पेशतर रोम से लिखा। (1 तीमुथियुस 4, 6)

एक और रिवायत भी है जो ऐसी पुख़्ता नहीं कि रोम से बाहर उस का सर क़लम हुआ और किस्तनतीन आज़म ने उस की यादगार में गिरजा बनाया।

बाअज़ों का ख़याल है कि वो पस्तक़द (छोटा क़द) और बारीश (दाढ़ी वाला) था। बहर-हाल वो सरगर्म पुर जोश साहिबे सलीक़ा और साहिबे फ़न था।

पौलुस के ख़तूत

हम यहां इन ख़तूत का बयान तर्तीब वक़्त के मुताबिक़ करेंगे।

थिस्सलुनीकियों की तरफ़ के ख़त

तिस्लूनिकिया का क़दीम नाम थर्मी था यानी गर्म चश्मे। क्योंकि यहां मादनियात के गर्म चश्मे थे। 315 ई० क० म० में इस की वुसअत बहुत बढ़ गई। और इस का नाम सिकंदर की बहन तिस्लूनीकी के नाम पर रखा गया। उस वक़्त से लेकर इस को बहुत रौनक हुई। और रोमियों ने इस को मक़िदूनिया का दार-उल-ख़िलाफ़ा बनाया। कुछ अर्से बाद वो कुल मक़िदूनिया का दार-उल-ख़िलाफ़ा बन गया। ना सिर्फ़ दार-उल-ख़िलाफ़ा होने की वजह से बल्कि तिजारत की कस्रत से इस को तरक्की हुई। आजकल भी ये एक बड़ा शहर है और इस का नाम सलूनिकी है। और टरकी गर्वनमेंट के मातहत और यहूदियों की बड़ी जमाअत यहां रहती है। इस शहर में पौलुस सीलास के हमराह फिलिप्पी के क़ैदख़ाने से निकल कर आया। ये उस शामी सड़क की राह से गया होगा। जो रोमी सरकार ने बनाई थी। (आमाल 17:1 से 10) यहां पहुंच कर वो हस्बे-मामूल यहूदियों के इबादतख़ाने में गया और कई हफ़्तों तक अहदे-अतीक़ से दलील लाकर उनको जताता था, कि येसू नासरी ही मसीह है। सामईन (सुनने वालों) से बाअज़ यहूदी ईमान लाए और यूनानियों में से बहुतेरे। यहां तक कि बाक़ी यहूदी हसद के मारे हंगामा बरपा करने लगे। और आख़िरकार रात के वक़्त पौलुस और सीलास वहां से रवाना हो गए। और बैरिया को चले गए। वहां के यहूदियों की पौलुस ज़्यादा तारीफ़ करता है और कहता है कि “वहां के लोग थिस्सलुनीकियों से शरीफ़ थे। क्योंकि उन्होंने बड़े शौक़ से कलाम को कुबूल किया। और रोज़ बरोज़ किताब-ए-मुक़द्दस में तहक़ीक़ करते थे। कि ये बातें इस तरह हैं या नहीं।” तो भी क़ाबिले लिहाज़ है कि माबाअद तवारीख़ में बैरिया के मसीहियों का बहुत

कम ज़िक्र आता है। लेकिन थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस के ये दो खत मौजूद हैं। जिनसे हम इस कलीसिया का हाल बखूबी मालूम कर हैं।

इन दो खतों में ना यहूदी रीत रसूम और ना यहूदी नविशतों का कुछ ज़िक्र है इस से हम ये नतीजा निकाल सकते हैं कि इस कलीसिया के शुरुका उमूमन गैर क्रौम से थे। और आमाल की किताब के सत्रहवें बाब की चौथी आयत इस राय की ताईद करती है क्योंकि वहां यूं आया है, कि बाअज़ यहूदियों ने मान लिया लेकिन यूनानियों में से बड़ी जमाअत ने जब पौलुस को वहां से भागना पड़ा तो उस को ये बड़ी फ़िक्र हुई कि तिस्लूनीकी नव-मुरीदों का हाल क्या होगा। इसलिए वो थोड़ी देर के बाद उनके पास जाना चाहता था। लेकिन अपनी जगह तीमुथियुस को भेजा। (1 थिस्सलुनीकियों 3:2) जब तीमुथियुस उनको देखकर पौलुस के पास गया तो उसने ये खबर दी। कि तिस्लूनीकी मसीही ईमान पर क़ायम हैं। इस से पौलुस को बड़ी खुशी हुई। पर तीमुथियुस ने उनके चंद नुक्रसों का ज़िक्र भी किया। मसलन बाअज़ ये कहने लगे थे, कि पौलुस ज़ाती नफे के लिए मुनादी करता है। और बाअज़ लोग मसीह की आमद को क़रीब समझ कर मेहनत करना छोड़ बैठे। और इस तरह औरों पर अपना बोझ डाला।

थिस्सलुनीकियों का पहला खत

मक़सद : मज़कूर बाला नुक्रसों को रफ़ा करना और मसीही दीन की बुनियादी बातों पर उनको मज़बूत करना। चुनान्चे खुलासा मज़मून से ये बखूबी ज़ाहिर है।

- (1) 1:1 से 3 थिस्सलुनीकियों के ईमान के बारे में पौलुस शुक्र करता है।
- (2) 1:4 से 10, और इसलिए कि वो औरों के लिए नमूना बन गए थे।
- (3) 2:1 से 12 अपनी उज़्र-ख़्वाही करता है कि ना सिर्फ मैंने इन्जील सुनाई बल्कि अपने हाथों की मेहनत से अपना गुज़ारा किया।
- (4) 2:13 से 16, खुद तिस्लूनीकी मसीही इज़ार सानी की बर्दाश्त में इन्जील की इलाही कुद्रत के शाहिद (गवाह) हैं।
- (5) 2:17 से 3:13 तिस्लूनीकी के छोड़ने का बाइस बताया है कि वो लापरवाही के सबब से नहीं भागा बल्कि तीमुथियुस को उनका हाल दर्याफ़्त करने भेजा।
- (6) 4:1 से 12 अमली नसीहतें कि ज़िनाकारी और सुस्ती से बरकिनार रहें।

(7) 4:13 से 18, वफ़ात याफ़ता भाईयों के बारे में तसल्ली, कि वो मसीह के साथ दूसरी आमद के वक़्त आएँगे।

(8) 5:1 से 11 इस आमद का वक़्त नामालूम है। इस वास्ते तैयार रहना चाहिए।

(9) 5:1 से 24, इस अस्त्रा में काम और दुआ में मसरूफ़ रहना ताकि कुल रूह नफ़्स और बदन कामिल हो जाएं।

(10) 5:25 से 28, अलविदा

थिस्सलुनीकियों का दूसरा ख़त

इसी साल यानी 53 ई० में दूसरे ख़त को लिखने का मौक़ा मिला। पहले ख़त के मज़ामीन से तिस्लूनीकी मसीहियों ने ये नतीजा निकाला कि जब मसीह की आमद ऐसी करीब है तो क्यों मेहनत करें। अगरचे खुद पौलुस ने इस ख़त में ये समझाया था कि ऐसा नतीजा ना निकालें बल्कि मेहनत करें। वो समझ ना सकते थे कि अगरचे आमद फ़ौरन हो सकती है ताहम इस में देर हो सकती है। चुनान्चे मसीह ने फ़रमाया कि उस वक़्त को ठीक कोई नहीं जानता। इसलिए पौलुस को ये दूसरा ख़त लिखना पड़ा। जिसमें ये दो खास बातें हैं :

अव्वल : मसीह की दूसरी आमद से पेशतर चंद उमूर का वाक़ेअ होना ज़रूर है। (2 बाब)

दोम : अगर वो बेकार और सुस्त रहें तो इस से मसीही दीन की बदनामी होगी (3 बाब)

पहले बाब में पौलुस ये बताता है कि बेशक दूसरी आमद होने वाली है।

मज़कूर बाला हिस्सों से इस ख़त का सिलसिला मज़ामीन मालूम हो सकता है।

पौलुस की तालीम जो इन ख़तों में है दो हिस्सों पर मुनक़सिम हो सकती है :-

अव्वल : इन्सान की नजात के बारे में। इस हिस्से में मुफ़स्सिल बयान नहीं करता जैसा रोमियों और चंद दीगर ख़तों में पाया जाता है। सिर्फ़ इतना कहता है कि इन्जील का मक़सद है कि कुल इन्सानियत बदन नफ़्स और रूह पाकीज़ा और अबदी

ज़िंदगी के लायक बन जाएं। (1 थिस्सलुनीकियों 2:12, 4:3, 5:23, 2 थिस्सलुनीकियों 3:6 से 13)

दोम : मसीह की दूसरी आमद। (1 थिस्सलुनीकियों 1:10, 2:19, 3:13, 4:13 से 18, 5:2 वगैरह) (2 थिस्सलुनीकियों 1:9, 2:1 से 8)

इस मज़मून के बारे में ये याद रखना चाहिए कि रसूल आमद के ठीक वक़्त से नावाक़िफ़ थे मसलन यहां पौलुस को शायद ख़याल है कि मैं इस आमद तक ज़िंदा रहूँगा। (1 थिस्सलुनीकियों 4:15) ऐसा ही 2 कुरिन्थियों 5:4 में उस की ऐसी ही उम्मीद मालूम होती है। लेकिन फिलिप्पियों 1:23 में रहलत कर के मसीह के पास जाने का ज़िक्र है। 2 तीमुथियुस 4:6 में वो जानता है कि मसीह की दूसरी आमद से पेशतर मैं शहीद हो जाऊँगा।

कुरिन्थियों की तरफ़ ख़त

कुरिन्थस ये शहर बहीरा यूनान और ईजी इनके दर्मियान ख़ाकना पर उस चट्टान के दामन में वाक़ेअ है जिस पर एक क़िला बना था। इस के दो बंदरगाह थे। एक कुरिन्थस के नज़्दीक मगरिबी किनारे पर लख़यान नामी था। और दूसरा मशरिक्की किनारे पर जो **मख़रिया** के नाम से नामज़द था। रोमियों 16:1 आमाल 18:18 में इस का ज़िक्र है। इस राह पर जो इन दोनों बंदरगाहों के पास वाक़ेअ थी। बहुत तिजारत और आमदो रफ़्त होती थी। चुनान्चे नेरू के अहद में रोमियों ने वहां नहर बनाने का इरादा किया था। लेकिन किसी ना किसी तरह इरादा छोड़ दिया। जब रोमियों ने इस मुल्क को फ़तह किया तो यूनान का नाम बदल कर अक्खाया रखा और कुरिन्थस को इस सूबे का दार-उल-ख़िलाफ़ा ठहराया। इस शहर का पहला नाम अफ़ायर था। ये शहर ख़ास तीन बातों के सबब मशहूर हुआ :-

अव्वल : ऐश व इशरत

दोम : तिजारत

सोम : दौड़ और खेल के बाइस

इस की तरफ़ ज़ेल (निचे) की आयात में इशारा पाया जाता है। (1 कुरिन्थियों 4:9, 5:2, 16:9 से 11, 9:24 से 27, 11:21) इस के दार-उल-खिलाफ़ा होने की वजह से आतीनी के इल्म और फ़ल्सफ़े ने यहां भी रिवाज पाया। अगरचे आतीनी में पौलुस को चंद दिनों तक यूनानी फ़ल्सफ़े से दो-चार होना पड़ा। लेकिन ख़ासकर कुरिन्थस में मसीही दीन और यूनानियों और रोमियों के इल्म आपस में दो-चार हुए। क्योंकि यहां पौलुस को बहुत कामयाबी हुई। अक्सर ग़ैर क्रौमों में से मसीही हो गए। लेकिन बाअज़ यहूदियों में से भी ईमान आए। (आमाल 18:8) अगरचे वहां बहुत मसीही थे पर अक्सर ग़रीब थे (1 कुरिन्थियों 1:26) बाअज़ मालदार भी थे मसलन क्रिस्पस इबादतखाने का सरदार (आमाल 18:8, 1 कुरिन्थियों 1:14) अरास्तस शहर का ख़ज़ानची (रोमियों 16:23) और गियुस जिसे पौलुस अपना और सारी कलीसिया का मेज़बान कहता है। और मुहब्बत की ज़ियाफ़त में भी मिले-जुले आदमी पाए जाते हैं। (1 कुरिन्थियों 11:22)

जिस तरीक़े से पौलुस ने कुरिन्थस में मुनादी की इस का ज़िक्र ख़ुद पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 2:1 में किया है। उसने सादगी से फ़साहत और दुनियावी हिक्मत की मदद के बग़ैर मसीह की सलीब को पेश किया। यहूदियों ने बहुत मुखालिफ़त की (आमाल 18:5) ग़ैर क्रौम मसीहियों की हालत भी पुर-ख़तर थी।

पौलुस के बाद अपोलूस वहां गया जो सिकंदरिया का यहूदी नविशतों में आलिम और बहुत सरगर्म था। अगरचे पौलुस और अपोलूस की तालीम एक ही थी। लेकिन तर्ज़ बयान में बहुत फ़र्क़ था। जिससे लोगों ने पौलुस की कुछ हिक़ारत की और फ़साहत और फ़ल्सफ़े के चाहने वालों ने लोगों को अपोलूस की तरफ़ रुजू किया।

कुरिन्थस में पौलुस की बहुत मुखालिफ़त हुई। चंद यहूदी मुअल्लिम (2 कुरिन्थियों 11:42) वहां आए और दूसरी कलीसियाओं से सिफ़ारशी ख़ुतूत लाए (2 कुरिन्थियों 3:1) और जो बुनियाद पौलुस ने डाली थी (1 कुरिन्थियों 3:10 से 18, 2 कुरिन्थियों 10:13 से 18) इस पर एक निकम्मी इमारत बनाने और इस पर फ़ख़्र करने लगे। इन मुअल्लिमों ने अपने आपको रसूल कहा (2 कुरिन्थियों 11:5, 2) और पौलुस की रिसालत की तर्दीद (रद्द करना) की (1 कुरिन्थियों 9:3, 2 कुरिन्थियों 10:7 ता 8) और तर्गीब दी कि उस के हुक्म ना माने जाएं। (2 कुरिन्थियों 4:1 ता 2, 5:1, 11:16 से 12) ख़याल ग़ालिब है कि ये लोग पौलुस के पहले ख़त के मज़मून से उस के ख़िलाफ़ ग़ज़बनाक हो गए। क्योंकि

दूसरे खत में इस का साफ़ ज़िक्र है। तहक़ीक़ मालूम नहीं कि इनकी खास तालीम क्या थी लेकिन इतना जानते हैं कि वो खुदावंद के सामने क़ायम रहने वाले ना थी।

(1 कुरन्थियों 3:11)

खत का मक़सद

1 कुरिन्थियों 5:9 से ज़ाहिर है कि पौलुस ने इस से पेशतर एक और खत लिखा था जो अब मौजूद नहीं। और मालूम होता है कि वो एक और दफ़ा कुरिन्थस को गया। जिसका साफ़ ज़िक्र नये अहदनामे में नहीं। (2 कुरिन्थियों 2:1, 12:14, 20 से 13:2) मौजूदा पहले खत के लिखने में दो तरह का मक़सद था।

अव्वल : वहां के मसीहियों को उनके चंद कुसूरों के बारे में नसीहत करना चाहता था। मसलन तफ़र्रुकों के बारे में (1:11 ता 12) हिक्मत पर फ़ख़ के बारे में (1:7, 31, 4:1) ज़िनाकारी (5 बाब) मुक़द्दमात (6 बाब) इशाए रब्बानी के वक़्त हसद (11:18 से 22)

दोम : दूसरा मक़सद ये था कि कुरिन्थियों के चंद सवालियों का जवाब दे। शादी के बारे में (7 बाब) बुतख़ानों की ज़ियाफ़त के बारे में (8:1) इबादत की तर्तीब (11 बाब के पहले हिस्से में) रुहानी नेअमतों के बारे में (14, 12 बाब) बदन की क़ियामत (15 बाब) ग़रीब मसीहियों के लिए चंदे की बाबत (16:1 वग़ैरह)

कहाँ से लिखा गया ये खत इफ़िसुस से पौलुस ने लिखा 57 ई० के शुरू में (16:8) ठीक मालूम नहीं कि किस के हाथ ये खत भेजा। बाअज़ों का ये खयाल है कि स्तफ़नास और फ़र्रतौनातस और अख़ीक़स (16:17) के हाथ भेजा गया।

तक़सीम

1:1 से 9 दीबाचा व सलाम, कुरिन्थियों के ईमान और रुहानी नेअमतों के बाइस खुदा का शुक्र।

1:10 से 14:21 तफ़र्रुका पर मलामत और इस में

(1) खुदा की हिक्मत आदमी की हिक्मत से बढ़कर है। ये इलाही हिक्मत मसीह है।

(2) सिर्फ रूह-उल-कुद्स ना कि रसूल हक़ीक़ी मुअम्मर है।

(3) पौलुस अपोलूस वग़ैरह नायब मुअम्मर हैं।

5:1 से 13 ज़िनाकार को कलीसियाई सज़ा

6:1 से 11 मुक़द्मात कचहरी में ग़ैर-मसीहियों के सामने नहीं ले जाने चाहिएं

6:12 से 20 मसीह में आज़ादी बेलगाम नहीं

7 निकाह के बारे में जवाब

8:1 से 11:1 तक बुतख़ानों की ज़ियाफ़तों के बारे में

(1) अगरचे शरीक हो सकते हैं लेकिन हमेशा मुनासिब नहीं

(2) पौलुस अपना नमूना पेश करता है।

(3) अहदे-अतीक़ से इबरत की मिसालें

(4) इशाए रब्बानी की हक़ीक़त से दलील

(5) आवारगी की शरीअत मुहब्बत की शरीअत से मशरूत है।

11:2 से 16 इबादत के वक़्त सर ढांपने के मुताल्लिक़

11:17 से 24 इशाए रब्बानी के वक़्त ज़ियाफ़त की ख़राबियां

12 से 14 बाब तक रुहानी नेअमतों का मुनासिब इस्तिमाल

इस में दो बातें हैं। (1) कलीसिया मुख़्तलिफ़ आज़ा का बदन है। (2) सबसे बढ़कर नेअमत मुहब्बत है। (3) नबुव्वत या नसीहत ग़ैर-ज़बान बोलने से बढ़कर है।

15 बाब, क्रियामत के बारे में

16 बाब, मुख्तलिफ़ इल्मी नसीहतें मसलन चंदे के बारे में

चंद खास खयालात मुन्दरिजा खत (1) कुरिन्थस जैसे शहर में ये ताज्जुब (हैरानगी) की बात नहीं कि सब लोग इल्म और फ़ल्सफ़े की बहुत क़द्र करते थे यूनानी लफ़्ज़ सूफ़िया जिससे लफ़्ज़ फ़ल्सफ़ा मुरक्कब है यूनान के सारे दार-उल-उलूम में बहस का खास मज़मून था। ये मुनासिब था क्योंकि लफ़्ज़ सूफ़िया से मुराद है। खल्कत की हक़ीक़त मालूम करना। लेकिन पौलुस के ज़माने में ये मशहूर हो गया था, कि फ़ल्सफ़ा अपने मक्सद में नाकाम रहा। ना सिर्फ़ खल्कत के भेदों के हल करने में ना-कामयाब रहा। बल्कि इन्सान के अख़लाक़ के सुधारने में बिल्कुल आजिज़ रहा। इसलिए पौलुस ने कुरिन्थस में ज़ोर दिया कि जो काम फ़ल्सफ़े से ना हो सका उस को मसीह ने अंजाम दिया। चुनान्चे पहले बाब में उसने लिखा है कि “जब खुदा की हिक्मत के मुताबिक़ दुनिया ने अपनी हिक्मत से खुदा को ना पहचाना। तो खुदा को ये पसंद आया कि मुनादी की बेवकूफ़ी से ईमान लाने वालों को नजात दे। चुनान्चे यहूदी निशान चाहते हैं। और यूनानी हिक्मत तलाश करते हैं। मगर हम मसीह मस्लूब की मुनादी करते हैं जो यहूदियों के लिए ठोकर और ग़ैर क़ौमों के नज़दीक़ बेवकूफ़ी है। लेकिन जो बुलाए गए हैं। यहूदी हों या यूनानी। उनके नज़दीक़ मसीह खुदा की कुद्रत और खुदा की हिक्मत है। (1 कुरिन्थियों 1:21 ता 24) येसू मसीह इस वास्ते हिक्मत है क्योंकि उस में रास्तबाज़ी, पाकीज़गी, और मख़लिसी मिलती है। इस ख़त के दीगर मुक़ामों में भी इस हिक्मत का ज़िक़्र मिलता है मसलन 2:5, 13, 4:10, 8:1 ता 2

(2) रूह की नेअमतें : मालूम होता है कि इस कलीसिया में मुख्तलिफ़ ज़बानों से बोलना और मोअजिज़े दिखाना आम था। और लोग इन पर ज़्यादा फ़ख़्र करने पर माइल थे। इस के ज़िमन में पौलुस ने ये बताया कि ऐसी नेअमतें कलीसिया के आम फ़ायदे के लिए होनी चाई ना कि अफ़राद के लिए। और ये भी बताया कि सबसे बढ़कर नेअमत मुहब्बत है। और जो शख़्स इस मुहब्बत से ख़ाली है वो मसीह से भी ख़ाली है। (1:7, 12:7, 31, 13 बाब) इस में पौलुस का एतिदाल (मियानारवी) बहुत क़ाबिल लिहाज़ है। वो दूसरी नेअमतों की बेक़दरी नहीं करता। मगर ये बताता है कि इनका फ़ायदा उनके दुरुस्त इस्तिमाल पर मुन्हसिर है। और किसी क़द्र ज़राफ़त से इनकी हिक्मत के दाअवे को याद दिलाता है मसलन (8:1 ता 3, 14:18)

(3) आज़ादी की शरीअत और मुहब्बत की शरीअत का ताल्लुक़। यहूदी मोअल्लिमों के ख़िलाफ़ पौलुस ने इस अम्र पर बखूबी ज़ोर दिया कि मसीह में कामिल

आज़ादी है, कि मसीही रीत रसूम के पाबंद नहीं जैसे यहूदी थे। मसलन हर क्रिस्म का खाना रवा है अगरचे वो बुतखाना में भी बिकता हो। लेकिन वो ये भी बताता है कि एक और शरीअत है जिसको मुहब्बत की शरीअत भी कह सकते हैं। और जिसके मुताबिक ये नामुनासिब है कि मसीही आदमी अपनी आज़ादी के सबब से अपने भाई को ठोकर खिलाए। मसलन अगर बाअज़ों को ये नागवार मालूम होता था कि कोई मसीही बुतखाने की ज़ियाफ़त में शरीक हो तो इस से परहेज़ करना अच्छा होता। (देखो 8:4 से 10, 6:12)

(4) मसीह की कलीसिया : पौलुस ने इस को दो बातों से तश्बीह दी :-

अव्वल : हैकल या मंदिर से (3:9 से 17) जिसमें हर एक मसीही गोया इमारत का पत्थर है। और खादिमान दीन मुअम्मर और येसू मसीह हक़ीक़ी बुनियाद है।

दोम : बदन और इस के आज़ा से (12 बाब) इस दिलचस्प बाब से हम ये सीखते हैं कि मसीह का अपने आज़ा से कैसा करीबी ताल्लुक़ है। और इस ताल्लुक़ का वसीला रूह-उल-कुद्स है।

(4) नफ़्सानी और रुहानी : इस ख़त में दो अल्फ़ाज़ अक्सर आते हैं। और इस से हम साफ़ मालूम कर सकते हैं कि आदमी की ज़ात और उस का खुदा के मुकाशफे से मुनव्वर हो जाने के बारे में पौलुस की क्या तालीम थी। नफ़्सानी आदमी अपनी कोशिश से खुदा के मुकाशफे को कुबूल नहीं कर सकता (1:21, 30, 2:5, 3:1, 12:3) रुहानी आदमी वो है जिसमें मसीह पर ईमान लाने के ज़रिये से खुदा का रूह बस्ता है। चुनान्चे हर हक़ीक़ी मसीही में नफ़्सानी ख़यालात किसी क़द्र रहते हैं। ताहम रोज़ बरोज़ रूहानियत में ज़्यादा बढ़ता जाता है। (2:12, 15, 16, 3:2, 14:37) इस के मुताबिक़ पौलुस बदन के बारे में भी इम्तियाज़ (फ़र्क़) करता है। हमारा मौजूदा बदन नफ़्सानी है। यानी बदन की हरकात और आमाल के मुताबिक़ है। रुहानी या जलाली बदन वो है जो रूह की तहरीकों को बख़ूबी अंजाम दे सकता है। (15:44 से 50 तक)

(6) मसीह हमारी कुर्बानी : कुरन्थी मसीहियों में चंद यहूदी ज़बीहों और ज़ियाफ़तों की तरफ़ माइल थे। लेकिन अक्सर ग़ैर क्रौमों की कुर्बानियों और ज़ियाफ़तों की तरफ़। दोनों के जवाब में पौलुस एक बात पेश करता है।

यानी ये कि हमारी कुर्बानी हो चुकी, यानी खुद मसीह। और अब हमारी कुल ज़िंदगी खुशी की ईद है। (5:7, 8, 10:15 से 21) इस से वो ये नतीजा निकालता है कि मसीही लोग ना यहूदियों ना गैर क्रौमों के गुनाहों में मुब्तला रह सकते हैं।

कुरिन्थियों की तरफ़ का दूसरा ख़त

(1) ये बयान हो चुका है कि पहला ख़त इफ़िसुस से 57 ई॰ के शुरू में लिखा गया। पेशतर इस के कि पौलुस इस शहर से रवाना हुआ। इफ़िसुस से हंगामे के बाइस क़ब्ल अज़ वक़्त ग़ालिबन त्रोआस को गया (आमाल 20:1) जो बहीरा रोम के साहिल पर वाक़ेअ है। उसे उम्मीद थी कि तीतुस मुझे वहां मिलेगा। और मैं उस से कुरिन्थस की कलीसिया का सारा हाल सुनूंगा (2 कुरिन्थियों 2:12) लेकिन उस से मुलाक़ात ना हुई। (2 कुरिन्थियों 2:13) इसलिए पौलुस मक़िदूनिया को गया। और वहां ग़ालिबन शहर फिलिप्पी में तीतुस से मिला। और तस्कीन बख़्श ख़बर इस कलीसिया की सुनी। (7:5 से 7) इस वास्ते इसी मुल्क से उसने दूसरा ख़त लिखा और तीतुस और उस के हम-राहियों के हाथ रवाना किया।

(2) इस ख़त के लिखने के वक़्त तीमुथियुस उस के साथ था। (1:1) पहले ख़त में ये ज़िक्र हुआ कि पौलुस ने तीमुथियुस को कुरंथिस में भेजा था। (1 कुरिन्थियों 4:17, 16:10)

(3) मक़सद : पहले ख़त से कुरिन्थियों पर मुख़्तलिफ़ तासीर (असर होना) हुई। बहुतों ने अपने चाल-चलन को दुरुस्त किया। अक्सरों में तौबा के आसार नज़र आए। और रसूल की इज़्ज़त करने लगे कि उन्होंने इस बदकार शख़्स को ख़ारिज कर दिया। (2 कुरिन्थियों 2:5 से 11, 7:11) रो-रो कर दरख़्वास्त की कि वो उनके पास फिर आए। (7:7) और झूटे मोअल्लिमों के ख़िलाफ़ पौलुस की रिसालत को माना। अगरचे बाअज़ लोग झूटे मोअल्लिमों के पैरौ (मानने वाले) रहे और इस के ख़त से बहुत बातें उस के ख़िलाफ़ निकालीं। उसने अपने इस इरादे का ज़िक्र पहले किया था कि मैं इफ़िसुस से कुरिन्थस को जाऊँगा। (1:15 ता 16) लेकिन कुरिन्थियों की हालत सुनकर उसने अपना इरादा

बदल डाला। (23 बाब) इसलिए उस के मुखालिफों ने ये इल्ज़ाम उस पर लगाए कि (1) कि वो गैर-मुस्तक़िल मिज़ाज है (2 कुरिन्थियों 1:18) इसलिए वो रसूल नहीं हो सकता। (2) उसने इस ज़िनाकार से बहुत सख्त सुलूक किया। (3) उसे अपने काम के बाइस तकब्बुर था। (2 कुरिन्थियों 10:10)

पस हम ये कह सकते हैं कि इस खत के तीन मक़सद हैं :-

(1) तीतुस से ख़बर सुनने पर शुक्रिया। 1 से 7 अबवाब में, ख़ासकर 2, 6 वगैरह

(2) चंदे को तैयार रखने के बारे में 8 और 9 बाब

(3) मुतलव्विन मिज़ाजी और रिसालत के खिलाफ़ इल्ज़ामों को रद्द करना। (10 से 13 बाब और नीज़ 1:16 से 2:4)

वक़्त तहरीर : मज़कूर बाला वाक़ियात के मुताबिक़ ये खत 57 ई° की मौसम-ए-ख़ज़ाँ में लिखा गया।

तक़सीम मज़मून

मज़कूर बाला तीन मक़ासिद से खत का सिलसिला ज़ाहिर होता है। और इन तीन बड़े हिस्सों के ये छोटे जुज़्व हैं।

1:1 से 11 दीबाचा, रसूल का ग़म, और इफ़िसुस के खतरे से बच जाना, इनमें खुदा की मदद और हम्दर्दी।

1:12 से 2:4 इरादे की तब्दीली मुतलव्विन मिज़ाजी से नहीं हुई बल्कि ज़रूरी अस्बाब से।

2:5 से 17, रसूल की ख़ुशी कि कुरंथियुस के मसीहियों ने नसीहत कुबूल की और खताकार को सज़ा दी।

3 बाब, पौलुस के शागिर्द नए अहद के काम में पौलुस की रिसालत के सबूत हैं। इस नए अहद की फ़ज़ीलत।

4, 5, 6 बाब, रसूल इस खिदमत पर फ़ख़ करता है। कमज़ोरी के बावजूद आखिरी कामयाबी की उम्मीद से हौसला पाता है। और आदमियों को खुदा की तरफ़ बुलाता रहता है और चाहता है कि कुरिन्थस के मसीही भी खुदा की रूह की कुदरत से और दुनियावी शहवतों से परहेज़ करने से इस काम में हों।

7 बाब, रसूल दुबारा बताता है कि मेरी खुशी कुरिन्थस के मसीहियों की फ़र्माबरदारी से कितनी बढ़ गई। और मुहब्बत की राह से उनको तम्बीह दी।

8:1 से 7, चंदे के बारे में मक्किदूनिया की कलीसियाओं की फ़य्याज़ी

8:8 से 15, कुरिन्थस के मसीही उनके नमूने पर चलें।

8:16 से 9:5 तीतुस और दो भाई चंदा जमा करने के लिए पेशतर भेजे गए।

9:16 से 15, दुनिया खुदा की नज़र में मंज़ूर है और इलाही सिफ़त है।

10 बाब, मजबूरन रसूल को सख़्ती करनी पड़ती है।

11 बाब, रसूल इलाही रिसालत की सनद में अपने मुख्तलिफ़ दुख-दर्द और मेहनत वग़ैरह पेश करता है।

12:1 से 11 इस तरह से अपनी रिसालत को अपने इल्हामों के ज़रिये ज़ाहिर करता है।

12:12 से 13 के आखिर तक। चाहिए था कि कुरिन्थस के मसीही पौलुस की रिसालत की ताईद करते। तीसरी दफ़ाअ आकर वो खुद अपनी रिसालत और इख्तियार को साबित करेगा। लेकिन इस अस्मा में कुरिन्थस के मसीही अपनी रुहानी हालत को जांचें।

खास खयाल और खास मुहावरे : खयालात पहले खत से मुशाबेह हैं। लेकिन चंद खास मुहावरे और अल्फ़ाज़ पाए जाते हैं। जो दूसरे खतों में नहीं। इस की वजह ये है कि खासतौर से पौलुस का दिल ग़म और खुशी दोनों से भरा था। मसलन खफ़गी 2 कुरिन्थियों 7:11 खर्च हो जाऊँगा 12:15

तलव्वुन मिज़ाजी 1:17

गलतियों की तरफ़ ख़त

(1) मुसन्निफ़ : सब लोगों ने माना है कि ये ख़त पौलुस की तहरीर है क़दीम कलीसिया के बुजुर्ग इस से इक़तिबास करते हैं। मसलन पोलीकार्ब (4:26 6:7) आर्येनियुस (3:19) जस्तीन शहीद (4:12, 5:20) मुक़द्दस नविशतों की हर फ़ेहरिस्त में ये ख़त पाया जाता है और मारश्यान ने जो फ़ेहरिस्त पौलुस के ख़तों की दी है उस में इस ख़त को सबसे पहले रखा।

किन की तरफ़ और किस वक़्त और किस जगह से ये ख़त लिखा गया? ये क़ाबिल लिहाज़ है कि 1:2 में गलतिया की कलीसियाओं का ज़िक्र है ना कि कलीसिया का। इस की वजह ये है कि गलतिया एक बड़ा इलाक़ा था जिसके चंद शहरों में मसीही कलीसियाएं थीं। इस इलाक़े के दो हिस्से थे शुमाली और जुनूबी। शुमाली हिस्से में लोग ज़्यादा वहशी थे और वहां एक ख़ास फ़िर्का था। जो 287 क॰ म॰ गाल से आया था। और थ्रेस से उबूर कर के एशयाए कोचक में आया। और इस के एक फ़रीक़ ने तीसरी सदी क़ब्ल अज़ मसीह में डलफ़े की ताख़त व ताराज (तबाह करना) किया था। एशिया में पहले-पहल वो बैत-अनियाह के बादशाह निकोसेदस के किरायेदार सिपाही हो गए। लेकिन बहुत देर ना गुज़री थी कि तक्ररीबन कुल एशयाए कोचक को पामाल किया। आख़िरकार अन्ती ओख़स सोतेर और योमीनस ने उनको निकाल कर इस इलाक़ा में भगा दिया। जो बाअदा गलातिया कहलाया। इस शुमाली इलाक़े के तीन बड़े शहर ये थे। उनकोरा, पीसीनस और तावेउम। तक्ररीबन 1895 ई॰ तक ये राय रही कि इस शुमाली इलाक़े में इन कलीसियाओं की बुनियाद डाली गई जिनकी तरफ़ ये ख़त लिखा गया। और कि ये पौलुस के दूसरे सफ़र के शुरू में हुआ। (आमाल 16 बाब के पहले हिस्से में 50 ई॰ के करीब) लेकिन इस वक़्त से बाअज़ सय्याहों ने इस इलाक़े की तहक़ीक़ात की है। और पुरानी क़ब्रों के कुतबों और दीगर पुरानी तहरीरों से इस राय ने फ़रोग पाया, कि फ़िल-हक़ीक़त गलातिया के जुनूबी हिस्से में ये कलीसियाएं वाक़ेअ थीं। क्योंकि इस इलाक़े में लोग ज़्यादा तहज़ीब याफ़ता थे। और रोमी सरकार की शाहराह पर बहुत आमद व रफ़्त होती थी। और इलावा बरीं ये राय इस बयान से मिलती है कि पौलुस ने इकनीम लुस्तरा और दिर्बे में जो इस इलाक़े के तीन शहर थे कलीसिया की बुनियाद डाली। (आमाल 13 और 14 बाब) (हालाँकि आमाल 16 बाब में ऐसे काम की गुंजाइश और ना फ़ुर्सत मालूम होती है) इस मज़कूर बाला दौराइयों

में से दूसरी ज़्यादा करीन-ए-क्रियास (जिसे अक्ल कुबूल करे) है। और अगर हम इस राय को कुबूल करें तो तहरीर का वक़्त भी मुख़लिफ़ होगा। क्योंकि अगर ये कलीसियाएं दूसरे सफ़र के वक़्त (आमाल 16) कायम हुईं। तो 57 ई° के अखीर या 58 ई° के शुरू से पेशतर ये ख़त ना लिखा गया होगा। और पहले सफ़र के वक़्त (आमाल 14) अगर ये कलीसियाएं कायम हुईं यानी 47 ई° या 48 ई° में तो शायद ये ख़त 49 ई° के करीब लिखा गया होगा।

49 ई° में खतना के बारे में मशहूर मुबाहिसा बरपा हुआ। जिसका फ़ैसला इसी साल यरूशलेम में हुआ। और आजकल के आलिम समझते हैं कि ये ख़त इस फ़ैसले के करीब लिखा गया। इस सन की ताईद इस ख़याल से भी होती है कि गलतिया के मसीही इस कलीसियाई फ़ैसले के बाद खतने के मुबाहिसे में फिर मुड़ कर मुब्तला ना हुए होते।

हासिल कलाम पौलुस ने पहले सफ़र के वक़्त गलातिया के इलाके के जुनूबी हिस्से में अन्ताकिया, इकनीम, लुस्तरा और दिर्बे में कलीसिया की बुनियाद डाली। फिर खतना के बारे में जो मुबाहिसा यरूशलेम में हुआ उस के करीब उसने ये ख़त लिखा। उमूर ज़ेर-ए-बहस ये थे कि आया नजात यहूदी रीत रसूम के ज़रिये से होगी या महज़ मसीह के फ़ज़ल से। इस बात का मुफ़स्सिल बयान मुफ़स्सला-ज़ैल तक्सीम मज़ामीन से मालूम होगा।

तक्सीम मज़मून

1:1 से 5, सलाम और बरकत

1:1 से 9, गलतियों की बर्ग़श्तगी पर ताज्जुब

1:10 से 2:14 पौलुस अपनी रिसालत और तालीम की हिमायत करता है।

इस अस्ना में वो अपने रुजू लाने और माबाअद वाक़ियात का ज़िक्र करता है। (ये बयान आमाल की किताब के बयान से बख़ूबी मिलता है। अगरचे चंद छोटी बातों में मुतफ़र्रिक है)

2:15 से 21 पतरस की गलती की मिसाल से मसीही आज़ादगी की तश्रीह करता है।

3 बाब, पुराने अहदनामे से इब्राहिम के अहद की क़दामत दिखा कर मूसवी अहद पर इंजीली अहद की फ़ौक़ियत ज़ाहिर करता है।

4 बाब, वारिस के हाल से और सारा व हाजिरा की तश्बीह से वो फिर इस आज़ादगी को साबित करता है।

5 बाब, अमली नसीहत, इस आज़ादगी में कायम रहो। लेकिन मुहब्बत और रूह के फलों के क़ानून से इस को मशरूत करो।

6 बाब, दीगर अमली नसीहतें, एक दूसरे की ख़िदमत करो। ना कि खतना और रीत रसूम पर फ़ख़्र करो क्योंकि फ़ख़्र का मौक़ा सलीब है।

मुक़ाबला ग़लतियों के ख़त का रोमियों के ख़त से, इन दोनों ख़तों में दलील का तरीक़ा यकसाँ है। मुहावरे भी एक ही क़िस्म के हैं। “मसलन रास्तबाज़ ठहरना” “शरीअत के मातहत” ईमान और आमाल का मुक़ाबला। हक़ीक़ी आमाल ईमान का फल हैं।

ताहम कुछ फ़र्क भी है। क्योंकि पौलुस ग़लतिया के मसीहियों से वाक़िफ़ था। और उनकी बर्ग़शतगी (फिर जाने) के बाइस मुबाहिसे के तौर पर लिखता है। लेकिन रोमी मसीहियों से वो नावाक़िफ़ था। उनकी तरफ़ ज़्यादा नर्मी से मसीही दीन की उसूली बातों पर ज़ोर देता है।

खास खयालात : इस की खास आयात हैं, 1:6, 7, हक़ीक़ी इन्जील, 10:12, 21, 3:16-17, 4:4 से 7, 5:1, 13, 6:12 से 15

रोमियों की तरफ़ ख़त

मुसन्निफ़

पौलुस है। इस के बारे में कलीसिया में कोई इख्तिलाफ़ राय नहीं। अलबत्ता आखिरी दो अबवाब के बारह में बाअज़ों ने कुछ शक डाला है। लेकिन इस का ज़िक्र पीछे होगा।

मकतूब अलय्याह

ये रोमी मसीही हैं। इनके बारे में दो सवाल लाज़िम आते हैं :-

अव्वल : कि मसीही दीन किस तरह रोम में पहुंचा। इस का कोई साफ़ बयान हमारे पास नहीं। यूसीबस मुअर्रिख़ (कलीसिया की तवारीख़ बाब दोम फ़स्ल 25) ने एक दफ़्तायत का ज़िक्र किया है, कि पतरस और पौलुस रसूल रोम में इकट्ठे मुनादी करते थे। और दोनों नेरू कैसर की ईज़ा रसानी में शहीद हुए। मुम्किन है कि ऐसा हुआ हो। बाअज़ों की राय है कि पतरस अपने पहले ख़त के 5:13 में जो बाबिल का ज़िक्र करता है इस में वो रोम मुराद लेता है। ये आजकल आम राय नहीं है। लेकिन बहर-हाल इस रिवायत से रोम में मसीही दीन के जड़ पकड़ने के बारे में कुछ रोशनी नहीं पड़ती। इस से पता नहीं लगता है कि पतरस रसूल ने सबसे पहले वहां मुनादी की। बरअक्स इस के वो ऐसे वक़्त का ज़िक्र करता है। जब पौलुस भी रोम में था। और हम इस ख़त से जानते हैं कि पौलुस के इस ख़त लिखने से पेशतर मसीही दीन वहां क़ायम हो चुका था। और मसीहियों का शुमार भी बढ़ गया था। (रोमियों 1:10 से 15, 15:24-16 बाब) इलावा इस के रोमियों 15:20 से ज़ाहिर है, कि पौलुस को यक़ीन था कि कोई रसूल वहां नहीं गया था। आर्योनियस कहता है कि मत्ती ने अपनी इन्जील उस वक़्त लिखी थी। जब पतरस और पौलुस रोम में इन्जील की मुनादी कर रहे थे। और वहां की कलीसिया की बुनियाद डाल रहे थे। इस से ये मुराद नहीं हो सकती कि इसी वक़्त इन्जील रोम में भेजी। मतलब ये होगा कि इस ज़माने में ये दो रसूल वहां की कलीसिया का इंतज़ाम कर रहे थे। (आमाल 14:23) इस से भी कुछ तौज़ीह (वज़ाहत) नहीं होती। पस अगर रिवायत से पता नहीं लगता। तो हम आमाल की किताब और नए अहदनामे की दीगर किताबों से रोम में मसीह की कलीसिया के शुरू होने के बारे में क्या मालूम कर सकते हैं? आमाल 2:10 में लिखा है कि पंतीकोस्त के दिन रोम से बाअज़ यहूदी पतरस का वाअज़ सुन रहे थे। हो सकता है कि इनमें आए हुए बाअज़ यहूदी मसीही हो कर मसीह की ख़बर रोम तक ले गए। हम जानते हैं कि उस वक़्त रोम में कम से कम नव यहूदी इबादत ख़ाने थे।

इस राय के खिलाफ़ ये ख़याल आता है कि अगर इन इबादत ख़ानों के मैबरो के ज़रिये से मसीही दीन वहां फैल गया तो आमाल 28:17 से 22 में क्यों लिखा है कि यहूदी पौलुस को मिले इस दीन से ऐसे नावाक़िफ़ थे।

दोम : दूसरी राय ये है कि मसीही दीन गैर क्रौम मसीहियों के ज़रिये वहां कायम हुआ। इस के साथ ये मिलता है कि एशिया के जिन इलाकों में मसीही दीन बहुत फैल गया था। उनकी रोम के साथ बहुत आमद व रफ्त हुई थी और तकरीबन हर नई बात रोम में जा घुसती थी। इन दोनों रायों में से ये खयाल गालिब है।

दूसरा सवाल ये है कि रोम में कलीसिया किस क्रिस्म के अश्वास पर मुश्तमिल थी? पिछली सदी के शुरू तक ये राय गालिब थी कि रोम की कलीसिया में ख़ासकर गैर क्रौम के मसीही थे। उस वक़्त से लेकर बाअज़ों ने ये राय पेश की कि अक्सर यहूदी मसीही इस कलीसिया में थे। मगर लोग पहली राय की तरफ़ ज़्यादा माइल थे। इस राय की ताईद में कि अक्सर यहूदी मसीही इस कलीसिया में थे। ज़ेल की आयात पेश की जाती हैं 3:9, 14:1 कि इन आयात में पौलुस गोया यहूदियों से मुखातिब है। मगर इसी तरह से (1 कुरिन्थियों 10:1) वो गैर क्रौमों से मुखातिब होता है। फिर रोमियों 7:1 से 6 में मूसा की शरीअत की तरफ़ इशारा करता है। लेकिन अगरचे शरीअत से दलील ली गई है। लेकिन वो ऐसी दलील है जो आम शरीअत पर हावी है। जिसे यहूदी और गैर क्रौम दोनों मान सकते हैं। (रोमियों 9:1, 11) ये बाब ख़ासकर यहूदियों के हाल के मुताबिक़ है। लेकिन इन ही अबवाब में साफ़ लिखा है कि मैं पौलुस तुम गैर क्रौमों से मुखातिब होता हूँ। (11:13 वगैरह) इसी तरह से लोग ये कहते हैं कि 13 बाब की पहली सात आयात में यहूदियों के हस्बे-हाल नसीहत है।

जो लोग कहते हैं कि इस कलीसिया में अक्सर गैर क्रौम थे। वो ये आयात पेश करते हैं (1:5, 13, 11:13, 15:15) क्योंकि इनमें वो ऐसे तौर से लिखता है कि गोया सुनने वाले गैर क्रौम हैं और जो बातें ज़ेर-ए-बहस थीं यानी (4:1-15) इनसे मालूम होता है कि रोम के अक्सर मसीही गैर क्रौमों में से हो कर यहूदी मसीहियों के तास्सुब (मज़हब की बेजा हिमायत) की हिक्कारत करते थे। पौलुस उनको समझाता है कि अगर तुम मज़बूत हो तो कमज़ोर भाईयों की बर्दाश्त करो।

तहरीर का मक़सद और इस की तारीख़

अगर आमाल 19:21 से रोमियों 15:19 से 25 का मुक़ाबला करें तो ज़ाहिर होगा कि ये ख़त पौलुस ने कुरिन्थस से 58 या 59 ई० के मौसम-ए-सरमा में लिखा। आम हिसाब के मुताबिक़ ये ही मालूम होता है। ख़ातिमे पर जो जुम्ला है वो काबिल-ए-एतिबार नहीं। और मालूम होता है कि पांचवीं सदी में उस्कुफ़ बोखी अगस ने डाला। ताहम फ़िलवाक़ेअ हो सकता है कि फ़ेबे जिसका वहां ज़िक़ है। ये ख़त कुरिन्थस से रोम तक ले

गई (रोमियों 16:1) पौलुस के मक्सद को दर्याफ्त करने के लिए उस ज़माने के हालात का लिहाज़ मुनासिब है।

पौलुस को यक़ीन था कि अब मेरे सामने एक नया मैदान है। (19:21 रोमियों 15:23, 24) पस ये करीन-ए-क्रियास (जिसे अक्ल कुबूल करे) है कि खाना होने से पेशतर वो इन मुल्कों के दार-उल-खिलाफ़ा की कलीसिया की तरफ़ ख़त लिखे ताकि उस के पहुंचने से पेशतर लोग उस की इन्जील की कैफ़ीयत को मालूम कर लें। (रोमियों 1:13 से 16, 2:16) पस ताज्जुब की बात नहीं कि ये ख़त एक तवील मस की सूरत पकड़े। ये ख़त मुबाहिसे से ख़ाली तो नहीं लेकिन इस क्रिस्म का मुबाहिसा नहीं जो ग़लतियों के ख़त में पाया जाता है। जहां उसे शख़्सी मुखालिफ़ों का मुँह बंद करना और ख़ास यहूदी तालीम को रद्द करना है। लेकिन रोमियों के ख़त में गो तर्ज़ तहरीर और लिबास यहूदी है। तो भी ऐसे उसूलों का ज़िक्र है जिनकी ज़रूरत कुल नूअ इन्सान के लिए है मसलन हर मुल्क और हर ज़माने में इन्सान मानना नहीं चाहता है कि इन्सान में जो नेकी और ख़ूबी है, वो सबकी सब ख़ुदा से है। क्योंकि इन्सान चाहता है कि कुछ अपने से मन्सूब करे। इस बात के मानने में ताम्मुल करता है कि ख़ुदा ऐसा मेहरबान है कि वो इन्सान को मुफ़्त माफ़ी देता है। ये ही वजह थी कि पौलुस ने इस उसूल पर इतना ज़ोर दिया कि इन्सान महज़ ईमान से रास्तबाज़ ठहरता है। और सच-मुच तक़रीबन हर ज़माने में अंदेशा (डर) है कि ये तालीम दब जाये। इस्लाह के ज़माने में मार्टिन लूथर इस तालीम को कलीसिया के गिरने या क़ायम होने की कसौटी (मेयार) कहता था।

मज़कूर बाला यानी ईमान से रास्तबाज़ ठहरने की तालीम को साबित करना बाअज़ों के नज़्दीक पौलुस का ख़ास मक्सद था। और लोग कहते हैं कि ग़ैर क़ौम और यहूदी मसीहियों के दर्मियान सुलह कराना पौलुस का ख़ास मक्सद था। और इस लिहाज़ से इस ख़त का मर्कज़ बाब 9 से 14 तक है।

सेहत ख़त

सिर्फ़ आख़िरी दो अबवाब के बारे में कुछ शक और मुबाहिसा है। और इस की वजह ये है कि कलमा तम्जीद जवाब 16:25 से 27 में मुन्दरज है। बाअज़ नुस्खों में मुख्तलिफ़ मुक़ामों पर है। यानी बाअज़ों में 14:24 के बाद। मारशियां ने इस को बिल्कुल छोड़ा। यानी ना 14 बाब के आख़िर में और ना 16 बाब के आख़िर में रखा। पस बाअज़ों की राय है कि पौलुस ने 14 बाब के आख़िर में अपना ख़त ख़त्म किया और कुछ नहीं लिखा। लेकिन बाअज़ ये समझते हैं कि पहली दफ़ाअ पौलुस ने 14 बाब पर ख़त को

तमाम किया। लेकिन बाअदा (बाद में) दूसरे मौक़े पर 15, 16 बाब को बढ़ाया। इसलिए दोनों जगहों पर तमजीदी कलमा आया है। दूसरी राय ये है कि 16 बाब किसी और ख़त का ततिम्मा (किसी चीज़ का हिस्सा) है। मसलन इफ़िसुस के ख़त का, क्योंकि जो नाम इस में मज़कूर हैं मसलन फीबी वग़ैरह इफ़िसुस के मुताबिक़ हैं। मगर बरअक्स इस के नामों की फ़ेहरिस्त से ज़ाहिर है कि क़रीबन सब रोमी नाम हैं। और एक नाम भी ऐसा नहीं जो इफ़िसुस के मालूमा बाशिंदा का हो। सबसे अच्छे नुस्खों में ये तमजीदी कलमा 16 बाब के आख़िर में है इसलिए शक की कोई माकूल वजह नहीं कि इन दो अबवाब का मुसन्निफ़ पौलुस ना हो।

इस दीबाचे के आख़िर में हम इस ख़ास बात पर ज़ोर देना चाहते हैं कि शुरू ही से मसीह की क्रियामत (मुर्दों में से जी उठना) के सबूत कैसे पुख़्ता थे। क्योंकि यहां पौलुस मसीह की क्रियामत (मुर्दों में से जी उठना) के तक्ररीबन पच्चीस साल बाद बयान करता है कि ये क्रियामत मसीहियों में एक मुसल्लिमा (मानी हुई, हक़ीक़त) बात और उनकी बुनियाद है। (1:4, 4:25, 5:10, 6:4, 7:4, 8:34, 14:9) चुनान्चे ताज्जुब की बात नहीं कि शुरू ही में उसने कहा कि “मुर्दों में से जी उठने के सबब कुद्रत के साथ ख़ुदा का बेटा ठहराया गया।”

तक्रसीम मज़मून

(1) 1:1 से 17, दीबाचा जिसमें दो हिस्से हैं :-

(अ) 1:1 से 7 तक सलाम

(ब) 1:8 से 17 तक बाइस तहरीर

(2) 11:18 से 3:20 तक, ये सब बनी-आदम ख़्वाह यहूदी हों ख़्वाह ग़ैर क़ौम गुनेहगार हैं।

(अ) 11:18 से 37, ग़ैर क़ौम

(ब) 2:1 से 16, यहूदियों को शामिल करता है।

(ज) 2:17 से 3:27 से 3:20 ख़ूसूसुन यहूदी क़सूरवार हैं।

(3) 3:21 से 8:39 तक, खुदा की नजात सब मोमिनीन के लिए।

(अ) 3:21 से 5:21 तक, मोमिनीन से रास्तबाज़ी मन्सूब होती है।

(ब) 6:1 से 8:16 तक, मसीह की क्रियामत और रूह-उल-कुदस के आने के ज़रिये से मोमिनीन अंदरूनी पाकीज़गी हासिल करते हैं।

(ज) 10:17 से 39, कामिल मख़लिसी

(4) 9:1 से 11, 26, यहूदी और ग़ैर क़ौम मसीहियों में इलाही इंतज़ाम के मुताबिक़ रिश्ता।

(5) 12:1 से 15:13 अमली फ़राइज़ जो खुदा की मेहरबानी पर मबनी हैं।

(अ) 12:1 से 21 आम नसीहतें, ख़ासकर रुहानी नेअमतों के बारे में फ़िरोतनी

(ब) 13:1 से 7, सरकार की फ़रमांबर्दारी

(ज) 13:8 से 12 मसीह की मुहब्बत और उस की दूसरी आमद की इंतज़ारी सब फ़राइज़ के लिए मुहर्रिक है।

(द) 14:1 से 15:7 बाहमी बर्दाश्त

(ह) 15:1 से 13, अहदे-अतीक़ में भी इस यगानगत का ज़िक़ है।

(6) 15:14 से 33, आख़िरी नसीहतें और रोम को जाने का इश्तियाक़

(7) 16 बाब, मुख़लिफ़ अश्खास को सलाम, और तफ़र्रका के ख़िलाफ़ नसीहत

पौलुस की असीरी (क़ैद) के ख़ुतूत

इफ़िसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों, और फ़िलेमोन की तरफ़ के ख़ुतूत पौलुस ने अपनी असीरी (क़ैद) के वक़्त लिखे। चुनान्हे इन आयात से ज़ाहिर है कि जब पौलुस ने ये ख़त लिखे वो क़ैद में था। इफ़िसियों 3:1, 4:1, 6:20, फिलिप्पियों 1:7, 4, 13, 14, 17

कुलुस्सियों 4:17, फ़िलेमोन 1 आयत, और आमाल की किताब से साफ़ ज़ाहिर है कि वो दो दफ़ाअ कैद हुआ। पहले केसरिया में। और फिर रोम में। अब ये सवाल रहा कि किस असीरी (कैद) के वक़्त उसने ये ख़त लिखे। बाअज़ों का तो ये ख़याल है कि उसने इफ़िसियों, कुलुस्सियों, और फ़िलेमोन के ख़त पहली असीरी (कैद) के वक़्त केसरिया से लिखे। और फिलिप्पियों की तरफ़ का ख़त दूसरी असीरी (कैद) के वक़्त रोम के कैदखाने से। मगर फिलिप्पियों 1:13, 4:22 की शहादत (गवाही) का गलबा इस तरफ़ है कि उसने चारों ख़तूत रोम से लिखे और इनमें से फिलिप्पियों को पहले लिखा।

इफ़िसियों की तरफ़ का ख़त

मुसन्निफ़

क़दीम कलीसिया को पौलुस के मुसन्निफ़ होने के बारे में कुछ शक ना था। गनातियुस ने अपने एक ख़त में 100 ई° में इस को पौलुस से मन्सूब किया। और इस से इक़तिबास किया है। पोलीकार्प रोम का क्लीमेंट वग़ैरह इस से इक़तिबास करते हैं। उस वक़्त से लेकर सब मुसन्निफ़ों का इतिफ़ाक़ इसी पर है। अलबत्ता उन्नीसवीं सदी में बाअज़ जर्मन आलिमों ने समझा कि ये ख़त पौलुस का नहीं। और इस इन्कार की ये वजूहात बताईं। कुलुस्सियों के ख़त के मुशाबेह होने से ये नतीजा निकालते हैं कि ये इस ख़त की एक जाली नक़ल है। मगर हक़ीक़तन मुशाबेह इस सबब से है कि ये दोनों ख़तूत एक ही वक़्त और मौक़े पर लिखे गए। फ़र्क़ भी इन ख़तों में बहुत है। चुनान्चे आजकल बहुत थोड़े लोग ये एतराज़ करते हैं।

तहरीर का वक़्त

ऊपर ज़िक्र हो चुका है कि ये ख़त रोम में लिखा गया 60 ई° या 62 ई° में।

मकतूब अलय्या

पौलुस इफ़िसुस में तीन साल तक रहा था। (आमाल 19:8, 10) और ज़रूर बहुत मसीहियों से वाक़िफ़ हो गया होगा। लेकिन इस ख़त में वो.... किसी का नाम नहीं लेता।

और ना किसी को नाम लेकर सलाम भेजता है। इलावा इस के तीसरे बाब की पहली चार आयतों में उनसे ऐसा मुखातिब होता है गोया वो उनसे नाआशना (नावाक़िफ़) है। मासिवाए इस के हमें ये भी मालूम है कि इफ़िसुस की कलीसिया में बहुत यहूदी मसीही भी थे। (आमाल 18:19, 19:8, 13 से 16) मगर इस ख़त में सिर्फ़ ग़ैर क्रौम मसीहियों का लिहाज़ किया गया है। इन सारी बातों से ये मानना मुश्किल है कि ये ख़त सिर्फ़ इफ़िसुस की कलीसिया को लिखा गया था। लेकिन ये मुश्किल बहुत कुछ इस तरह से हल हो जाती है, कि वो सबसे अच्छे नुस्खों (यानी अ और ब) में ये अल्फ़ाज़ “इफ़िसुस के” (1:1) पाए नहीं जाते। और पहली तीन सदियों के मुसन्निफ़ों की तफ़्सीरों से ज़ाहिर है कि अच्छे नुस्खों में ये अल्फ़ाज़ उस वक़्त मौजूद ना थे। इस की वजह ये होगी, कि ये ग़शती ख़त (ग़शत करने वाला, फिरने वाला) था जो ना सिर्फ़ इफ़िसुस बल्कि दीगर मुक़ामों की ग़ैर क्रौम कलीसियाओं के लिए भी लिखा गया। और जब एक कलीसिया से दूसरी कलीसिया की तरफ़ रवाना किया जाता तो उस जगह में इस नई कलीसिया का नाम दर्ज किया जाता। या ये कि सारा ख़त नक़ल किया जाता। जैसे कुलुस्सियों 4:16 में लादुकिया के ख़त का ज़िक्र आता है ग़ालिबन वो ये ही ख़त है। इस ख़त की सारा तर्जुमा मज़कूर बाला उमूर के इस राय के मुताबिक़ हैं।

मज़ामीन

इस के दो बड़े हिस्से हैं :-

(अ) पहले तीन बाब में मसीह और उस की कलीसिया के बारे में तालीम

(1) 1:1 से 13, सलाम और वो बरकतें जो ख़ुदा के अज़ली मक़्सद के मुताबिक़ कलीसिया को मिलती हैं।

(2) 1:15 से 23, पौलुस की ये दुआ कि ये बरकतें कलीसिया फ़ील-वाक़ेअ हासिल करे।

(3) 2 बाब, कलीसिया के बारे में जो ख़ुदा का ये मक़्सद है, वो यहूदियों और ग़ैर क्रौमों दोनों के लिए है। दोनों से मिलकर एक इमारत बनती है।

(4) 3 बाब 1 से 13, ये रूह की तासीर से वकूअ में आता है और नबी और रसूल इस रूह के औज़ार हैं।

(5) 3:14 से 21, इसलिए पौलुस उनके लिए खास दुआ करता है, कि रूह के वसीले खुदा की सारी भर पूरी को पहचानें।

(ब) (1) 4:1 से 16, यहां पहले हिस्से की तालीम की बुनियाद पर अमली नसीहतें आती हैं। कलीसिया की अमली यगानगत।

(2) 4:17 से 5:21 तक, ऐसे गुनाहों से परहेज़ करने की नसीहत कि जिनसे यगानगत की रूह रंजीदा हो।

(3) 5:22 से 6:9 तक, चंद फ़िर्को में इन नसीहतों की मिसालें मियां बीवी, वालदैन, औलाद, मालिक और गुलाम

(4) 6:10 से 24 तक, खुदा के मोअस्सर इस्लाह के ज़रिये रुहानी लड़ाई लड़ना

इस खत के खास खयालात

खुदा का इरादा, कलीसिया की यगानगी

(1) खुदा के साथ (2) और हर उज़ू के साथ फ़ज़ल। ये लफ़ज़ 13 दफ़ाअ आता है।

आस्मानी जगह (1:3, 20, 2:6, 3:10, 6:12)

भर पूरी (1:10, 23, 3:19, 4:13)

राज़ (1:9 3:3, 4, 9, 5:32, 6:19)

इनमें से बाअज़ खयालात की मुशाबहत दूसरे मुक़ामों से पाई जाती है। (आमाल 20:17 से 38) कुलुस्सियों में जैसा कि ज़िक्र हुआ। और पतरस का पहला खत। ये मुशाबिहतें इत्तिफ़ाकी हैं और रूह की हिदायत के आसार हैं।

फिलिप्पियों का खत

मुसन्निफ़

क़दीम कलीसिया में मुसन्निफ़ के बारे में कुछ शक नहीं हुआ। पोलीकार्प अपने एक ख़त में जो उसने फिलिप्पियों को लिखा ये कहता है, कि पौलुस ने तुम्हें एक ख़त लिखा था। मोरातोरी फ़ेहरिस्त में ये पौलुस के ख़तों की फ़ेहरिस्त में मुन्दरज है। एक क़दीम ख़त में जो इज़ार सानी के वक़्त गाल की कलीसिया ने दूसरी कलीसियाओं की तरफ़ लिखा। इस ख़त से हवाला दिया गया है जिससे ज़ाहिर है कि उस वक़्त ये ख़त इल्हामी समझा गया था, उन्नीसवीं सदी में यूरोपियन आलिमों ने इस पर एतराज़ किया। इस बिना पर कि ख़त में गनास्तिक बिदअत के आसार पाए जाते हैं। यानी 2:6 से 9 तक। जहां मसीह के आला दर्जे का ज़िक्र है। और मोअतरिज़ (एतराज़ करने वाले) समझते थे कि यहां मसीह की सर्फ़राज़ी का ज़िक्र गनास्तिक तालीम के जवाब में है। हालाँकि पौलुस के ज़माने तक गनास्तिक तालीम मुरव्वज ना हुई थी। मगर आजकल सब लोग मानते हैं कि पौलुस के ज़माने में ये तालीम मशहूर हो गई थी। और फ़ील-वाक़ेअ आजकल ये एतराज़ मतरूक (तर्क होना) हो गए हैं।

मज़कूर बाला बैरूनी गवाही की ताईद में ये अंदरूनी शहादत (गवाही) भी मौजूद है। मसलन तर्ज़-ए-कलाम, फ़लीप्पी की कलीसिया के ताल्लुकात पौलुस से जो आमाल की किताब से ज़ाहिर हैं। और पौलुस की वहां के मसीहियों पर पिदराना शफ़क़त (1:27, 2:16 से 25, 4:1 से 3, 10, 15 से 18)

मकतूब अलय्या

फिलिप्पी शहर मक़िदूनिया के साहिल पर वाक़ेअ था। इस बड़ी सड़क जो रोमी सरकार ने बनाई थी। जिस पर फ़ौजों की आमद व रफ़्त और तिजारत बहुत होती थी। इस शहर का असली नाम कुरीनी डक्स (यानी पानी के चश्मे) था लेकिन सिकंदर आज़म के बाप फिलिप्पुस ने इस शहर को तौसीअ दी और अपने नाम से मौसूम किया। रोमियों के ज़माने में आगस्तीन कैसर ने इसे रोमी बस्ती बनाया। वहां के बाशिंदे दीनी सरगर्मी के बाइस मशहूर थे। और आज तक बहुत पुराने कुतबे मौजूद हैं। जिनमें वहां के देवताओं के क्रिस्से कुंदा हैं। पौलुस के इस जगह आने और यहां की कलीसिया की बुनियाद डालने का ज़िक्र आमाल के 16 बाब में मुन्दरज है। इस जगह पौलुस और सीलास कैद हुए थे, मगर वहां से रवाना होने से पेशतर चंद आदमी मसीही हो गए थे। मसलन लुदिया अर्गवान फ़रोश और दारोगा जेल का ख़ानदान। और ये बात क़ाबिले लिहाज़ है कि आमाल 16 बाब के शुरू में ज़मीर इस्म का इस्तिमाल करता है, जिससे ज़ाहिर है कि मुसन्निफ़ वहां मौजूद था। लेकिन इस बाब के आख़िर में बीसवें बाब तक यानी जब पौलुस फिलिप्पी से

गैर-हाज़िर था। ज़मीर हम नहीं आया जिससे खयाल ग़ालिब है, कि लूका फिलिप्पी में पौलुस की गैर-हाज़िरी के वक़्त रहा होगा।

इस शहर में यहूदी बहुत थोड़े थे। यहां तक कि उनका कोई इबादतखाना ना था। बल्कि दरिया के किनारे पर दुआ के लिए चंद शख्स जमा होते थे। (आमाल 16:13) और इस ख़त के मज़मून से पता लगता है कि फिलिप्पी की कलीसिया में से यहूदी मोअल्लिम जो कुरिन्थस और गलतिया में पौलुस की मुखालिफ़त करते थे।... सिर्फ 3:2 में इस क्रिस्म की तालीम के ख़िलाफ़ कुछ आगाही पाई जाती है। और पौलुस की जो बे-तकल्लुफ़ उल्फ़त इन मसीहियों से थी। इस से ज़ाहिर है कि पौलुस का इनसे कुछ इख़्तिलाफ़-उल-राए ना था। सिर्फ चंद खफ़ीफ़ (मामूली) कुसूरों से उनको आगाह करता है। (2:14, 3:17 से 19, 4:2)

तहरीर का वक़्त और मौक़ा

ज़ाहिर है कि ये ख़त रोम के कैदखाने से लिखा गया। (1:7, 13, 14, 17) अगरचे बाअज़ आलिमों ने समझा कि ये केसरिया के कैदखाने से तहरीर हुआ। (आमाल 23 बाब) लेकिन जैसा कि हम ज़िक्र कर आए हैं। ग़ालिबन रोम के कैदखाने से लिखा गया। क्योंकि फिलिप्पियों 1:13, 4:22 में कैसर के महल का ज़िक्र है। बाअज़ खयाल करते हैं कि ये ख़त असीरी (कैद) के चारों ख़तों से पहला ख़त है। क्योंकि इस के मज़ामीन रोमियों के ख़त से जो इस से पेशतर लिखा गया बहुत मिलते हैं। मगर बाअज़ों की राय है कि ये उनमें पिछला ख़त है। क्योंकि पहले बाब से ज़ाहिर है कि वो कैदखाने में रखा गया। हालाँकि आमाल की किताब के आखिर से ज़ाहिर है, कि पौलुस रोम में पहुंचने के बाद मुद्दत तक अलैहदा किराये के घर में रहा (28:30) अल-ग़ार्ज़ 61 ई° और 62 ई° के माबैन (दर्मियान) किसी वक़्त ये ख़त लिखा गया।

तक्सीम मज़ामीन

1:1 से 11 दीबाचा, और कुलुस्सियों की अच्छी हालत पर शुक्रिया।

1:12 से 30, पौलुस के हाल का ज़िक्र और उनके साथ हम्दर्दी।

2:1 से 18, मेल मिलाप और बर्दाश्त की नसीहतें मसीह के नमूने पर। 2:19 से 30, पौलुस और उस के साथियों का हाल।

3 बाब, पौलुस अपने तजुर्बो से बताता है कि शरीअत से नहीं बल्कि मसीह ही से नजात हो सकती है। जो मसीह के हैं वो मसीह की शराअ पर चलें।

4:1 से 9, चंद आखिरी सलाम और ख़ास अश़्खास का ज़िक्र।

4:10 से 23, फिलिप्पियों को याद दिलाता है कि तुमने मेरी ख़ास मदद की जिसके लिए मैं हमेशा शुक्रगुज़ार हूँ।

ख़ास ख़यालात

मसलन ख़ुदा की वफ़ादारी कि वो अपने बर्गज़ीदों की हिफ़ाज़त बावजूद तकलीफों के ज़रूर करेगा। 6, 7, 18, 29, 30 दूसरी आमद की बाबत पौलुस अब समझता है कि इस से पेशतर शायद मुझे मरना होगा। 1:19 से 26

इन्जील की तरक्की (1:12, 2:16) मसीह की उलूहियत (2:5 से 11) शरीअत और मसीह का मुक़ाबला (3:13 से 14) मसीह में ख़ुश रहना। (1:26, 2:2, 17, 18, 3:3, 4:4)

कुलुस्सियों की तरफ़ का ख़त

मुसन्निफ़

इस ख़त के मुसन्निफ़ के बारे में भी क़दीम कलीसिया में कुछ शक नहीं हुआ। लेकिन उन्नीसवीं सदी के बाअज़ आलिमों ने चंद वजूहात से पौलुस के मुसन्निफ़ होने पर एतराज़ किया। मगर ये वजूहात जैसा आगे ज़ाहिर किया जाएगा नापायदार हैं। बर्नबास के ख़त और क्लीमेंट रोमी के ख़त, अगनातियुस के ख़त, जस्टिन शहीद की तस्नीफ़ात में इस ख़त के जुम्ले पाए जाते हैं। क़रीबन 175 ई॰ में आइरीनियस की तस्नीफ़ात में और मोरातोरी फ़ेहरिस्त में इस का साफ़ ज़िक्र है। मारश्यान बिद्अती ने भी इस का ज़िक्र किया है।

मकतूब अलय्या

कुलुस्से शहर की कलीसिया को लिखा गया। ये शहर फ़िरोगिया के इलाक़े में दरिया-ए-लोकस के जुनूबी किनारे पर वाक़ेअ था। इस वादी के नज़दीक एक ख़ूबसूरत

ऊंचा पहाड़ 70 हजार फुट ऊंचा था। इस इलाके में बहुत ज़लज़ले होते थे और उनसे अक्सर बड़ी वीरानी होती थी। लेकिन ज़मीन की ज़रखेज़ी के बाइस बहुत लोग वहां रहते थे। और ऊनी कपड़े वहां बुनते थे। इस के नज़दीक तक्ररीबन बारह मील के फ़ासिले पर हीरापौलुस और लुदुकिया के शहर थे। लुदुकिया तक्ररीबन 250 क° म° माबाअद हुआ। और उसने कुलुस्से की रौनक को मांद कर दिया। अंतीअखियुस आजम ने इस इलाके में दो हजार यहूदी खानदान बाबिल के इलाके में लाकर बसाए। और ज़मीन की खूबी के बाइस और बहुत यहूदी भी वहां आके आबाद हो गए। यहां तक कि तल्मूद में लिखा है कि फिरोगिया के चश्मों और ताकिस्तानों ने बनी-इसाईल के दस फ़िक्रों को खराब किया।

किस ने वहां की कलीसिया की बुनियाद डाली? पौलुस बानी ना था। क्योंकि इस खत के दूसरे बाब की आयत में लिखा है कि तुमने मेरा चेहरा कभी नहीं देखा। लेकिन खयाल ग़ालिब है कि इपफ़्रास जिसका ज़िक्र 1:7, 4:12 में है। उनके ईमान लाने का वसीला हुआ। और ये इपफ़्रास ग़ालिबन पौलुस का शागिर्द था। अक्सर मसीही ग़ैर अक्वाम थे। लेकिन यहूदी मसीहियों का शुमार भी कुछ कम ना था। मज़कूर बाला बयान से मालूम किया होगा कि यहां के यहूदी अपने दीन के बहुत पाबंद ना थे। इस का दोहरा नतीजा हुआ।

अव्वल : ये कि वो बिला-तास्सुब इन्जील की बात सुनने को तैयार थे।

दोम : वो दीगर फैलसूफ़ों की तालीम कुबूल करने को भी तैयार थे।

चुनान्चे खत के मज़ामीन से ज़ाहिर है कि इनमें यहूदी और मशरिकी ग़लत तालीम सब फैल गई थी। ग़ालिबन उस को रोकने की ग़र्ज़ से ये खत लिखा।

तहरीर की जगह और वक़्त

कुलुस्सियों 4:18 से ज़ाहिर है, कि पौलुस इस खत की तहरीर के वक़्त कैद में था। जैसे कुलुस्सियों के खत के दीबाचे में बताया गया। ये खत या तो केसरिया के कैदखाने से या रोम के कैदखाने से लिखा गया। लेकिन तक्ररीबन यक़ीन है कि वो रोम की कैद के वक़्त 61 ई° में तहरीर हुआ। (आमाल की किताब का दीबाचा आमाल 28 30, 31)

इस खत की खास बातें ये हैं

गलत तालीम की कैफ़ीयत बाअज़ समझते हैं कि एक यहूदी फ़िर्का आसीनी नाम से ये तालीम मसीहियों में आई थी। जिनकी ख़ास ख़ुसूसियत थी।

- (1) वो औरों से अलग रहते थे।
- (2) बहुत रियाज़त कश थे।
- (3) फ़रिश्तों के बारे में ख़्याली तालीम देते थे।

मगर अग़लबन इस फ़िर्के से कुलुस्सियों ने तालीम नहीं पाई क्योंकि कुलुस्से मसीही अलग रहने वाले ना थे। और इस फ़िर्के की तालीम ज़्यादातर फ़िलिस्तीन के मुल्क में महदूद रही। शायद फ़िरोगिया तक नहीं पहुंची। मामूली तास्सुब जिससे यहूदी अपनी रसूम पर ज़ोर देते थे। वो मशरिकी और यूनानी फ़लसफ़े से मिलकर कुलुस्से मसीहियों की तालीम की काफ़ी वजह होगी। मसलन फ़रिश्तों के बारे में (कुलुस्सियों 2:18) लिखा है कि फ़रिश्तों की इबादत ख़ाकसारी के साथ पसंद करते थे यानी वो समझते थे कि ख़ुदा तआला की जगह फ़रिश्तों की इबादत करना फ़िरोतनी में दाख़िल था। इस वक़्त यहूदियों के दर्मियान इस क़िस्म की बहुत तालीम मुरव्वज थी। और पुराने अहदनामे के चंद मुक़ामों से इस तालीम की ताईद करते थे। मसलन ख़ुरूज 23:20, 23 इस्तिस्ना 33:2, दानीएल 10, 11 बाब, नीज़ मुक़ाबला करो ग़लतियों 3:19, इब्रानियों 2:2, आमाल 7:30, 53, 1 कुरिन्थियों 6:2 वग़ैरह। इन आयतों से ज़ाहिर है कि पौलुस भी यहूदी तफ़सीर का इतना लिहाज़ करता था कि फ़रिश्तों को एक तरह से पुराने अहद नामे के दर्मियानी समझता था। बाअज़ों ने फ़रिश्तों की इबादत से ये नतीजा निकाला कि ये ख़त पौलुस के ज़माने के बाद लिखा गया। मगर मज़कूर बाला बयान से ज़ाहिर है कि पौलुस इस क़िस्म की तालीम से वाक़िफ़ था। गनास्तिक तालीम का मुफ़स्सिल बयान करना यहां बाइस तवालत (लंबा होना) होगा। हम सिर्फ़ इस पर ग़ौर करें कि पौलुस रसूल किस तरह से गनास्तिक तालीम और फ़रिश्तों के बारे में तालीम का जवाब देता है। इस का एक जवाब ये है कि मसीह मुजस्सम ख़ुदा है। पस वो फ़रिश्तों से आला। उनका ख़ालिक़ व हाकिम है। उनकी सिफ़ारिश की कोई ज़रूरत नहीं। मसीह की इबादत छोड़कर फ़रिश्तों की इबादत इख़्तियार करना यानी आला को छोड़ अदना को इख़्तियार करना ना माकूल है। (1:3 से 20:2 8, 9) इलावा अज़ीं वो जवाब में ख़ुद इनके तजुर्बों को पेश करता है कि मसीह के वसीले वो नई ज़िंदगी में शामिल हुए। (1:12 से 14, 2:1 से 14, 3:1 से 4) और कि ये ही तजुर्बा ना सिर्फ़ कुलुस्से में बल्कि रोमी सल्लनत के हर इलाक़े में मसीहियों का तजुर्बा हुआ है। इसलिए वो सर को पकड़े रहें और रियाज़त कुशी और खानों से परहेज़ वग़ैरह पर तकिया ना करें। जो एतराज़ इस ख़त के मुसन्निफ़ पर किए गए हैं वो इन दो बातों पर मबनी थे। यानी नास्तिक और फ़रिश्तों की तालीम पर। इस ख़याल से

कि ये दोनों तालीमों में पौलुस के ज़माने की नहीं। मगर आजकल सब लोग मानते हैं कि ये तालीम पौलुस के ज़माने में मुरव्वज थी।

तीसरा एतराज़ इस बिना पर किया गया कि इस का तर्ज़ तहरीर दूसरे ख़तों से कुछ मुतफ़र्रिक़ (अलग) हैं।

तक्सीम मज़ामीन

1:1-2 सलाम

1:2 से 14, दीबाचा जिसमें शुक्रगुज़ारी है कि कुलुस्से मसीही इन्जील में पायदार रहते हैं।

1:15 से 20, इस इन्जील का आगाज़ और अंजाम खुद मसीह है।

1: 21 से 29, इस में खुद पौलुस और कुलुस्से के मसीही बज़रिये दुखों के शामिल हैं।

2:1 से 3, पौलुस इनकी तरक्की के लिए दुआ करता रहता है।

2:4 से 15, मसीह में जो उनका रुत्बा और तजुर्बा हुआ है इस को याद दिला के उनको झूटे फ़ल्सफ़े से दूर रहने की नसीहत करता है।

2:16 से 23, इस झूटे फ़ल्सफ़े की चंद मिसालें मसलन रियाज़त कशी और फ़रिश्तों की इबादत।

3:1 से 4, 6 तक, अमली नसीहतें।

(1) 3:1 से 13 मसीह के साथ मर के और जी उठ के ज़मीनी बातों को छोड़ना और आस्मानी बातों को इख़्तियार करना चाहिए।

(2) 3:14 से 17, मुहब्बत और शुक्रगुज़ारी से रहना।

(3) 3:18, 4:6 तक, मियां बीवी और आक्रा नौकर के फ़राइज़।

4:7 से 18, ख़ास अश्खास को सलाम।

फ़िलेमोन की तरफ़ का ख़त

सब मुत्तफ़िक़ हैं कि कुलुस्सियों और फिलिप्पियों के ख़त का मुसन्निफ़ एक ही था।

मकतूब अलया

मज़ामीन से ज़ाहिर है कि फ़िलेमोन कुलुस्से का एक शरीफ़ मसीही था। पौलुस के ज़रिये मसीही हो गया। (19 आयत) ग़ालिबन इफ़िसुस में। पौलुस का मददगार रहा। (1 आयत) उस की बीवी अफिया और बेटा अरख़पस था। (2 आयत, कुलुस्सियों 4:17) उनके घर में कुलुस्से की कलीसिया जमा हुआ करती थी। (2 आयत) उस का एक गुलाम अनेस्मस नाम उस को छोड़कर रोम को भाग गया था शायद इतिफ़ाक़न पौलुस से मिला और पक्का मसीही बन गया।

ख़त का मक़सद ये है कि फ़िलेमोन इस गुलाम को कुबूल करे और उस से अच्छा सुलूक करे। लफ़ज़ अनेस्मस के मअनी हैं फ़ाइदेमंद और 11, 20 आयत में इस नाम के मअनी की तरफ़ इशारा करता है। ग़ालिबन पौलुस ने बहुत ऐसे शख़्सी ख़त लिखे। और नमूने के तौर पर यही किताब मुक़द्दस में दाख़िल किया गया।

सन तस्नीफ़

60 ई° और 63 ई° के दर्मियान लिखा। और अनेस्मस और तख़कस के हाथ भेजा गया।

खास ख़यालात

अव्वल : पौलुस अपने ओहदे पर ज़ोर देकर फ़िलेमोन पर इख़्तियार नहीं जताता बल्कि दोस्ताना दरख़्वास्त करता है। (8:19)

दोम : गुलामी के बारे में अगरचे गुलामी के दस्तूर पर हमला कर के इस को नाजायज़ नहीं ठहराता। लेकिन बिरादराना मुहब्बत से जो यहां मज़कूर है। ये नतीजा निकलता है कि गुलामी मसीही आज़ादगी के साथ क़ायम नहीं रह सकती। अप्सोस की बात है कि मसीही कलीसिया की तवारीख़ में बड़ी मुद्दत तक बल्कि अठारवीं सदी के शुरू तक गुलामी जायज़ समझी जाती थी।

चौपानी खत

यानी तीमुथियुस की तरफ़ दो खत और तीतुस की तरफ़ खत

मुसन्निफ़

क़दीम कलीसिया में सब लोग इन खतों को पौलुस से मन्सूब करते हैं। मगर ये सवाल पैदा होता है कि पौलुस की ज़िंदगी में वो किस मौक़े पर लिखे गए। रोम में पहुंचने से पेशतर कोई माकूल मौक़ा मालूम नहीं होता। और तीमुथियुस के पहले खत और तीतुस के खत से साफ़ ज़ाहिर है कि ये दो खत रोम से ना लिखे गए थे। बल्कि आज़ादगी के वक़्त लिखे गए ना असीरी (क़ैद) के वक़्त (1 तीमुथियुस 4:13, तीतुस 3:12) तीमुथियुस के दूसरे खत से ज़ाहिर है कि वो हाल ही में त्राओस, कुरिन्थस और तीतुस से हो कर रोम में गया था। (2 तमथीस 4:13, 20) पस अगर ये खत पौलुस के हैं तो ज़रूर वो पौलुस की उस असीरी (क़ैद) के बाद लिखे गए। जो आमाल 28 में मजकूर है। और मशहूर और मोअतबर रिवायत है कि पौलुस नेरू की ईज़ा रसानी 64 ई° और 65 ई° में हुई। अगर पौलुस रोम में 61 ई° के करीब पहुंचा। और वहां दो तीन साल रहने के बाद आज़ाद हो गया। तो मुश्किल से माबाअद सफ़र और इन खतों के लिखने का मौक़ा मिला होगा। लेकिन गालिबन वो रोम में 59 ई° में पहुंच गया। और 61 ई° में आज़ाद हो गया और 64 ई° या 65 ई° में पाई।

मजकूर बाला राय के साथ दो क़दीम गवाहियाँ मुत्तफ़िक़ हैं। एक गवाही ये है। मोरातोरी नुस्खे में लिखा है कि पौलुस ने हस्पानिया तक सफ़र किया। दोम, रोमी क्लीमेंट लिखता है कि पौलुस ने मगरिब के सिरे तक सफ़र किया। हम जानते हैं कि पौलुस ने अपनी पहली असीरी (क़ैद) से पेशतर ये सफ़र नहीं किया था। बल्कि रोमियों 15:24 से ज़ाहिर है, कि उस के दिल में हस्पानिया तक सफ़र करने का इरादा था। पस सब इस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि पौलुस की ज़िंदगी में इन खतों का मौक़ा था।

लेकिन उन्नीसवीं सदी के आलिमों ने तीन और एतराज़ किए हैं।

अव्वल : कलीसिया की जो तर्तीब इन खतों में नज़र आती है। पौलुस के ज़माने में इतनी तरक्की ना की होगी। मसलन खादिमान दीन, डेक्कन्स, बेवा खाने वगैरह मगर आमाल की किताब के साथ मुक़ाबला करने से मालूम होता है, कि पौलुस के ज़माने से पेशतर ही डेक्कनों और बेवाओं की ख़बर-गीरी का इतिज़ाम कायम हो चुका था। रोमियों

16:1 में डेक्कन्स का ज़िक्र आता है। और पौलुस के दूसरे खतों में कलीसिया का इन्तिज़ाम कुछ पुख्ता हो जाता है। और अगनातियुस के खुतूत 110 ई° के हैं। कलीसियाई इन्तिज़ाम को आला तरक्की की हालत में दिखाते हैं। मसलन इन चौपानी खतों में बुजुर्गों और उस्तफ़ों के दर्मियान कुछ फ़र्क़ नहीं किया गया। लेकिन अगनातियुस के ज़माने में ये फ़र्क़ बिल्कुल क़ायम हो चुका था। और जो कलीसियाई इन्तिज़ाम चौपानी खतों में पाया जाता है। वो आमाल की किताब के ज़माने और अगनातियुस के ज़माने के बैन-बैन (दर्मियानी) का है।

दोम : इन खतों में जो नास्तिक तालीम रोकी गई है वो पौलुस के ज़माने की नहीं। इस के जवाब में कुलुस्सियों के खत का दीबाचा देखो। इन खतों में जो ज़िक्र है। इस ज़िक्र के मुशाबेह है (1 तीमुथियुस 1:3, 4, 19 4:1 से 3, 7, 6:8, 2 तीमुथियुस 2:16 से 18, 3:1 से 9, 4:3, 4, तीतुस 1:1, 14, 16 3:9, कुलुस्सियों 2:8, 18 से 24) इस में कुछ शक़ नहीं कि पौलुस के दिनों में नास्तिक तालीम इस दर्जे तक पहुंच गई थी।

सोम : तर्ज़-ए-कलाम पौलुस का नहीं। बहुत अल्फ़ाज़ ऐसे हैं जो पौलुस के दूसरे खतों में पाए नहीं जाते। लेकिन उमूमन ये अल्फ़ाज़ ऐसे हैं जो ख़ास मज़ामीन के मुताबिक़ हैं। मसलन सिकंदर ठठेरा, जादूगरी वग़ैरह बाअज़ ऐसे अल्फ़ाज़ हैं जो आदमी के.... तर्ज़-ए-कलाम में चंद सालों में दख़ल पा जाते हैं।

इलावा अज़ीं आर्येनियुस, क्लीमेंट असकंदरी, तरतलियान, यूसीबस वग़ैरह सब के सब इन खतों को पौलुस का समझते थे। और इस से पेशतर पोलीकार्प क्लीमेंट रूमी, जस्टिन शहीद इस से कुछ इक्तिबास करते हैं। अलबत्ता मारश्यान ने इन खतों को रद्द किया। लेकिन ख़ास तालीम की वजह से जैसा कि और नविशतों को जो उस की तालीम के ख़िलाफ़ थे।

जगह और वक़्त

मज़कूर बाला बयान से ज़ाहिर है कि 61 ई° और 64 ई° के दर्मियान ये खत लिखे गए। तीमुथियुस का पहला खत और तीतुस का खत मक्किदूनिया या आसीया के किसी मुक़ाम से लिखे गए और तीमुथियुस का दूसरा खत रोम से शहीद होने से कुछ पेशतर (4:6)

मकतूब अलया

तीमुथियुस का ज़िक्र आमाल 16:1, 3 में आता है। इस की माँ का नाम युनिके और नानी लूइस थी (2 तीमुथियुस 1:5) बाप यूनानी था। पौलुस के ज़रिये गालिबन मसीही हुआ क्योंकि पौलुस उसे अपना बेटा कहता है। (1 तीमुथियुस 1:2, 2 तीमथस 3:14, 15) इस के बाद चंद मौकों पर पौलुस के सफ़रों में इस का ज़िक्र आता है। और चंद खतों में वो पौलुस का शरीक है। (आमाल 17:4, 19:22, 20:3, 4, 1 थिस्सलुनीकियों 3:2, 6, फिलिप्पियों 1:1 फ़िलेमोन 1, कुलुस्सियों 1:1 इब्रानियों 13:23)

रिवायत है कि तीमुथियुस दोमतियान की ईजा रसानी के वक़्त 96 ई° में शहीद हुआ। खतों में जो चंद इशारात इस तरफ़ हैं उनसे मालूम होता है कि वो शर्मिला सा आदमी था। (1 तीमुथियुस 1:18, 4:12, 6:11 से 14, 20, 2 तीमुथियुस 1:4, 6 से 8, 2:2, 3, 3:14, 15, 4:1, 2)

तीतुस, (गलतियों 2:1, 3) 2 कुरिन्थियों 2:12, 7:6 से 15, 8:16, 23, 12:18 (2 तीमुथियुस 4:10)

इन हवालों से ज़ाहिर है कि तीतुस ग़ैर क्रौम से मसीही हुआ। पौलुस ने इस को खास पैग़ाम देकर कुरिन्थस की कलीसिया के पास भेजा। और उसने वहाँ अच्छा काम किया। आख़िरी आयत से साफ़ मालूम नहीं होता कि जब तीतुस व लमात्या को गया तो वो पौलुस को छोड़कर अपनी मर्ज़ी से गया या पौलुस की तरफ़ से गया।

तीमुथियुस की तरफ़ पहला ख़त

तक्रसीम मज़ामीन

1 बाब, सलाम के बाद तीमुथियुस को याद दिलाता है कि इफ़िसुस में रहे। ताकि झूटे मोअल्लिमों को रोके। इन झूटे मोअल्लिमों के खिलाफ़ अपने रुहानी तजुर्बों और इंजीली मक्सद को पेश करता है।

बाब 2, दुआ और सिफ़ारिश के बारे में, इस में मर्दों और बीवीयों का फ़र्ज़।

बाब 3, खादिमान दीन के बारे में यानी प्रेसबेटेरों और डेक्कनों के।

बाब 4, झूटे मोअल्लिम बरपा होंगे और उनसे क्या सुलूक करना चाहिए।

बाब 5, कलीसिया के इंतज़ाम के मुताल्लिक चंद आम हिदायात।

बाब 6, नौकरों, दौलतमंदों और झूटे मोअल्लिमों के बारे में।

तीमुथियुस का दूसरा खत

1 बाब, सलाम के बाद तीमुथियुस को हौसला दिलाता और अपनी तकलीफों और हालत तन्हाई का नमूना पेश करता है।

2 बाब, तीमुथियुस को उभारता है कि बर्दाश्त, दिलेराना इकरार, पाकीज़गी और नर्मी और गर्मी से काम ले (चंद तश्बीहें पौलुस ने यहां इस्तिमाल की हैं। मसलन सिपाही, पहलवान, ज़मीनदार, घर के बर्तन, महर और कारीगर)

3 बाब, खराब ज़माने की आगाही, और इस के लिए दो नसीहतें पेश करता है। मेरे दुखों को याद रख। और पाक नविशतों की हिदायत पर चल।

3 बाब, गोया वसीयत है कि तीमुथियुस पौलुस की तरह आखिर तक मर्दानगी कर चंद भाईयों के बारे में हिदायात और रोम में पौलुस का हाल।

तीतुस का खत

1 बाब, सलाम के बाद तीतुस के कुरिन्थस में मुकर्रर किए जाने का मंशा, खादिमान दीन को किस तरह से मुकर्रर करना और झूटे मुअल्लिमों से एहतियात।

2 बाब, इन्जील की बरकतों का वास्ता देकर मुख्तलिफ़ दर्जों के मसीहियों को नसीहत करता है।

3 बाब, मसीह में रास्तबाज़ ठहरने की बुनियाद पर नेक आमाल की तरफ़ उभारता है।

चंद खास खयालात

सही तालीम का मुजम्मल बयान। (1 तीमुथियुस 1:5, 2:4 से 6, 3:16), (2 तीमुथियुस 1:13, 2:19), (तीतुस 1:9, 2:11 से 14, 3:4 से 8)

झूटी तालीम का ज़िक्र। (1 तीमुथियुस 1:3 से 7, 19, 4:1 से 4:1 से 4, 7, 6:3 से 5, 20), (2 तीमुथियुस 2:16, 17, 23, 3:1 से 9)

(तीतुस 1:10 से 16, 3:9 से 11)

तमजीदी कलिमात। (1 तीमुथियुस 1:17, 6:15, 16), (2 तीमुथियुस 4:18)

पौलुस का अपना ज़िक्र। (1 तीमुथियुस 1:3, 11 से 16), (2 तीमुथियुस 1:8 से 12, 3:8 से 11, 4:6 से 17)

तीमुथियुस का शर्मिला-पन। (1 तीमुथियुस 1:18, 4:6, 12, 14 से 16, 6:11 से 14, 20), (2 तीमुथियुस 1:4, 8, 2:1, 3, 15, 3:14, 15, 4:2, 1)

खादिमान दीन का दर्जा। (1 तीमुथियुस 3 बाब), (तीतुस 1:5 से 9)

इन आयात में उस्कुफ़ (सरदार पादरी) और प्रस्बेटरी यकसां हैं। बाअज़ों की राय है कि तीमुथियुस और तीतुस खुद इफ़िसुस और कुरिन्थस के गोया उस्कुफ़ थे।

मसीह की दूसरी आमद। (1 थिस्सलुनीकियों 4:15), (2 कुरिन्थियों 5:1 से 5 तक) पौलुस का खयाल था कि मैं मसीह की दूसरी आमद तक शायद जीता रहूँगा (फिलिप्पियों 1:21 से 25) उस को पता लगा कि उस आमद से पेशतर मरूँगा। (2 तीमुथियुस 4:6 से 8) जो उस का आखिरी खत था। उस को पूरा यक़ीन हुआ कि मुझे शहीद होना पड़ेगा। ताहम मसीह की आमद के दिन पर खास नज़र है।

इब्रानियों की तरफ़ का खत

मुसन्निफ़

क्रदीम ज़माने से ये शहादत (गवाही) चली आई है, कि ये रसूली ज़माने का और इल्हामी तस्वीफ़ है। मसलन रोम का क्लीमेंट जो पहली सदी का था। इस में से बहुत कुछ इक़्तिबास करता है। और नीर तरतलियान औरीजन और असकंदरी क्लीमेंट वगैरह। तो भी शुरू से इस बारे में शक रहा कि मुसन्निफ़ कौन था। चुनान्चे औरीजन कहता है, “अलबत्ता क्रदीम मसीहियों ने बेसबब इसे पौलुस से मन्सूब नहीं किया होगा।” लेकिन जिसने

हकीकतन ये खत लिखा उसे खुदा ही जानता है। इस शक की वजह से मगरिबी कलीसिया ने आगस्तीन के ज़माने तक इस खत की इतनी कद्र ना की लेकिन मशरिकी कलीसिया में लोग इस की बड़ी कद्र करते थे। इसलिए कई आदमियों से ये मन्सूब किया गया। मसलन पौलुस से। इस की ताईद इस तरह होती है कि सिकंदरिया के बुजुर्ग पंतेनूस, क्लीमेंट, डाओसीआस वगैरह इसे पौलुस की तस्नीफ़ बताते हैं। यूसीबस एक मुक़ाम में कहता है कि पौलुस ने इस को इब्रानी में लिखा। दूसरी जगह में इस पर कुछ शक करता है।

पौलुस के खतों की फ़ेहरिस्त में अक्सर पाया जाता है। मगर इस राय के खिलाफ़ ये उमूर हैं कि और नुस्खों में वो पौलुस के खतों से अलग है। और आर्येनियस अगरचे पौलुस के खतों की तरफ़ बारहा इशारा करता है। इस की तरफ़ इशारा नहीं करता। इस खत का तर्ज़-ए-कलाम पौलुस के मुवाफ़िक़ नहीं। इस का नाम इस पर नहीं। वो तीमुथियुस को भाई कहता है। हालाँकि दूसरे खतों में वो बेटा कहलाता है। (इब्रानियों 13:23)

बाअज़ इसे क्लीमेंट रोमी की तस्नीफ़ समझते हैं। मगर इस की ताईद बहुत नहीं होती और खुद क्लीमेंट इस का इक्तिबास ऐसा करता है जैसे इल्हामी किताब से।

एक और राय है कि अप्पोलूस मुसन्निफ़ था। इस आदमी का ज़िक्र आमाल 18 और 19 अबवाब में है। इस से ज़ाहिर है कि वो सिकंदरिया का रहने वाला और नविशतों में माहिर और बड़ा मुबाहिस (मुनाज़िर) था। और इस खत का मुसन्निफ़ कुछ इसी क्रिस्म का शरख़ होगा।

बर्नबास को भी मुसन्निफ़ बताता है। इस की ताईद में तरतलियान लिखता है कि ये खत बर्नबास का है और कि हमारी कलीसिया यानी शुमाली अफ़्रीका की कलीसिया में ये बात मशहूर है। इस के साथ भी मुत्तफ़िक़ है कि बर्नबास लावी था। और इस खत में लावी फ़िक़े का बहुत ज़िक्र आता है। चुनान्चे आजकल अक्सर आलिम लोग इस राय की तरफ़ हैं।

मकतूब अलया

सब लोग मानते हैं कि ये खत यहूदी मसीहियों को लिखा गया। लेकिन इस के बारे में इख़्तिलाफ़-उल-राये है कि ये कौन से यहूदी मसीही थे।

अव्वल : कुल यहूदी मसीहियों के लिए। लेकिन मज़ामीन से मालूम होता है कि ये खत ऐसा आम नहीं है।

दोम : यरूशलेम की यहूदी कलीसिया की तरफ़ लिखा गया। मुम्किन है कि ऐसा हो। लेकिन 12:14 में लिखा है कि अब तक ऐसा मुक़ाबला नहीं किया जिसमें खून बहा हो। लेकिन यरूशलेम की इज़ार सानियों में खून तक नौबत पहुंची थी।

सोम : फ़िलिस्तीन की किसी ख़ास कलीसिया के नाम।

चहारुम : अन्ताकिया की यहूदी मसीही कलीसिया की तरफ़।

वक्त

मज़ामीन से मालूम होता है कि ये ख़त यरूशलेम की बर्बादी से पेशतर लिखा गया था। क्योंकि जब कुर्बानियों का ज़िक्र आता है तो लिखा है कि वो गुज़रानी जाती हैं यानी वो इंतज़ाम अब तक क़ायम था। मसलन 13:11 लेकिन ये कोई क़तई दलील नहीं क्योंकि शायद यहां आम दस्तूर की तरफ़ इशारा है। ज़्यादा माकूल दलील ये मालूम होती है, कि अगर यरूशलेम इस ख़त के लिखे जाने से पेशतर बर्बाद हो जाता तो ज़रूर इस का ज़िक्र होता। क्योंकि उस के ज़रिये इस की दलील लाजवाब हो जाती है। इस लिहाज़ से ये ख़त 70 ई° से पेशतर लिखा गया होगा। मगर बहुत पेशतर नहीं। क्योंकि तीमुथियुस के रिहा होने का ज़िक्र है। (इब्रानियों 13:22) और ये रिहाई 66 ई° से पेशतर ना हुई होगी।

कहाँ से लिखा गया : इब्रानियों 13:24 में लिखा है कि अतालिया वाले तुम्हें सलाम कहते हैं। इस से बाअज़ों ने नतीजा निकाला कि ये ख़त शायद अतालिया से लिखा गया। लेकिन इस जुम्ले से ये मुराद भी हो सकती है कि जो लोग अतालिया से उस के साथ थे। इसलिए जगह का ठीक पता लगाना मुश्किल है।

ख़त का मक़सद

ये बहुत साफ़ है कि जिनको ये ख़त लिखा गया। वो बर्ग़शतगी (फिर जाने) के ख़तरे में थे। यानी यहूदियों के समझाने से ये मसीही मसीह का इन्कार करने और हैकल के इंतज़ाम को कुबूल करने की तरफ़ माइल हो चले थे। इसलिए मुसन्नफ़ बड़े ज़ोर से उनको समझाता और आगाह करता है। (2:1 से 3, 3:12 से 14, 4:1, 6:6, 7, 11, 12, 10:23 से 39, 12:25 से 29, 13:10 से 14)

ख़ास ख़यालात

मज़कूर बाला मुक़ामात में अमली नसीहतें पाई जाती हैं। लेकिन इनकी बुनियाद क्या है? यानी मसीह की फ़ौक़ियत से ख़त के सिलसिले से ये वाज़ेह है।

सिलसिला मज़ामीन

1, 2 बाब, मसीह का मुक़ाबला फ़रिश्तों से।

(1) उनसे आला है क्योंकि अल्लाह कहलाता है।

(ब) तजस्सुम और मौत के बाइस उनसे अदना।

(ज) इसी वजह से वो नजातदिहंदा होता है। फ़रिश्ते नजात नहीं दे सकते।

3 बाब, मूसा से मसीह का मुक़ाबला (दोनों ख़ुदा की तरफ़ से भेजे गए थे। इसलिए मसीह यहां रसूल कहलाता है 3:1) लेकिन मूसा घर का ख़ादिम और मसीह घर का मालिक।

4 बाब, येशू से आला। क्योंकि वो हक़ीक़ी आरामगाह तक पहुंचा सकता है।

5:1 से 10:18 तक। यहूदी सरदार काहिन से मसीह का मुक़ाबला।

(अ) मसीह कम से कम उस के बराबर है। (5 बाब)

(ब) मसीह सरदार काहिन से आला है। मेल्कीसिदक़ के दर्जे के लिहाज़ से जो इब्राहिम से आला था और इसलिए लावी से भी आला (6, 7)

(ज) मसीह का अहद लावी के अहद से कहीं बेहतर (8 बाब)

(द) मसीह की हैकल (यानी आस्मान) यहूदी हैकल से आला (9 बाब)

(ह) उस का कफ़़ारा कहीं बेहतर (10:1 से 18)

अमली नसीहतें, 10:19 से 13:25 तक

(1) बर्ग़शतगी का होलनाक ख़तरा। 10:19 से 39

(2) 11 बाब, पुराने अहद नामों के मुकद्दसों का नमूना

(3) 12 बाब, दुखों को खुदा की तरफ़ से तम्बीह समझना चाहिए

(4) 13 बाब, आखिरी नसीहत। मसीह के साथ खारिज किया जाना और मलामत उठाना।

इस खास मज़मून के इलावा चंद खास बातें हैं जिनका लिहाज़ करना चाहिए।
मसलन :-

(1) कलिमतुल्लाह (كلمته الله) के दर्जे की तालीम गो मसीह से ये लक़ब इस ख़त में मन्सूब नहीं। (11:1, 4, 4:13, 14)

(2) फ़ज़ल का अहद बड़ी ज़िम्मेदारी पर दलालत करता है। (2:3,3:1, 4:1,10:29,12:25)

(3) मसीह का काम, बलिहाज़ नबी, बादशाह और काहिन के। नबी यानी खुदा की तरफ़ से बोलता है। (1:2 3:1, 12:25) मेल्कीसिदक़ की तरह बादशाही काहिन था। और ये मुहावरा अक्सर आता है कि वो जनाब-ए-आली के दाहिने जा बैठा (1:3) सरदार काहिन, हम्दर्द, पायदार, क़ादिर, खुद कुर्बानी और कुर्बानी चढ़ाने वाला है। (10:10 से 14)

(4) इस ख़त में इस पर ज़ोर दिया जाता है, कि सलीब पर कफ़ारे और आस्मान पर खुदा के हुज़ूर उस की मक़बूलियत एक बार ही हमेशा के लिए मक़बूल हो चुकी है। और चूँकि ये सरदार काहिन अबद (हमेशा) तक ज़िंदा है। इसलिए हर मसीही के लिए ये अहम अम्र है कि इस ज़िंदा मसीह के साथ रिश्ता क़ायम रहे। इस रिश्ते का वसीला ईमान है। ना शरीअत की रसूम। चुनान्चे अहदे-अतीक़ के मुक़द्दस लोग भी ज़िंदा यहोवा पर ना कि शरीअत पर भरोसा रखते थे।

मुक़द्दस याक़ूब का ख़त

मुसन्निफ़

नए अहदनामे में चंद मुकामात पर ये नाम आया है। मसलन रसूलों की फ़ेहरिस्त में ज़बदी का बेटा (मत्ती 10:2, 3, मर्कुस 3:17, 18, लूका 6:14 से 15) याकूब जो मसीह का भाई कहलाता है। (मत्ती 13:55) याकूब ख़ुर्द (मर्कुस 15:40) याकूब यरूशलेम का मीर मज्लिस (आमाल 15:13) यहूदाह का भाई (यहूदाह 1:1) लेकिन इनमें बाअज़ नामों से एक ही शख्स मुराद है। यानी यरूशलम का मीर मज्लिस। यहूदाह का भाई और मसीह का भाई एक ही शख्स था। और ख़याल ग़ालिब है कि उसने ये ख़त लिखा।

लेकिन यहां ये सवाल ग़ालिब आता है, कि मसीह के भाई से क्या मुराद है? इस के बारे में तीन राय हैं :-

- (1) हक़ीक़ी भाई, यानी यूसुफ़ और मर्यम का बेटा।
- (2) यूसुफ़ का बेटा किसी पहली बीवी से।
- (3) ख़ालाज़ाद भाई।

यूसीफ़स रावी (रिवायत बयान करने वाला) है कि ये याकूब मुद्दत तक यरूशलेम में रहा और सब लोग ख़्वाह मसीही ख़्वाह यहूदी उस की बड़ी इज़्ज़त करते थे। लेकिन आख़िरकार बाअज़ यहूदियों ने इस को हैकल के कुंगुरा से गिरा कर मार डाला। मसीह की मौत से पेशतर ईमान नहीं लाया। (यूहन्ना 7:5) मगर फ़ौरन मसीह के जी उठने के बाद इस का मसीहियों में ज़िक्र आता है। (आमाल 1:13, 14) यरूशलेम की कलीसिया में इस का ओहदा बिशप के ओहदे की मानिंद था। और ग़लतियों 1:19 में वो रसूल भी कहलाता है। यहूदी लोग इसलिए इस की क़द्र करते थे, कि अगरचे वह पक्का मसीही था। तो भी वो मूसवी शरीअत की इज़्ज़त करता था। (आमाल 17), (ग़लतियों 2:11)

मकतूब अलय्या

पहली आयत में साफ़ लिखा है कि “उन बारह फ़िक़रों को जो जाबजा रहते हैं सलाम पहुंचे।” यानी उन मसीहियों को लिखता है जो यहूदी क्रौम में से मुख़्तलिफ़ मुल्कों में मसीही हो गए थे। इस पर बाअज़ों ने एतराज़ किया कि यहां वो चंद जमाअतों को जिनके कुसूरों से वो वाक़िफ़ है लिखता है। मगर आम ख़त में भी ऐसा लिख सकते हैं क्योंकि बाअज़ों के कुसूरों को दिखाना औरों के लिए भी मुफ़ीद है।

वक़्त तहरीर

इस के बारे में दो मशहूर राय हैं :-

- (1) यरूशलम की बर्बादी से कई बरस पेशतर (पहले) लिखा गया।
- (2) 150 ई° के करीब लिखा गया।

इस राय की ताईद में ये कहा जाता है कि इस ज़माने के मसीही बुजुर्गों की तस्नीफ़ात में इस से पेशतर इस का ज़िक्र नहीं आता। और कलीसिया का हाल इस खत में कुछ बिगड़ा हुआ मालूम होता है। जो माबाअद ज़माने में हुआ।

लेकिन पहली राय ज़्यादा मज़बूत मालूम होती है। मसलन चंद तस्नीफ़ात में ना मुसन्निफ़ और ना तस्नीफ़ का ज़िक्र है मगर इस के अल्फ़ाज़ और खयाल इस्तिमाल होते हैं। मसलन हर्मास के चौपान में। और शायद रोमी क्लीमेंट की तस्नीफ़ात में। और सुर्यानी तर्जुमे में ये खत पाया जाता है।

इस खत में जो मुबाहिसा ईमान और आमाल के बारे में है वो पहली सदी का है। दूसरी सदी में इस का कुछ पता नहीं मिलता। और कलीसिया का हाल यक्रीनन पहली सदी के ज़्यादा मुवाफ़िक़ है। क्योंकि दौलतमंद जिसको याकूब मलामत करता है गालिबन यहूदी थे। चूँकि शुरू में मसीही कलीसियाएं यहूदी इबादत खाने से ताल्लुक़ रखती थीं। और कोई ऐसी बात इस में नहीं। जिसके बाइस इस को दूसरी सदी की तस्नीफ़ समझें।

तक्सीम मज़ामीन

बाब अव्वल, याकूब मसीहियों को उभारता है, कि आज़माईशों के वक़्त बर्दाश्त करें। खुदा से मांगें। और फ़िरोतनी से खुदा की मर्ज़ी को पूरा करें।

बाब दोम, चंद गुनाहों के सबब मलामत करता है।

- (1) 2:1 से 13, दौलतमंदों की तरफ़दारी।
- (2) 2:14 से 26 मुर्दा ईमान जो बेफल है।

बाब सोम, ज़बान के गुनाहों पर मलामत। ख़ासकर तोहमत लगाना।

बाब चहारुम, बुरी शहवत, तकब्बुर, और इल्ज़ाम लगाना।

बाब पंजुम, गरीबों पर जुल्म।

5:7 से आखिर तक आखिरी नसीहत। सब्र, अयादत, और सिफ़ारिश के बारे में।

खास खयालात

(1) मसीही अक़ीदे की कोई तश्रीह नहीं। इस अम्र में ये ख़त रोमियों के ख़त और ग़लतियों के ख़त से मुतफ़र्रिक (अलग) है।

(2) मसीही तहरीकों का बहुत कम ज़िक्र है। मसलन मसीह या उस की मुहब्बत वग़ैरह का बहुत कम वास्ता दिया है। अगरचे मसीह का कुछ ज़िक्र तो है। (1:1, 2:1, 7, 5:7) लेकिन बरअक्स इस के बहुत अमली तालीम है। जो मसीह की पहाड़ी वाअज़ की तालीम से बहुत मुशाबेह (मिलती-जुलती) है। इस से पता लगता है कि याक़ूब का ख़ास मक़सद ये है कि ये भाई ख़ाली ईमान पर भरोसा ना रखें। और आमाल के बारे में जो उस की तालीम है वो पौलुस की तालीम के ख़िलाफ़ नहीं।

क्या याक़ूब ने ये अमली तालीम तहरीर शूदा इंजीलों से ली या ज़बानी रिवायत से जो उस के ज़माने में मुरव्वज थी। इस का फ़ैसला ना मुम्किन है ना ज़रूरी है। इस्लाह के ज़माने में चंद आदमियों ने इस पर एतराज़ किया। मसलन इरासमस और लूथर ने। लेकिन उनके एतराज़ इस ख़त के मज़ामीन के बाइस हुए ना किसी तवारीख़ी शहादत (गवाही) के सबब। और मज़ामीन के बारे में उनकी ग़लतफ़हमी थी।

पतरस का ख़त

मुसन्निफ़

जिस शख्स से ये ख़त मन्सूब करता है, वो हवारियों (शागिर्दों) में से था। इस का ज़िक्र पहले-पहल यूहन्ना 1:4 वग़ैरह में आया है जब उस के भाई इन्द्रियास ने उस को येसू नासरी के बारे में बताया। उस वक़्त से वो येसू का शागिर्द तो हो गया। लेकिन अपने पेशे के काम में यानी मछुवे के काम में मसरूफ़ रहा। जब तक कि मसीह ने उसे ख़ास तौर पर ना बुलाया कि हमेशा उस के साथ रहे। (लूका 5:1 वग़ैरह) रसूलों की फ़ेहरिस्त में इस का नाम पहले आता है। और गुफ़्तगु में भी वो हमेशा पेश क़दम था। चुनान्चे उसने एक ख़ास मौक़े पर एक बड़ा इक़रार किया कि तू मसीह ज़िंदा खुदा का बेटा है। (मत्ती 16:16 वग़ैरह) इसी मौक़े पर मसीह ने उसे पतरस का नाम दिया (क्योंकि अस्ल नाम उस का शमऊन इब्ने यूना था) ये नाम पतरस यूनानी ज़बान में उस लफ़ज़ से मुशाबेह है जिसके मअनी हैं चट्टान या पत्थर। और मसीह ने फ़रमाया था कि इस चट्टान पर मैं

अपनी कलीसिया बनाऊंगा। इस आयत की सनद पर रोमी कलीसिया ने दावा किया है कि हमारी कलीसिया पतरस रसूल पर मबनी है। और वो अकेली हक्रीकी कलीसिया है। इस के जवाब में ये कहना पड़ता है कि इस का ना तो कतई सबूत है कि पतरस रसूल रोम की कलीसिया का बानी था और ना वो सिर्फ इस कलीसिया का बानी बल्कि और कलीसियाओं का भी बानी था। वो गालिबन रोम में शहीद हुआ। लेकिन वो रोम की कलीसिया का उस्कुरफ़ (सरदार पादरी) कभी नहीं था।

हक्रीकी बात ये है कि मसीह ने पंतिकुस्त के दिन यहूदियों के लिए और कुर्नेलियुस के खानदान के ज़रिये से ग़ैर क़ौमों के लिए ईमान का दरवाज़ा खोला। (आमाल 2:14, 10:9, 15:7 वगैरह) पहली सदी में बाक़ी कलीसियाओं ने रोमी कलीसिया के ना तो आला इख़्तियार को माना और ना इसे अकेली हक्रीकी कलीसिया समझा। मसीह के गिरफ़्तार होने के वक़्त पतरस ने तीन दफ़ाअ मसीह का इन्कार किया। लेकिन बहाल होने के बाद वो बड़ा सरगर्म और कामयाब वाइज़ हुआ। उस का ख़ास काम मख़्तूनों में था। (ग़ालतियों 2:9) बाक़ी काम का हाल मालूम नहीं अलबत्ता ये रिवायत है कि आख़िरकार रोम में मसीह की पेशीनगोई के मुताबिक़ मस्लूब हुआ। (यूहन्ना 21:18 ता 19)

अब दर्याफ़्त करें कि किस तरह साबित होता है कि पतरस इस ख़त का मुसन्निफ़ है। बैरूनी शहादत उस के मुसन्निफ़ के बारे में बहुत पुर ज़ोर है मसलन रोमी क्लीमेंट (1 पतरस 1:9 2:9, 3:20, 5:5) का इक़्तिबास करता है। बर्नबास से मन्सूब शूदा ख़त में (1 पतरस 1:9, 17) हर्मास के चौपान में (1:7, 2:5) पोलीकार्प के ख़त में (1 पतरस 1:8, 13, 21) का इक़्तिबास है। पेपियास और जस्टिन वगैरह सब इस से इक़्तिबास करते हैं। आर्येनियस ना सिर्फ़ इक़्तिबास करता है, बल्कि वो इसे पतरस से मन्सूब करता है। वैसा ही तरतलियां और क्लीमेंट असकंदरी बहुत इक़्तिबास करते हैं। सारे तर्जुमों में ये ख़त पाया जाता है। और एक के सिवा यानी मोरातोरी फ़ेहरिस्त के सिवा बाक़ी सब फ़ेहरिस्तों में पाया जाता है। इस मोरातोरी नुस्खे का आख़िरी हिस्सा तल्फ़ हो गया है। (2 पतरस 3:1) में इस ख़त की तरफ़ इशारा है। अगर ये दूसरा ख़त पतरस का ना भी हो तो भी बहुत पुरानी तस्नीफ़ है। और इस से पहले ख़त की साफ़ ताईद होती है।

अंदरूनी सबूत : ख़यालात वही हैं जो आमाल की किताब में पतरस से मन्सूब हैं। लेकिन बाअज़ों का ख़याल है कि तर्ज़-ए-कलाम और यूनानी इस से आला है। जो पतरस जैसे यहूदी से मन्सूब कर सकें। लेकिन याद रखें कि 1 पतरस 5:12 में साफ़ लिखा है कि मैंने सलवानस के ज़रिये तुमको ये ख़त लिखा है। और ग़ालिब ख़याल है कि यूनानी तर्ज़-ए-कलाम सलवानस का है।

मकतूब अलया

पहली आयत में मकतूब अलया चंद कलीसियाएं हैं जो एशया-ए-कोचक में पाई जाती थीं। इनको वो मुसाफिर जो जाबजा रहते हैं कहता है। इस लक़ब से या तो वो मसीही मुराद हैं जो यहूदियों में से आए और इस क्रिस्म के लोग पंतिकुस्त के रोज़ यरूशलेम में आए हुए थे। (आमाल 2:9 से 11) ऐसे लोग यहूदियों की इज़ार सानियों के वक़्त मुख्तलिफ़ मुल्कों में परागंदा (बिखरना) हो गए थे। (आमाल 8:1) वगैरह।

इन कलेसियाओं की बुनियाद किस ने डाली होगी और पतरस क्यों उनसे मुखातिब होता है? गालिबन पंतिकुस्त के दिन के ईमानदारों और खुद पतरस ने इधर-सफ़र कर के चंद कलीसियाएं कायम कीं। क्योंकि आमाल की किताब में उस की खिदमत और मुनादी का मुफ़स्सिल (तफ़्सील के साथ) बयान नहीं। अगरचे पौलुस ग़ैर क़ौमों का ख़ास रसूल था। तो भी दूसरे रसूलों ने बहुत सफ़र किए। और पतरस ने मुख्तलिफ़ क्रिस्म के यहूदियों में बहुत काम किया होगा।

खत लिखने की जगह : 1 पतरस 5:13 में बाबिल का ज़िक्र है गोया वो बाबिल से लिख रहा है। बाबिल के बारे में तीन राय हैं।

- (1) लफ़ज़ी तौर पर वो बाबिल जो मसोपुतामिया में है।
- (2) मिस्र का एक शहर जो इस नाम का था।
- (3) तशबीही तौर पर रोम मुराद है

पहली राय की ताईद (हिमायत) में ये कहा जाता है कि जिस तर्तीब से उसने मुक़ामात का ज़िक्र किया है वो बाबिल की तरफ़ से शुरू होती है। लेकिन इस में बहुत ज़ोर नहीं। और बाबिल की तरफ़ पतरस के जाने का और कुछ ज़िक्र नहीं।

दूसरी राय की बहुत कम ताईद होती है। अक्सर लोग तीसरी राय मानते हैं। क्योंकि बाबिल रोम का लक़ब मशहूर हो गया था। मगर इस पर ये एतराज़ होता है कि ये लक़ब नेरू की ईज़ा रसानी से पेशतर पाया नहीं जाता।

तहरीर का वक़्त

आर्योनियुस कहता है कि पतरस और पौलुस दोनों रोम में मुनादी करते थे। और खयाल गालिब है कि पतरस ने ये खत रोम से शहीद होने से कुछ पेशतर लिखा।

अब रहा ये सवाल कि कितना अर्सा पेशतर? इस का ठीक पता नहीं। अलबत्ता बाअज़ कहते हैं कि 66 ई° और बाअज़ 58 ई° और 67 ई° के दर्मियान लिखा होगा।

खत के मज़ामीन और खास खयालात

तक्लीफ़ उठाने का बहुत ज़िक्र इस खत में आता है। लेकिन पता नहीं कि ये तक्लीफ़ यहूदियों की तरफ़ से थी या अवामुन्नास की तरफ़ से या सरकार की तरफ़ से। राएमिज़ी साहब यक्रीन से कहते हैं कि सरकार की तरफ़ से ये तक्लीफ़ पहुंची। क्योंकि 1 पतरस 4:4 में ये जुम्ला आया है कि “अगर मसीह के नाम के सबब से तुम्हें मलामत (बुरा-भला कहना) की जाती है।” इस से ये मुराद है कि ये लोग मसीही होने के ही सबब से सताए जाते थे। लेकिन ये दस्तूर सरकार में नेरू के वक़्त से पेशतर कभी नहीं हुआ। अक्सर आलिम लोगों की राय ये है कि इस खत में ऐसी इज़ार सानी का ज़िक्र है जो यहूदियों और अवामुन्नास से होती थी। ये क़ाबिले लिहाज़ है कि इस में मौत तक दुख उठाने का ज़िक्र नहीं। और 1 पतरस 3:13 में लिखा है कि “अगर तुम नेकी करने में सरगर्म हो तो तुमसे बदी करने वाला कौन है।” जिस पतरस ने ये चाहा था कि मसीह सलीब के दुख से किनारा करे वो इस खत में बारहा बताता है कि पहले दुख उठाना है और बाअदा (बाद में) जलाल में शामिल होना। (1 पतरस 1:11 2:21, 3:14, 18, 4:13, 5:1, 10)

एक सवाल ये भी किया जाता है कि पतरस कहाँ तक पौलुस के खतों से वाक़िफ़ था। अलबत्ता 2 पतरस 3:15, 16 में पौलुस और उस के खतों का ज़िक्र आया है। मगर इस से हमको पूरी तसल्ली नहीं मिलती कि पतरस पहले खत के लिखते वक़्त पौलुस के खतों से वाक़िफ़ था। बाअज़ आलिमों ने कहा है कि रोमियों और इफ़िसियों के खतों से इस पहले खत की मुशाबहत है। लेकिन दूसरे आलिम इस का इन्कार करते हैं। हाँ इतना कह सकते हैं और इस पर सब मुत्तफ़िक़ हैं कि पतरस और पौलुस दोनों तालीम की असली बातों की यकसाँ तालीम देते हैं। नाज़रीन इस बात पर भी ग़ौर करें कि ये दो रसूल मसीह की इन्जील को पेश करने में मुत्तफ़र्रिक़ पहलूओं से नज़र करते थे। एक मुफ़स्सिर ने ये लिखा है कि पौलुस तो सूफ़ी मिज़ाज नज़र आता है यानी अंदरूनी रुहानी बातों पर ज़ोर देता है और पतरस पाबंद शराअ है। यानी सब कुछ हुक्म के तौर पर मानता है। इलावा अज़ीं ये खयालात भी पाए जाते हैं। फ़िरोतनी (1 पतरस 5:6, 2:18 वग़ैरह) बशाशत (1 पतरस 1:6, 8, 3:13, 4:19, 5:10)

तक्सीम मज़ामीन

1:1,2 सलाम।

1:3 से 12 तकलीफों के बावजूद नजात की उम्दा उम्मीद।

1:13 से 2:1 बर्दाश्त, पाकीज़गी और बिरादराना उल्फ़त और तरक्की की नसीहतें।

2:11 से 3:12 ख़ास लोगों को नसीहतें। मसलन सरकारो रईयत, नौकरों, मियां बीवी को।

3:13 से 4:6 ईज़ा रसानी से हिरासाँ ना हो क्योंकि

- (1) उमूमन नेकों को लोग नहीं सताते।
- (2) ख़ुद मसीह ने दुख उठाया।
- (3) और वो आख़िरकार सबों की अदालत करेगा।

4:7 से 5:11 तक, आम नसीहतें, मुहब्बत, हमदर्दी से चलना, मसीह के नाम के लिए ख़ुशी दुख उठाना, फ़िरोतनी से अपने फ़राइज़ अदा करना। मसलन बुजुर्गों के फ़राइज़।

5:12 से 14, ख़ातिमा।

पतरस का दूसरा ख़त

मुसन्निफ़

इस खत के 1:1, 14, 16, 17, 3:1, 2, 15 से मालूम होता है कि मुसत्रिफ़ दाअवा करता है कि मैं शमऊन पतरस हूँ। और अपने पहले खत की तरफ़ इशारा करता है। लेकिन बाअज़ अश्खास इस दाअवे को नहीं मानते और कहते हैं कि ये खत दूसरी सदी के वस्त के करीब लिखा गया। इस राय की ये वजूहात पेश की जाती हैं :-

(1) वो अपना दाअवा ऐसे तौर से पेश करता है कि जिससे शक पैदा होता है।

(2) और जिस पहाड़ पर मसीह की सूरत बदली उसे वो मुक़द्दस पहाड़ कहता है (1:18) पहली सदी का ये मुहावरा नहीं।

(3) पतरस के पहले खत में ईज़ा रसानी का ज़िक्र है। लेकिन इस में बिद्अती तालीम से मुक़ाबला है। जो खयालात इस खत में पाए जाते हैं वो पहले खत से मुतफ़र्रिक़ हैं। और नीज़ तर्ज़-ए-कलाम भी मुख्तलिफ़ है। इलावा अज़ीं 3:15, 16 से मालूम होता है कि नये अहदनामे की अक्सर किताबें इस खत की तहरीर के वक़्त रिवाज पा चुकी थीं। और सबसे क़दीम मसीही बुजुर्ग इस से इक्तिबास नहीं करते। और यूसीबस मुअर्रिख इस मुशतबा (मशुकूक़) किताबों की फ़ेहरिस्त में दर्ज करता है। जेरोम और औरीजन भी इस के बारे में शक ज़ाहिर करते हैं। लेकिन इन बातों के जवाब में दीगर आलिम कहते हैं :-

(1) कि अगर मुसत्रिफ़ सच-मुच पतरस था तो उसे अपना ज़िक्र करना नामुनासिब था और ना उस पहाड़ को मुक़द्दस कहना ना रवा था। मत्ती 4:5 27:53 में यरूशलम मुक़द्दस शहर कहलाता है।

(2) बिद्अती तालीम पहली सदी में बहुत थी। चुनान्चे पौलुस रसूल के खतों से ज़ाहिर है। इसलिए कुछ ताज्जुब नहीं कि पतरस उन कलीसियाओं की हालत से आगाह हो कर उनको मुतनब्बाह (खबरदार करना) करता है।

(3) इस तरह से चूँकि मज़मून मुतफ़र्रिक़ है तो तर्ज़-ए-कलाम भी मुतफ़र्रिक़ होगा।

(4) याद रहे कि जैसा पहले खत में ज़ाहिर किया गया है। पतरस ने ग़ालिबन किसी मुंशी के ज़रिये ये खत लिखवाया और सब मानते हैं कि इस खत का तर्ज़-ए-कलाम गो अजीब है तो भी नए अहदनामे की दीगर किताबों की निस्बत पतरस के पहले खत के मुशाबेह है।

(5) इस में शक नहीं कि पौलुस के खत शुरू ही से इज़्जत की निगाह से देखे जाते और इबादत में पढ़े जाते थे। (2 थिस्सलुनीकियो 2:2) (कुलुस्सियों 4:16)

(6) गो योसीबस इसे मुशतबा (मशुकूक) किताबों की फ़ेहरिस्त में दर्ज करता है। तो भी उसने इकरार किया कि अक्सर मसीही इस खत को मानते थे और जेरोम और औरीजन जो कुछ शक ज़ाहिर करते हैं। तो भी वो इस को कुबूल करने के लिए तैयार थे।

दीगर मुसन्निफ़ों की तस्नीफ़ात में मसलन क्लीमेंट असकंदरी और आर्येनियुस में इस खत के जुम्ले इस्तिमाल किए जाते हैं।

पतरस का मुकाशफ़ा जो एपोक्रिफल किताबों में है। अगरचे पतरस की तस्नीफ़ नहीं और दूसरी सदी (130 ई०) की तस्नीफ़ है वो बाअज़ों के नज़दीक इस दूसरे खत पर मबनी है।

एक मुश्किल सवाल यहां पेश आता है कि इस दूसरे खत का ताल्लुक यहूदाह के खत से क्या है? सरसरी पढ़ने से ये रोशन है कि इनमें से एक ने दूसरे का खत देखा होगा। क्योंकि झूटे मोअल्लिमों के बारे में अल्फ़ाज़ और जुम्ले तकररीबन यकसाँ हैं। बाअज़ कहते हैं कि पतरस ने यहूदाह से नक़ल किया। ये मुश्किल अम्र है। लेकिन अग़लबन दूसरे खत के मुसन्निफ़ ने पहले लिखा। अगर ऐसा हो तो पूरा यक़ीन है कि पतरस मुसन्निफ़ था। बाअज़ों ने इस मुशाबहत की वजह भी बताई कि इन दोनों मुसन्निफ़ों ने किसी और से नक़ल किया। और इस की ताईद में ये बात नज़र आती है कि ये दोनों मुसन्निफ़ चंद यहूदी मुकाशफ़े की किताबों से इक़तिबास करते हैं। लेकिन आजकल राय ये है, कि इन दोनों ने बिला-वास्ता एक दूसरे से मदद ली। अल-ग़र्ज़ अगरचे इस खत के बारे में हमेशा शक रहेगा। लेकिन बहैसियत कुल इसे पतरस से मन्सूब करना रवा (वाजिब) है।

मकतूब अलय्या

बाअज़ कहते हैं कि सामरी कलीसियाओं को ये खत लिखा गया। या अन्ताकिया की गिर्द व नवाह (आसपास) की कलीसियाओं को। मगर ग़ालिबन इन कलीसियाओं को ये खत लिखा गया। जिनकी तरफ़ पतरस ने अपना पहला खत लिखा था। जिन कलेसियाओं में पतरस को मालूम हुआ कि इसी किस्म की ग़लत तालीम पैदा हो रही थी। जिसके खिलाफ़ पौलुस ने कुरिन्थस और गलतिया वग़ैरह की कलीसियाओं को आगाह किया था।

तहरीर की जगह और वक़्त

अगर ये पतरस का खत हो तो इस के लिखने का वक़्त और जगह क्या होगी? बाअज़ आलिम कहते हैं कि ये खत मौजूदा पहले खत से पेशतर लिखा गया। और पतरस का एक और खत था जो खो गया। मगर अक्सर लोग समझते हैं कि ये दूसर खत हमारे मौजूदा पहले खत के बाद रोम से पतरस की शहादत से कुछ पेशतर लिखा गया।

तक्सीम मज़ामीन

2 पतरस 1:1, 2 सलाम

1:3 से 11 तरक्की की नसीहत ताकि उनकी बर्गुज़ीदगी साबित हो।

1:12 से 21 उस की शख्सी गवाही और अहदे-अतीक की नबुव्वतों की सनद पर ये नसीहत मबनी है।

2:1 से 22 झूटे मोअल्लिमों के बयान में। पुराने अहदनामे की चंद मिसालों से इबरत दिला कर उनको आगाह करता है।

3:1 से 13, तूफ़ान की मिसाल से दूसरी आमद का यक़ीन दिलाता है और सब चीज़ों के बहाल होने की उम्मीद पेश करता है।

3:14 से 18, आखिरी नसीहत कि रसूलों की तालीम और आगाही के रहें।

इस खत का ख़ास ज़ोर ये है कि झूटे मोअल्लिमों से ख़बरदार रहो। और इस पर ज़ोर देने के लिए। (1) अपना मसीही तजुर्बा। (2) अहदे-अतीक की मिसालें। (3) और एपोक्रिफल किताबों से नज़ीरें (मिसालें) पेश करता है। उस की दिली मुहब्बत और अंदेशा इस में ज़ाहिर है मसलन 1:8, 14, 2:1, 3:1, 11, 17

यहूदाह का खत

मुसन्निफ़

नए अहदनामे में मसीह के भाईयों की फ़ेहरिस्त में ये नाम आता है। (मत्ती 13:55) (मर्कुस 6:3) अगर इस रिश्ते से ये मुराद है कि यहूदाह यूसुफ़ का बेटा पहली बीवी से था। तो मुसन्निफ़ अपने त्यों ग़ालिबन अदब के लिहाज़ से मसीह का भाई नहीं बल्कि याक़ूब का भाई कहता है। और ये ज़ाहिर है कि मसीह के भाईयों में एक शख्स

याकूब था। जो यरूशलेम की कलीसिया का मीर मज्लिस था। शायद इसलिए यहूदाह ने ये कहना काफ़ी समझा।

बैरूनी शहादत : इस ख़त के बारे में बहुत पुर ज़ोर है। मसलन मोरातोरी क्रानून में, क्लीमेंट असकंदरी, दोमस असकंदरी, तरतलियान और औरीजन की तस्नीफ़ात और शायद पोलीकार्प के ख़त में भी इस का ज़िक्र आता है। बरअक्स इस के ये सुर्यानी तर्जुमे में नहीं पाया जाता। यूसीबस मुअर्रिख़ कहता तो है कि बहुत कलीसियाएं इस को मानती हैं। लेकिन ख़ुद उसने इसे मुशतबा (मशुकूक़) किताबों की फ़ेहरिस्त में दर्ज किया है।

और ज़माना-हाल के आलिमों ने इस ख़त पर ये एतराज़ किए हैं :-

अव्वल : कि जिस ग़लत तालीम का ज़िक्र है वो दूसरी सदी में मुरव्वज थी। लेकिन याद रहे कि यहूदाह गनासतिकों का ज़िक्र नहीं करता। और जिस तालीम को वो रद्द करता है। वो पहली सदी में भी पाई जाती थी।

दोम : 17 आयत में लिखा है इन बातों को याद रखो, कि जो हमारे ख़ुदावंद येसू के रसूलों ने पहले कही थीं। इस जुम्ले से ये नतीजा निकालते हैं कि मुसन्निफ़ रसूलों का हमसर ना था। लेकिन ये नतीजा दुरुस्त नहीं। वो अपने त्यों रसूल नहीं कहता और रसूलों की ज़बानी तालीम की तरफ़ इशारा करता है। जिसे उन मसीहियों ने सुना था। दरअस्ल ये जुम्ला उस ज़माने की ताईद करता है।

सोम : इस में एपोक्रिफल किताबों से इक्तिबास हुआ है। यानी हनोक की किताब और मूसा की सऊद की किताब से। सब लोग मानते हैं कि ये किताबें रसूलों के ज़माने से पेशतर लिखी गई थीं। यहूदाह का इन किताबों से इक्तिबास करना क़ाबिले एतराज़ हो सकता है। लेकिन इस से ज़माना तस्नीफ़ पर शक नहीं आ सकता।

(14 आयत में हनोक की किताब से, 9 आयत मूसा की सऊद की किताब) जेरोम के बयान से मालूम होता है कि इसी वजह से बाअज़ कलीसियाओं ने ये ख़त रद्द किया था। मगर ये मुनासिब नहीं। क्योंकि तश्रीह के लिए ऐसी किताबों से इक्तिबास करना नामाकूल और नाजायज़ नहीं। और ना ऐसे इक्तिबास से वो इन किताबों को इल्हामी ठहराता है। ख़ुद पौलुस ने 2 तीमुथियुस 3:8 में एक यहूदी रिवायत से इक्तिबास किया है जो पुराने अहदनामा में पाई नहीं जाती।

तवारीख में लिखा है कि 81 ई० में दूमतियान कैसर के अहद में चंद यहूदियों पर ये इल्जाम लगाया गया। कि वो बादशाही दावा करते हैं। और कि ये अश्वास यहूदाह के भाई के पोते थे। कैसर ने उनकी गरीब हालत देखकर उनको छोड़ दिया इस से हम ये नतीजा निकाल सकते हैं कि खुद यहूदाह उस वक्त ज़िंदा ना होगा।

मकतूब अलया

खुद खत में इस का कुछ ज़िक्र नहीं। सिर्फ मुक़द्दसों के नाम लिखा गया। बाअज़ ने क्रियास किया कि शायद फ़िलिस्तीन के मसीहियों के लिए लिखा गया होगा। बाअज़ का खयाल है कि ये इसी क्रिस्म के लोगों को लिखा गया। जिस क्रिस्म के लोगों की तरफ़ पतरस का दूसरा खत लिखा गया। लेकिन फिर भी साफ़ पता नहीं लगता।

तहरीर वक़्त और जगह

बाअज़ों की राय है कि सिकंदरिया में लिखा गया। बाअज़ों ने यरूशलेम जाये तहरीर बताया। लेकिन कोई सबूत नहीं। वक़्त तहरीर इस अम्र पर मबनी है (जिसका ज़िक्र पतरस के दूसरे खत के दीबाचे में मज़कूर है) कि इन दोनों में से पहले कौनसा लिखा गया। खयाल ग़ालिब है कि पतरस का खत पहले लिखा गया। अगर ऐसा हो तो ये खत 66 ई० के बाद लिखा गया होगा। आम राय है कि 67 ई० में लिखा गया।

तक्सीम मज़ामीन

- 1 से 4, सलाम और बाइस तहरीर यानी असली ईमान पर क़ायम रहना।
- 5 से 7, पुराने अहदनामे से तीन इबरतनाक मिसालें यानी ब्याबान में बनी-इस्त्राईल की बर्ग़शतगी फ़रिश्तों की बर्ग़शतगी और सदोम गमोरा की शरारत।
- 8 से 19, ऐसे गुमराह करने वालों का मुफ़स्सिल बयान उनका तकब्बुर कुफ़्र और नापाकी।
- 20 से 23, आखिरी पुर मुहब्बत नसीहत रूह-उल-कुदस और खुदा की मुहब्बत में क़ायम रहना।
- 24 और 25 खातिमे पर खुदा की तम्जीद।

खास खयालात

यहूदाह अगरचे इसी क्रिस्म का मज़्मून बयान करता है जो दूसरे पतरस में है। लेकिन इस में ज़्यादा सख्ती पाई जाती है। यूनानी तर्ज़ ज़्यादा आला है। मालूम होता है कि वो दूसरे पतरस के चंद जुमलों को लेकर उनको ज़्यादा सफ़ाई से लिखता है। वो इस खयाल से भरा है, कि खुदा की आला नेअमतें जब बिगड़ जाएं तो होलनाक खराबी और हलाकत पैदा करती हैं।

चूँकि मुसन्निफ़ यहूदी माइल मसीही था इसलिए अहदे-अतीक के शीशे में हर चीज़ को देखता है और मसीह की आमद और गुज़श्ता तवारीख़ की मिसालों पर ज़ोर देता है। बावजूद सख्त मिज़ाजी की आखिरी नसीहत और कलमा तम्जीद बहुत पुर मुहब्बत और दिलचस्प हैं।

यूहन्ना के ख़तूत ख़त अक्वल जो आम कहलाता है

मुसन्निफ़

बैरूनी शहादत : क़दीम कलीसिया में कभी शक नहीं हुआ कि वो यूहन्ना के सिवा किसी और का है। बैरूनी शहादत बहुत मज़बूत है। पोलीकार्प 1 यूहन्ना 4:3 का इक्तिबास करता है। अगरचे यूहन्ना का ज़िक्र नहीं करता। पेपियास और आर्येनियस ने भी इस का इक्तिबास किया है (1 यूहन्ना 4:1 से 5:1) क्लीमेंट असकंदरी तरतलियान और कपरयान ना सिर्फ़ बहुत इक्तिबास करते हैं बल्कि इस को यूहन्ना की तस्नीफ़ कहते हैं। इसी तरह औरीजन और यूसीबस मुअर्रिख़। इलावा अज़ीं यूसीबस ने इसे मुसल्लमा (माना हुआ) ख़तों की फ़ेहरिस्त में शामिल किया है। मोरातोरी क़ानून में इस के पहले बाब की पहली और चौथी आयत का इक्तिबास है। अलबत्ता पुश्तो तर्जुमे में ये नहीं है। क्योंकि इस पुश्तो तर्जुमे में आम ख़तों में से बहुत थोड़ों का ज़िक्र है।

अंदरूनी शहादत भी इस पर मुत्तफ़िक़ है क्योंकि इस का तर्ज़ इबारत और मज़ामीन इन्जील से मिलते हैं। और ये मुशाबहत इस क़द्र है कि बाअज़ों ने इस ख़त को इन्जील का दीबाचा समझा। ग़ालिबन ये तो दुरुस्त नहीं कि वो दीबाचे के तौर पर हो। बल्कि ख़त के मज़ामीन इन्जील के वाक़ियात पर मबनी हैं। और मकतूब अलय्या (जिसको ख़त लिखा जाये) इन वाक़ियात से वाक़िफ़ थे। अलबत्ता बाअज़ हाल के आलिमों ने कुछ

एतराज़ किया है। अगरचे वो बैरूनी शहादत के ज़ोर को तस्लीम करते हैं। लेकिन अंदरूनी खयालात पर एतराज़ करते हैं मसलन :-

(1) इस में किसी ख़ास शख्स का ज़िक्र नहीं। हालाँकि यूहन्ना अगर इफ़िसुस के इलाक़े की कलीसियाओं को लिखता तो ज़रूर शख्सों का ज़िक्र करता।

जवाब : आदमियों का ज़िक्र करना उस का दस्तूर नहीं। यहां तक कि अपना नाम भी नहीं लिखता। तो भी उन्स (मुहब्बत) और शख़्सी वाक़फ़ियत के चंद आसार पाए जाते हैं।

(1:1 से 4, 2:12 से 14, 18, 4:1 से 3, 5:21)

(2) मुसन्निफ़ तिफ़लाना तौर (बच्चों की तरह) पर इन्जील की नक़ल करता है।

जवाब : मुशाबहत तो है फिर भी कई एक नए खयालात भी हैं। अगर मुसन्निफ़ दोनों का एक ही शख्स हो तो मुशाबहत के बारे में ताज्जुब नहीं करना चाहिए।

(3) अगर यरूशलेम की बर्बादी के बाद पहली सदी में ही लिखा जाता तो ज़रूर इस का ज़िक्र होता।

(4) हालाँकि इस ख़त में मसीह की दूसरी आमद का बहुत ज़िक्र है लेकिन इन्जील में इस का कुछ ज़िक्र नहीं।

जवाब : ये ग़लत है। अलबत्ता इन्जील में मसीह की रुहानी आमद पर जो रूह-उल-कुद्स के ज़रिये हुई। बहुत ज़ोर दिया जाता है तो भी मसीह अपनी आमद का ज़िक्र करता है। (यूहन्ना 14:2, 3, 21:22)

(5) इन्जील में जिस वकील का ज़िक्र है वो रूह-उल-कुद्स है। ख़त में ये लक़ब मसीह का है। (1 यूहन्ना 2:1)

जवाब : खुद इन्जील में मसीह भी वकील कहलाता है। (14:16) ये सिर्फ़ नाम की बात है। लेकिन इस ख़त में रूह-उल-कुद्स का ज़िक्र अक्सर आया है। (2:20, 27, 3:14 4:2, 6:13)

(6) नास्तिक तालीम इस खत में मुकम्मल नज़र आती है हालाँकि वो तालीम दूसरी सदी में मुकम्मल हुई।

जवाब ; यूहन्ना रसूल के ज़माने में सरंथस नास्तिक इसी क्रिस्म की तालीम देता था जो इस खत में रद्द की जाती है।

(7) बाअज़ मोअतरिज़ (एतराज़ करने वाले) इस खत को रद्द तो नहीं करते लेकिन ये कहते हैं कि बुढ़ापे की कमज़ोरी के आसार इस में हैं।

जवाब : लाकलाम (बेशक, यक़ीनन) एक बूढ़े शख्स के मुहब्बत भरे खयालात नज़र आते हैं लेकिन इस में कोई कमज़ोरी नहीं।

(8) बाअज़ों का खयाल है कि ये एक दूसरे यूहन्ना की तस्वीर है जो प्रसबेटर था।

जवाब : इस का कोई पक्का सबूत नहीं (देखो यूहन्ना की इन्जील का दीबाचा)

मकतूब अलय्या

खुद खत से इनकी बाबत कुछ पता नहीं लगता लेकिन ओगस्तीन और चंद दीगर अशखास लफ़्ज़ पारथियों की तरफ़ ईज़ाद (इज़ाफ़ा करना) करते हैं। लेकिन ये किसी कातिब की ग़लती मालूम होती है। क्योंकि यूहन्ना का मशहूर लक़ब कुँवारा पढ़ गया था। और ये लफ़्ज़ यूनानी में पार्थियां से बहुत मुशाबेह है। खयाल ग़ालिब है कि ये खत इफ़िसुस और इस के गिर्द व नवाह (आसपास) की कलीसियाओं के लिए गश्ती खत (गश्त करने वाला, फिरने वाला) के तौर पर लिखा गया।

खत का मज़मून और मक़सद

इस खत का लुब्ब-ए-लुबाब (खुलासा) है “शराकत”

1:1 से 3:2 शराकत की हक़ीक़त। मसीह के तजस्सुम और मौत के वसीले से ये होती है। ताहम जो इस में शरीक हैं उनमें कुछ गुनाह हनूज़ (अभी तक) रहता है ये शराकत मुहब्बत की बुनियाद है। और सब के लिए लाज़िमी है। इस के ज़रिये दुनिया से अलैहदगी हासिल होती है। और झूटी तालीम से भी। वो इब्नियत और आईद जलाल पर मुहीत है।

3:3 से 24, शराकत का फल पाकीज़गी बिरादराना मुहब्बत वग़ैरह।

4:1 से 6, शराकत की शर्त है सच्चाई।

4:7 से 21 शराकत की ज़िंदगी है मुहब्बत।

5:1 से 21 शराकत की जड़ है ईमान। हक़ीक़ी ईमान मोअस्सर है। खुदा और उस के कलाम और उस की रूह इस पर गवाह हैं। ईमान से सिफ़ारिश मोअस्सर है।

तक्सीम मज़ामीन

सिलसिला कायम करना तो मुश्किल है क्योंकि एक ही बात का तकरार पाया जाता है। और ये इस ख़त का खास्सा है।

1:1 से 4, खुदा से ज़िंदगी ज़ाहिर हुई।

1:5 से 2:11 खुदा नूर है और खुदा के फ़र्ज़न्द नूर में चलें।

2:12 से 3:10 खुदा हक़ और रास्ती है और ये भी मसीहियों की खुसूसियत है।

3:11 से 5:21 खुदा मुहब्बत है। जो खुदा से पैदा हुआ है वो उस से और उस के फ़रज़न्दों से ज़रूर मुहब्बत रखेगा।

यूहन्ना का दूसरा और तीसरा ख़त

ये दोनों ख़त तवाम बहनें (जुड़वां बहनें) कहलाते हैं।

मुसन्निफ़

क्रदीम कलीसिया में इनके मुसन्निफ़ के बारे में कुछ शक तो था। मसलन योसीबस मुअर्रिख़ इनको मुशतबा (मशुकूक़) फ़ेहरिस्त में दर्ज करता है। लेकिन खुद इनको यूहन्ना की तस्वीर मानता है। औरीजन कहता है कि बाअज़ इनको कुबूल नहीं करते। पुशतो तर्जुमे में ये दोनों पाए नहीं जाते। लेकिन इन शकों की बुनियाद ये थी कि वो शख़्सी और छोटे ख़त थे। चूँकि अक्सर लोगों ने इनको कुबूल किया। इस से तसल्ली मिलती है कि वो सच-मुच यूहन्ना के थे। वर्ना कोई इनको यूहन्ना से मन्सूब ना करता। जो यूहन्ना का दूसरा

खत कहलाता है। उसे आर्येनियुस साफ़-साफ़ यूहन्ना रसूल से मन्सूब करता है। और सिकंदरिया का क्लीमेंट यूहन्ना के पहले और बड़े खत का जिक्र करता है। जिससे पता लगता है कि इस के और खत छोटे थे। और बाअज़ों ने समझा कि चूँकि मुसन्निर ने लक़ब बुजुर्ग इस्तिमाल किया है। इसलिए ये दूसरा यूहन्ना होगा जिसका जिक्र पहले हो चुका है। लेकिन गालिबन ये यूहन्ना प्रसबेटर कोई ख़्वाली शख्स होगा यूहन्ना ने क्यों अपने लिए रसूल की बजाए लक़ब प्रसबेटर इस्तिमाल किया? कि रसूल इसलिए कि पहली सदी के आखिरी सालों में ये लक़ब रसूल बहुत आम हो गया। मसलन कलीसियाओं के वकीलों और एलचियों के लिए पापियास और दूसरे शख्सों की तस्नीफ़ात में लफ़ज़ बुजुर्ग से वो लोग मुराद थे जिन्होंने खुद मसीह का कलाम सूना था।

दूसरा खत यूहन्ना के पहले खत से अल्फ़ाज़ और तर्ज़ में बहुत मुशाबेह है। और तीसरा किसी क़द्र मुशाबेह है। और बाअज़ अल्फ़ाज़ के ज़रिये दूसरे खत से निहायत मुशाबेह है।

दूसरा खत, बर्गुज़ीदा बीबी के नाम लिखा गया। क्या इस से (1) लफ़ज़न बीबी मुराद है? और अगर ऐसा हो तो क्या उस का ख़ास नाम बर्गुज़ीदा था। इस का ठीक पता नहीं (देखो पतरस 5:13) (2) क्या इस से बर्गुज़ीदा कलीसिया मुराद है? ये जेरोम की राय थी। जो नसीहतें इस खत में पाई जाती हैं वो कुछ इस राय के मुताबिक़ मालूम होती है। अगर ऐसा हो तो वो कौन सी कलीसिया होगी। इस के बारे में भी हम तहक़ीक़ नहीं जानते अलबत्ता ये कह सकते कि यूहन्ना वहां हो आया था। आयत 4:8

तक्सीम मज़मून

- 1 से 4 तक, सलाम और शुक्रगुज़ारी कि वो सच्चाई पर चलती है।
- 5 से 7 तक, मुहब्बत पर भी चलना चाहिए।
- 8 से 11 तक, झूटे मोअल्लिमों को कुबूल करना नहीं चाहिए।
- 12, 13, ख़ातिमा, यूहन्ना वहां जाने की उम्मीद करता है।

यूहन्ना का तीसरा खत

मकतूब अलय्या

ये खत गयुस की तरफ़ है। इस नाम का ज़िक्र रोमियों 16:23, 1 कुरिन्थियों 1:14, आमाल 19:29 20:4 में आता है। मगर हम नहीं जानते कि आया मकतूब अलय्या इनमें से था या नहीं क्योंकि ये आम नाम था।

मालूम होता है कि ये खत एक शख्स के नाम भेजा गया क्योंकि इस से पेशतर एक खत जो कलीसिया के नाम पर भेजा गया। एक दुश्मन देत्रफ़ीस ने रोक लिया था। बाअज़ लोगों ने ये खयाल किया कि ये देत्रफ़ीस रोम का उस्कुर था। और कि किसी मोनतानस्त ने दूसरी सदी में ये खत लिखा। लेकिन ये महज़ बेबुनियाद है।

तक्सीम मज़ामीन

1 से 4, सलाम और खुशी कि गयुस तंदुरुस्त है और सच्चाई पर चलता है।

5 से 8, उस की मेहमानदारी की तारीफ़ करता है।

9 से 12 उस को देत्रफ़ीस से आगाह करता है।

13 और 14, खातिमा, वहां पर जाने की उम्मीद ज़ाहिर करता है।

ये क़ाबिल लिहाज़ है कि जैसे पहले खत में यूहन्ना ने सच्चाई और मुहब्बत पर बहुत ज़ोर दिया वैसा ही इन दो खतों में ये ख़ास खयाल पाए जाते हैं। जैसे अब जैसे ही उन दिनों में तफ़रूक़ों का अक्सर सबब उमंग (जोश) और तकब्बुर (गुरूर) है। (3 खत 9 आयत)

मुकाशफ़ा की किताब

जो ज़माना पुराने और नए अहदनामे के दर्मियान गुज़रा है। वो यहूदियों के लिए बड़ी मुसीबत और तंगी और ग़म का ज़माना था। फ़ारसियों और अनता की सल्तनत की तरफ़ से इनको बहुत तकलीफ़ पहुंची। अगरचे यूसीफ़स के क़ौल के मुताबिक़ सारी क़ौम को यक़ीन हो गया था कि नबुव्वत की नेअमत उनसे जाती रही। ताहम मक्काबियों के ज़माने से लेकर एक नई किस्म की तस्वीफ़ात पैदा हुईं जिनको मुकाशफ़ा कहते हैं। इस

क्रिस्म की तस्नीफ़ात की खुसूसियत ये थी कि फ़्री ज़माना तक्लीफ़ात में तसल्ली और बर्दाश्त हासिल हो। इस गर्ज़ से वो मिजाज़ी बयानात में आइन्दा मख़लिसी की उम्मीद पेश करते थे। और अपनी तस्नीफ़ात को मुस्तनद (माना हुआ) ठहराने के लिए उनको पुराने अहदनामे के किसी मशहूर बुजुर्ग से मन्सूब करते थे। मसलन हनोक की किताब मूसा का सऊद वगैरह। लेकिन ग़ैर क्रौम सरकार की सज़ा से बचने के लिए वो ईज़ा-दहिंदों (तक्लीफ़ पहुंचाने वाले) का ज़िक्र बनावटी नामों से करते थे।

यूहन्ना के मुकाशफे की किताब भी इसी नमूने पर है। मसलन रोम के लिए बाबिल का लक़ब आया है। और बहुत मुश्किल तशबीहात का इस्तिमाल है। अब यहां ये सवाल आता है कि आया इस में भी मुसन्निफ़ का नाम बनावटी है? ग़ालिबन ऐसा नहीं। क्योंकि क़दीम कलीसिया में काफ़ी शहादत इस बात की मिलती है, कि ये किताब खुद यूहन्ना की तस्नीफ़ है। बल्कि बैरूनी शहादत (बाहर की गवाही) इस किताब के लिए एसी मज़बूत है कि शायद किसी दूसरी किताब के लिए नहीं। मसलन जस्टिन शहीद, आर्येनियुस, तरतलियां, मोरातरी फ़ेहरिस्त, क्लीमेंट असकंदरी, औरीजन वगैरह सब के सब इस को यूहन्ना रसूल से मन्सूब करते हैं। अलबत्ता पुश्तो यानी सुर्यानी तर्जुमे में ये पाई नहीं जाती। लेकिन इस की वजह शायद ये होगी कि मुकाशफे की किताब इस तर्जुमे के बाद मशहूर हो गई।

बरअक्स इस के क़दीम कलीसिया के चंद लोगों ने इन पर एतराज़ किया। मसलन अलोगोई लोगों ने जिनका ज़िक्र यूहन्ना की इन्जील के दीबाचे में हुआ। यूसीबस मुअर्रिख़ अगरचे बैरूनी शहादतों को मानता है। लेकिन फिर भी इस के बारे में शक करता है। और लादुकिया के मजमे के क़ानून में ये किताब पाई नहीं जाती। इन शकों का बाइस वायोनिसीस असकंदरी की तस्नीफ़ात में मुफ़स्सिल पाया जाता है (ये शख्स तीसरी सदी में गुज़रा है) ये शख्स कहता है कि मैं मानता हूँ कि ये किताब किसी दीनदार मसीही की तस्नीफ़ है। लेकिन मैं नहीं जानता कि इस का मुसन्निफ़ यूहन्ना रसूल है। क्योंकि इस का तर्ज़ इबारत यूहन्ना की इन्जील से मुतफ़र्रिक़ है। और इस के मज़ामीन उस तालीम की ताईद करते हैं, जिसे हज़ार साला सल्तनत कहते हैं। इस से ज़ाहिर है कि ये मुसन्निफ़ बैरूनी शहादत के ज़ोर को मानता है। लेकिन मज़ामीन के लिहाज़ से वो इस पर शक करता है। इस वक़्त हज़ार साला तालीम वाले कलीसिया को खुसूसुन मिस्र की कलीसिया को जहां वायोनिसीस बिशप था। बहुत तक्लीफ़ देते थे। और लोग इस किताब के बीसवें बाब से इस तालीम का सबूत पाते थे।

वायोनिसीस के ज़माने से लेकर आज तक कुछ शक चला आया है और आजकल के आलिम लोग वायोनिसीस के एतराज़ात के इलावा एक नया एतराज़ पेश करते हैं। यानी ये कि इस किताब का एक ख़ास मतलब ये है कि पौलुस की तालीम के ख़िलाफ़ यहूदी

माइल मसीहियों की ताईद करे। जो इसे यूहन्ना रसूल की तस्वीफ़ नहीं मानते वो या तो ये कहते हैं कि एक यूहन्ना प्रसबिटर की तस्वीफ़ है। या ये कि दरअसल इस किताब में किसी मुसन्निफ़ का नाम मुन्दरज ना था। पीछे यूहन्ना का नाम डाला गया। (1:4, 4, 9, 21:2, 22:8)

पस फ़िल-हक़ीक़त दो एतराज़ हैं :-

अव्वल : तर्ज़ इबारत के इख़्तिलाफ़ के बारे में।

दोम : हज़ार साला सल्तनत की तालीम।

अव्वल तर्ज़ इबारत : ये सच्च तो है कि यूहन्ना की इन्जील के तर्ज़ से इस का तर्ज़ मुख्तलिफ़ तो है मसलन अगरचे खुदा के बर्रे का ज़िक्र दोनों में पाया जाता है। लेकिन मुकाशफे में जो लफ़्ज़ बर्रे के लिए आया है। वो इन्जील के लफ़्ज़ से मुतफ़र्रिक़ है। अगरचे यूहन्ना की इन्जील की यूनानी सलीस (आसान) है। पर सर्फ़ व नहो (ग्रामर) के मुताबिक़ है। मगर मुकाशफे की यूनानी अक्सर बिगड़ी हुई यूनानी और सर्फ़ व नहो के ख़िलाफ़ है। जो मुहावरे सर्फ़ व नहो के ख़िलाफ़ समझे जाते हैं। करीना (बहमी ताल्लुक़) (तरीक़ा, सलीक़ा) का लिहाज़ करने से उनका सबब साफ़ ज़ाहिर हो जाता है। मसलन “जो था जो है और जो आने वाला” (1:4) एक लक़ब के तौर पर इस्तिमाल हुआ है। इसलिए सीगे में तब्दीली नहीं हुई बर्रे के लिए जो दो लफ़्ज़ हैं वो आम लफ़्ज़ हैं। इन्जील में वो यूहन्ना बटिस्टा के मुँह में से आता है। (यूहन्ना 1:29, 36) जो लफ़्ज़ मुकाशफ़ा में है। वो ना सिर्फ़ मुकाशफ़ा में बारहा आया है बल्कि यूहन्ना की इन्जील में भी पाया जाता है। (यूहन्ना 21:15)

मुकाशफ़ा की किताब की बिगड़ी हुई यूनानी की ये वजह बताते हैं कि ग़ालिबन पतमस के जज़ीरे में उसने ये किताब लिखी जहां यूनानी ख़वांदा (पढ़े लिखे) लोग बहुत कम थे लेकिन इन्जील इफ़िसुस में लिखी गई। जहां ऐसे ख़वांदा लोग बहुत कम थे। बहर-हाल बावजूद इख़्तिलाफ़ के बहुत मुशाबहत भी है।

दोम : हज़ार साला सल्तनत। हमने ज़िक्र किया कि इस में तशबीही बयान है इसलिए किसी का हक़ नहीं कि क़तई तौर पर हज़ार बरस के ज़माने से हज़ार ही बरस का ज़माना समझें।

पस अगरचे मज़ामीन में कई मुश्किलात पाई जाती हैं लेकिन इनमें कोई ऐसी बात नहीं कि जिसके बाइस बैरूनी शहादत को रद्द करें।

ज़माना तहरीर

आर्योनियुस कहता है कि यूहन्ना को ये मुकाशफ़ा दूमतयान की सल्लनत के आख़िर के करीब मिला। ये दूमतयान रोम का कैसर 81 ई° से 96 ई° तक था। अगर ये सच्च हो तो ये किताब तक्ररीबन उसी ज़माने में लिखी गई। जिसमें कि इन्जील कलमबंद हुई। लेकिन बहुत लोगों की राय ये है कि नेरू कैसर की इज़ार सानी के ऐन बाद ये मुकाशफ़ा मिला। और शायद यूहन्ना ने रोम में इस होलनाक इज़ार सानी के हादिसे देखकर और जिला-वतन हो कर ये किताब लिखी। इन दो तारीख़ों में फ़ैसला करना नामुम्किन मालूम होता है।

मकतूब अलय्या

पहले तीन अबवाब में साफ़ लिखा है कि आसिया की कलीसियाओं के लिए ये मुकाशफ़ा लिखा गया। लेकिन मालूम होता है कि मुसन्निफ़ का ख़याल ये भी था कि ये उस की तस्नीफ़ कुल कलीसिया के फ़ायदे के लिए है।

मज़ामीन और उनकी तफ़सीर

पहले तीन बाब में कुछ मुश्किलात नहीं सिवाए इस के कि कहाँ तक जो पैग़ाम उन कलीसियाओं को भेजा गया हर ज़माने और हर मुल्क की कलीसिया के लिए मुनासिब है। मसलन बाअज़ समझते हैं कि सात कलीसियाओं से (जो कमाल का अदद है) कुल कलीसिया की सात मुख्तलिफ़ हालतें मुराद हैं। बाअज़ की राय में ये हालतें एक ही ज़माना की हैं और बाअज़ की राय में पे दरपे ज़माने के लिए ख़्वाह कुछ ही हो ये ज़ाहिर है कि इनमें से कलीसिया को ज़रूर कुछ अमली नसीहत मिलती है। चौथे बाब से लेकर ज़्यादा मुश्किल है। इस का सिलसिला है :-

4:1 से 8:1 तक, सात मोहरों की किताब जिनको सिर्फ़ बर्त तोड़ सकता है। इन मोहरों के टूटने के मिजाज़ी मअनी।

8:2 से 11:19 तक, सात नरसिंगे।

12 बाब औरत से एक बच्चे का पैदा होना और अज़दहे से उस का दुख उठाना।

13 बाब दरिन्दा जानवर का बरपा होना।

14 बाब बर्रे के बर्गज़ीदे ख्वाह मर गए और ख्वाह जिंदा हों जो इस जानवर से महफूज़ रहे।

15 और 16 बाब सात फ़रिश्ते और सात प्याले।

17 और 22 बाब के आख़िर तक, ज़ूलजलाल खातिमा। जिसमें बाबिल की बर्बादी बर्रे की शादी और अदालत का दिन और नई ज़मीन का ज़िक्र है।

इस किताब की तश्रीह में बेशुमार राय हुई हैं।

एक क्रिस्म की राय ये है कि शुरू से आख़िर तक महज़ रुहानी तशबीहें हैं यानी इस ज़माना में ऐसे खतरों का ज़िक्र आता है जो हर ज़माने में पेश आते हैं। मगर इनको तर्तीब देना मुहाल (मुश्किल) है।

दूसरी क्रिस्म की राय ये है कि अगरचे बेशक ये किताब तशबीही है ताहम इस में कोई ना कोई तवारीख़ी सिलसिला भी है। इन मुफ़स्सिरों को तीन गिरोहों पर तक्सीम कर सकते हैं :-

(अ) सिर्फ़ इस मौजूदा ज़मानों के माजरों (वाक़ियात) के बारे में है। मसलन सात बादशाह आगस्तन, कैसर तिबरियास, क्लेगोला, क्लादेवस, नीरू, ग़लबा और जो मुसन्निफ़ के वक़्त में हुक्मरान था। और एक जो होने वाला था। इस की ताईद में ये भी कहा जाता है कि 13:3 में लिखा है कि “उस के सरों में से एक पर ज़ख़्म कारी लगा हुआ था। मगर उनका ज़ख़्म कारी अच्छा हो गया। इस से वो ये मुराद लेते हैं कि नेरू अगरचे ज़ाहिर तौर पर मर गया था। मगर अवामुन्नास का खयाल था कि वो फिर निकल कर जुल्म करेगा और 13:18 में जो तादाद 666 है वो कैसर नेरू के नाम के अदद हैं अगर इब्रानी में इस को लिखें।

बादियुन्नज़र (पहली नज़र) में ये तश्रीह माकूल (मुनासिब) मालूम होती है क्योंकि मुसन्निफ़ कहता है कि ये बातें जल्द होने वाली हैं। लेकिन इस में दो बड़ी मुश्किलात पेश आती हैं।

अव्वल : अगर ऐसा होता तो क्यों कलीसिया ने इस किताब की क़द्र हर ज़माने में की है हालाँकि चाहिए था कि वो समझे कि ये माजरे हो चुके हैं।

दोम : मज़ामीन और पेशीन गोईयाँ जो इस में पाई जाती हैं। उस ज़माने के माजरो से महदूद नहीं हो सकती हैं।

(ब) दूसरा फ़िर्का ये कहता है कि ये सारे माजरे सिर्फ़ अख़ीरी ज़माने में होने वाले हैं। अब तक इनका शुरू भी नहीं हुआ। बल्कि मज़कूर सात कलीसियाएं भी आइन्दा हैं और आइन्दा ज़माने में सिलसिलेवार ये वाक़ियात पूरे होंगे। अगर ऐसा हो तो इस किताब से बहुत थोड़ा फ़ायदा मिल सकता है। सिर्फ़ इस चंद रोज़ा ज़माने में चंद मसीहियों के लिए फ़ाइदेमंद हो है।

(ज) मुतवस्सित, इस फ़िर्के की राय ये है कि इस किताब में मसीह के माबाअद ज़माने की कलीसिया की सिलसिलेवार तवारीख़ है। और वक़्तन-फ़-वक़्तन रुहानी लोग इस सिलसिले का सुराग़ लगा सकते हैं। मसलन औरत से बिगड़ी हुई कलीसिया मुराद है और इस की ताईद में कहते हैं कि इस औरत की जगह सात पहाड़ियों पर है कि वो दरिन्दा जानवर पर सवार होती है और ऐन इसी तरह से रोम की बुत परस्तों की जानशीन हो गई और रोम में सल्तनत करती थी। बाअज़ लोग कहते हैं कि दरिंदों में से एक मुहम्मद था। ये तीसरी राय छोटी बातों से क़त-ए-नज़र (नज़र-अंदाज़) कर के ज़्यादा माकूल मालूम होती है। अगर ऐसा हो तो ये कौनसा सिलसिला है। आया सात मोहरों, सात नरसिंगों और सात पियालों से कुल 21 दर्जे या ज़माने यके बाद दीगरे मुराद हैं या सिर्फ़ सात हैं। जिनकी तश्रीह तीन तरह से पेश की जाती हैं। यानी मोहरों की और नरसिंगों की और पियालों की तशबीह है।

खास खयालात

(1) एक बड़ी तसल्ली का खयाल ये है कि दुनिया के सारे इन्क़िलाबात में खुदा हुक्मरान है और उसने मसीह को सब पर मुसल्लत (इख़्तियार देना) किया है।

(2) कलीसिया की हालत उमूमन आजमाईश और मुसीबत की है ताहम अंजाम नेक होगा।

(3) खयालात उमूमन पुराने अहदनामे और खासकर नबियों की किताबों से लिए गए हैं। दानीएल 7 से 12 बाब तक, और इन का ताल्लुक़ मसीह की पेशगोई से जो यरूशलेम और दुनिया के आख़िर के बारे में की गई।

(4) अददों का खास जिक्र है मसलन अदद सात, जो यहूदियों के नज़दीक कामिलियत का निशान था। सात कलीसियाएं। सात मोहरें, सात नरसिंगे, सात प्याले वगैरह ये अदद सात दो हिस्सों पर तक्सीम होता है यानी 3 और 4, 3 उलूहियत का अदद है और 4 जहान का। 3 जमा 4 बराबर 7 यानी खुदा और जहान। और 12 कलीसिया का अदद है जो गोया बर्रे की दुल्हन है। और सात का निस्फ़ साढ़े तीन भी इस्तिमाल हुआ है। (12:14, 12:6, 7, 11:9) दूसरा अदद जो मद्दे-नज़र है वो 10 है। 10 आला अदद है जिससे हर चीज़ का कमाल या ज़मानों का कमाल मुराद है।

(5) किताब आखिर में ये याद दिलाती है कि जो मसीह एक दफ़ा आया था वो जलाल के साथ फिर आएगा। और उस वक़्त सारी चीज़ें बहाल होंगी। और इस दुनिया का भेद हल हो जाएगा। (21:1 से 15, 10:6, 7)

तमाम शुद